Weather Report
अधिकतम तापमान: 32.0c
न्यूनतम तापमान: 21.0c
हवा गति: 11 कि./घं.
जयपुर सूर्योदय समय
सुबह: 6.06

दैनिक
संजीवनी टुडे
sanjeevnitoday.com
समय के साथ बढ़ता अखबार

वर्ष: 11 अंक: 134
जयपुर, शुक्रवार, 18 अक्टूबर 2024
पृष्ठ:8 मूल्य: ‘1.50

अब होंगी खुशियों की बात संजीवनी टुडे के साथ
जन्मदिवस, वैवाहिक वर्षगांठ एवं नियुक्ति बधाई संदेश
मात्र 1100/- में
साईज 8X8 cm
संजीवनी टुडे

नायब सैनी दूसरी बार हरियाणा के मुख्यमंत्री बने: 13 मंत्री बनाए

सबसे ज्यादा 5 ओबीसी चेहरे, 2 महिलाएं, आज पहली कैबिनेट मीटिंग

■ संजीवनी टुडे

पंचकूला। हरियाणा में नायब सैनी ने दूसरी बार सीएम पद की शपथ ले ली है। सैनी राज्य के 19वें मुख्यमंत्री बने। हालांकि मुख्यमंत्री की कुर्सी तक पहुंचने वाले वे 11वें नेता हैं। शपथ ग्रहण समारोह पंचकूला के दशहरा ग्राउंड में हुआ। इस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में पीएम नरेंद्र मोदी शामिल हुए। शपथ ग्रहण में भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा, केंद्रीय मंत्री अमित शाह, नितिन गडकरी और राजनाथ सिंह के साथ 18 राज्यों के सीएम व डिप्टी सीएम भी पहुंचे थे। सीएम सैनी के साथ 13 मंत्रियों ने शपथ ली। जिनमें सबसे ज्यादा 5 चेहरे ओबीसी वर्ग से हैं। जाट, ब्राह्मण और एससी वर्ग से 2-2 मंत्री बनाए गए हैं। इसके अलावा पंजाबी, राजपूत और वैश्य बिरादरी से एक-एक मंत्री बनाया गया है। नए बनाए मंत्रियों में अनिल विज, कृष्णलाल पंवार, राव नरबीर, महिपाल ढांडा, विपुल गोयल और कृष्ण बेदी पहले मंत्री रह चुके हैं। इसके अलावा रणबीर गंगवा पिछली उख्ठ सरकार में डिप्टी स्पीकर थे। नए चेहरों में अरविंद शर्मा, श्याम सिंह राणा, आरती राव, श्रुति चौधरी और गौरव गौतम पहली बार मंत्री बने हैं। भाजपा ने हरियाणा में ठछ, राजस्थान और मध्यप्रदेश की तरह डिप्टी एख्र बनाने का फॉर्मूला नहीं अपनाया। नई सरकार बनते ही सीएम नायब सैनी ने कल (18 अक्टूबर) की सुबह कैबिनेट की पहली मीटिंग बुला ली है।

मंच पर ये 13 विधायक पहुंचे

मंत्रिमंडल की शपथ लेने वाले विधायकों जो अभी तक मंच पर पहुंचे हैं, उनमें कृष्ण पंवार, रणबीर गंगवा, कृष्ण बेदी, श्याम सिंह राणा, आरती राव, श्रुति चौधरी, अनिल विज, महिपाल ढांडा, राजेश नागर, विपुल गोयल और राव नरबीर हैं। अगली लाइन में अनिल विज, कृष्ण लाल पंवार, महिपाल ढांडा, विपुल गोयल, राव नरबीर और अरविंद शर्मा बैठे हैं। ये सभी कैबिनेट मंत्री बन सकते हैं। दूसरी लाइन में श्याम सिंह राणा, रणबीर गंगवा, कृष्ण बेदी, श्रुति चौधरी, आरती राव, गौरव गौतम और राजेश नागर शामिल हैं। ये 6 विधायक राज्यमंत्री बन सकते हैं। जिसमें विभागों का बंटवारा किया जा सकता है। यमुनानगर की रादौर विधानसभा से विधायक श्याम सिंह राणा को मनोनीत सीएम नायब सैनी का शपथ के लिए फोन आया। इसकी पुष्टि श्याम सिंह ने खुद की। उन्होंने बताया कि शपथ के लिए फोन आया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आने के बाद शपथ हो जाएगी। समारोह में 2 मंच तैयार किए गए हैं।

शपथ लेने पहुंचे राव नरबीर गेट पर फंसे

मंत्री पद की शपथ लेने पहुंचे राव नरबीर एंट्री न होने के चलते गेट पर फंसे रहे। इस दौरान गेट पर भीड़ इकट्ठी हो गई। कुछ देर बाद उन्हें एंट्री मिली। मेघालय सीएम कोनराड संगमा और गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत चंडीगढ़ पहुंचे। एक मंच पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, गृह मंत्री अमित शाह, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी सहित 3 केंद्रीय मंत्री कृष्ण पाल गुर्जर, राव इंद्रजीत सिंह और मनोहर लाल खट्टर मौजूद रहेंगे। इसी मंच पर सीएम और मंत्री शपथ लेंगे।समारोह में प्रदेश भर से लोगों को लाने के लिए ढाई हजार बसों की व्यवस्था की गई है। हर जिले से सुबह पंचकूला के लिए रोडवेज की बसें रवाना हुईं। इसके अतिरिक्त प्राइवेट बसें भी हायर की गई हैं। इनकी पूरी व्यवस्था सभी जिलों के डिप्टी कमिश्नरों को सौंपी गई है। बसों में खाने की भी व्यवस्था की गई है। इसके लिए हर बस में एक खाना प्रबंधक लगाया गया है। समारोह के लिए लगाए पंडाल में 8 अलग-अलग तरह के ब्लॉक तैयार किए गए हैं। हर ब्लॉक में विशेष कैटेगरी के लोगों को बैठाया जाएगा। इसमें ड्रोन दीदी, खाप पंचायतों के प्रतिनिधि, प्रगतिशील किसानों, उद्योग जगत के फ़ेमस लोगों, भाजपा पदाधिकारियों से लेकर बूथ लेवल तक के पदाधिकारी शामिल हैं। शपथ समारोह को सुचारू तरीके से चलाने के लिए भाजपा ने 40 कमेटियां बनाई हैं।

दिल्ली, श्रीनगर समेत देशभर में दिखाई दिया सुपरमून

चांद आकार में 14% बड़ा और 30% ज्यादा चमकीला नजर आया

■ संजीवनी टुडे

नई दिल्ली। दुनियाभर में गुरुवार को सुपरमून दिखाई दिया। इस दौरान चंद्रमा का आकार सामान्य से 14% बड़ा दिखाई दिया। चांद 30% ज्यादा चमकीला भी नजर आया। सुपरमून तब होता है, जब पृथ्वी और चंद्रमा के बीच की दूरी सबसे कम हो जाती है। इस वजह से चांद ज्यादा बड़ा और चमकीला दिखाई देता है। इस सुपरमून को देखने पर ऐसा लगा जैसे यह पृथ्वी के करीब आ रहा है। दिल्ली, गुवाहाटी, कश्मीर समेत देश के कई हिस्सों में सुपरमून दिखाई दिया। इस साल यह तीसरा सुपरमून, 15 नवंबर को फिर दिखेगा गुरुवार को चांद पृथ्वी से लगभग 351,519 किमी दूर रहा। जबकि आमतौर पर यह सबसे दूर 4,05,000 किमी और सबसे करीब 3,63,104 किमी होती है। पिछले महीने 18 सितंबर को भी सुपरमून दिखाई दिया था, तब चांद पृथ्वी से 357,485 किमी दूर था। वहीं, साल का पहला सुपरमून 19 अगस्त को दिखाई दिया था। तब चांद धरती से 361,969 किमी दूर रहा था। साल का चौथा सुपरमून 15 नवंबर को देखने को मिलेगा, तब चांद धरती से 361,866 किमी दूर रहेगा। यह दिल्ली के इंडिया गेट की तस्वीर है। यहां सुपरमून देखने के लिए भारी भीड़ जुटी थी।

दिल्ली में रायसीना हिल के ऊपर सुपरमून। इसे देखने के लिए लोग कर्तव्य पथ पर इकट्ठा हुए। श्रीनगर के हजरतबल दरगाह के पीछे सुपरमून कुछ इस तरह दिखाई दिया। पिछले साल अगस्त में ब्लूमून दिखा था पिछले साल 1 अगस्त और 30 अगस्त को भी सुपरमून था। 30 अगस्त के सुपरमून को सुपर ब्लू मून कहा गया। दरअसल, चांद की एक साइकिल 29.5 दिन की होती है। जब किसी एक कैलेंडर मंथ में दो बार पूर्णिमा पड़ जाए तो इसे ही ‘ब्लू मून’ कहा जाता है। 1 अगस्त, 2023 को पूर्णिमा थी, फिर 30 अगस्त को दूसरी पूर्णिमा पड़ गई इसलिए इसे ब्लू मून कहा गया। आम तौर पर ऐसा हर 2 से 3 साल में एक बार होता है। 30 अगस्त को फुल मून, सुपरमून और ब्लू मून तीनों पड़ रहे हैं, इसलिए इसे ‘सुपर ब्लू मून’ कहा जा रहा है।

इजराइल पर हमले के मास्टरमाइंड याह्या सिनवार की मौत

पीएम नेतन्याहू ने पुष्टि की, कहा- हमने हिसाब चुकता कर दिया, लेकिन जंग अभी जारी

■ संजीवनी टुडे

तेल अवीव। पिछले साल 7 अक्टूबर को इजराइल पर हमले के मास्टरमाइंड हमास चीफ याह्या सिनवार की इजराइली हमले में मौत हो गई है। इजराइली के पीएम बेंजामिन नेतन्याहू और विदेश मंत्री काट्ज ने गुरुवार रात को सिनवार की मौत की पुष्टि की है। इजरायली डिफेंस फोर्सेस ने एक दिन पहले बुधवार को एक रूटीन ऑपरेशन में सेंट्रल गाजा की एक इमारत पर हमला किया था। इसमें हमास के 3 सदस्यों के मारे जाने की खबर आई थी। बाद में पता चला कि इनमें से एक याह्या सिनवार है। सोशल मीडिया पर इसके फोटो वायरल हुए। इसमें उसके चेहरे, दांत और घड़ी से दावा किया गया कि मारा गया शख्स याह्या सिनवार है। दरअसल, इजराइल और हमास की जंग की वजह 7 अक्टूबर हमला था, इसमें 1200 इजराइली नागरिक मारे गए थे। तब से दोनों के बीच जंग जारी है। सिनवार की मौत की जांच के लिए डीएनए टेस्ट किया गया। इससे पहले भी सिनवार को मारने के लिए इजराइल ने कई कोशिशें की थी। हालांकि उसे नाकामयाबी ही हाथ लगी थी। उसकी मौत को लेकर पहले भी दावे हुए थे। 23 सितंबर को भी सिनवार की मौत का दावा किया गया था। हमास का पूर्व चीफ इस्माइल हानियेह 31 जुलाई को ईरान में मारा गया था। ईरान के इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स ने उसकी मौत की पुष्टि की थी। ऋटक्रए ने बताया था कि तेहरान में हानियेह के ठिकाने पर रात 2 बजे (भारतीय समय के मुताबिक सुबह 4 बजे) मिसाइल से हमला किया गया था। इसमें हानियेह और उसके एक बॉडीगार्ड की मौत हो गई। हानियेह ईरान के राष्ट्रपति मसूद पजशकियान के शपथ ग्रहण समारोह में भाग लेने के लिए तेहरान पहुंचा था। ईरान ने इजराइल पर हानियेह की हत्या करवाने के आरोप लगाए थे। इजराइल पर पिछले साल 7 अक्टूबर को हुए हमले के तीन अहम किरदार थे। इनमें पॉलिटिकल चीफ इस्माइल हानियेह, मिलिट्री चीफ मोहम्मद दाइफ के अलावा गाजा में हमास का लीडर याह्या सिनवार शामिल था।

नेतन्याहू बोले- सिनवार मारा गया पर जंग अभी जारी है

सिनवार की मौत के बाद इजराइली प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने बयान जारी किया। उन्होंने कहा, होलोकॉस्ट के बाद इतिहास में हमारे लोगों का सबसे बड़ा नरसंहार करने वाले का इजराइल ने हिसाब चुकता कर दिया है। सिनवार की मौत का पल, हमारे बंधक नागिरकों को वापस घर लाने के लिहाज से बेहद है। हालांकि जंग अभी खत्म नहीं हुई है। हमास का कोई भी लड़ाका जो अपने हथियार डालता है और बंधकों की वापसी में मदद करता है, उसे गाजा से सुरक्षित बाहर जाने की अनुमति दी जाएगी।

खड़गे के कथित फ़ेसबुक पेज पर विवाद: भाजपा का आरोप

पेज नॉर्वे से मैनेज हो रहा, कहा- देश ने इतना कुछ दिया, फिर विश्वासघात क्यों

■ संजीवनी टुडे

बेंगलुरु। कर्नाटक भाजपा ने आरोप लगाया कि कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे का सोशल मीडिया मैनेजमेंट विदेशी करते हैं। पार्टी ने 15 अक्टूबर को खड़गे के नाम से एक फ़ेसबुक पेज के पेज इंफॉर्मेशन का स्क्रीनशॉट शेयर करते हुए पूछा था- अपने लोगों के बजाय विदेशी संचालकों पर भरोसा क्यों? भारत ने आपको इतना कुछ दिया है, तो यह विश्वासघात क्यों? दरअसल, इसमें लिखा है कि पेज को नॉर्वे से मैनेज किया जाता है। वहीं, मल्लिकार्जुन खड़गे के बेटे और कर्नाटक सरकर में आईटी मंत्री प्रियांक खड़गे ने भी उसी दिन ड्ड पर लिखा- वह पेज फर्जी है। फ़ेसबुक से इसे हटाने के लिए भी कहा गया है। खड़गे के सिर्फ दो ऑफिशियल सोशल मीडिया अकाउंट हैं। प्रियांक ने उन दोनों अकाउंट के लिंक भी साझा किए जिनमें से एक खड़गे के ड्ड अकाउंट और दूसरा उनके व्हाट्सएप चैनल का है। कर्नाटक भाजपा और प्रियंक खड़गे का वार-पलटवार कर्नाटक भाजपा ने ड्ड पर पोस्ट किया- वक्फ की जमीन हड़पने के लिए चर्चा में रहे मल्लिकार्जुन खड़गे का सोशल मीडिया मैनेजमेंट विदेश से किया जा रहा है।

कांग्रेस अध्यक्ष बोले- भाजपा आतंकवादियों की पार्टी

कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा भाजपा आतंकवादियों की पार्टी है। खड़गे 12 अक्टूबर को न्यूज एजेंसी से बातचीत में प्रधानमंत्री मोदी के उस बयान का जवाब दे रहे थे, जिसमें पीएम ने कांग्रेस को अर्बन नक्सल पार्टी कहा था। खड़गे ने कहा कि पीएम मोदी की आदत है कि वे हमेशा कांग्रेस को अर्बन नक्सल पार्टी बताते हैं, लेकिन उनकी पार्टी क्या है? भाजपा आतंकवादियों की पार्टी है, जो लिंचिंग में शामिल रहती है। मोदी को ऐसे आरोप लगाने का हक नहीं है। प्रधानमंत्री मोदी ने 5 अक्टूबर को महाराष्ट्र का दौरा किया था। इस दौरान उन्होंने ठाणे में कहा था, ‘कांग्रेस और उनके सहयोगियों का एक ही मिशन है- बांटो और सत्ता में रहो। कांग्रेस को अर्बन नक्सल गैंग चला रहे हैं। वह देश विरोधियों के साथ खड़ी है। हम कांग्रेस की जाति के आधार पर बांटने वाली राजनीति के पीछे विदेशी प्रभाव के बारे में चेतावनी देते रहे हैं और यह इसकी पुष्टि करता है। अपने लोगों के बजाय विदेशियों पर भरोसा क्यों? भारत ने आपको इतना कुछ दिया, फिर यह विश्वासघात क्यों? भाजपा के पोस्ट पर पलटवार करते हुए प्रियांक ने लिखा- भारत के इतिहास में सबसे प्रभावी गृह मंत्री होने के बावजूद, बीजेपी यह तय नहीं कर सकती कि विपक्ष के नेता का अकाउंट असली है या नहीं।

उत्तराखंड: मदरसों में संस्कृत पढ़ाई जाएगी, ऑप्शनल सब्जेक्ट रहेगा

■ संजीवनी टुडे

मदरसा बोर्ड के अध्यक्ष बोले- राज्य सरकार की अनुमति मिलते ही लागू करेंगे

नई दिल्ली। उत्तराखंड के मदरसों में जल्द ही संस्कृति पढ़ाई जा सकती है। इसे राज्य के 400 से ज्यादा मदरसों में ऑप्शनल सब्जेक्ट के तौर पर रखा जाएगा। मदरसा बोर्ड के अध्यक्ष मुफ्ती शमून ने गुरुवार को कहा कि हम इस योजना पर लंबे समय से काम कर रहे हैं। राज्य सरकार की अनुमति मिलते ही इसे लागू किया जाएगा। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी मदरसा जाने वाले बच्चों को मेनस्ट्रीम से जोड़ना चाहते हैं, इसी को ध्यान में रखते हुए हमने यह योजना बनाई है। मदरसों में एनसीईआरटी सिलेबस लागू होने के अच्छे परिणाम मिले बोर्ड अध्यक्ष मुफ्ती शमून ने कहा कि एनसीईआरटी पाठ्यक्रम से मदरसों में लागू होने से इस साल बहुत अच्छे नतीजे सामने आए हैं। 96% से ज्यादा बच्चे पास हुए। इससे पता चलता है कि मदरसों में पढ़ने वाले छात्रों में प्रतिभा की कोई कमी नहीं है। मौका मिलने पर वे संस्कृति समेत सभी सब्जेक्ट में अच्छा प्रदर्शन कर सकते है। उन्होंने कहा कि अरबी और संस्कृत दोनों ही प्राचीन भाषाएं हैं। अगर मदरसा स्टूडेंट्स को अरबी के साथ संस्कृत भी पढ़ने का मौका मिलता है, तो यह उनके लिए फायदेमंद रहेगा। उत्तराखंड वक्फ बोर्ड अध्यक्ष बोले- स्टूडेंट्स को धार्मिक शिक्षा तक सीमित रखना गलत उत्तराखंड वक्फ बोर्ड के अध्यक्ष शादाब शम्स ने भी कहा कि मदरसों में संस्कृत की पढ़ाई शुरू करना अच्छा होगा। हालांकि उन्होंने हैरानी जताई कि मदरसा बोर्ड को इसे लागू करने से कौन रोक रहा है। उन्होंने कहा कि मुझे नहीं लगता कि उन्हें इस तरह के किसी काम के लिए राज्य सरकार से मंजूरी मिलने में कोई बाधा आएगी। स्टूडेंट्स के लिए धार्मिक शिक्षा जरूरी है, लेकिन बच्चों को सिर्फ धार्मिक शिक्षा तक सीमित रखना, उनके भविष्य के साथ खिलवाड़ करना है। मदरसे हर दिन धार्मिक शिक्षा के लिए एक घंटा रख सकते हैं। पूरे दिन सिर्फ धार्मिक ग्रंथ पढ़ाने और उन्हें कुछ और नहीं सीखने देने से वे अपंग हो जाएंगे।

मैरिटल रेप पर सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई: याचिकाकर्ता बोले

पति को सिर्फ इसलिए छूट न मिले क्योंकि पीड़ित पत्नी है, ना का मतलब न होता है

■ संजीवनी टुडे

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट मैरिटल रेप को अपराध घोषित करने से जुड़ी याचिकाओं पर गुरुवार (17 अक्टूबर) को 3 घंटे सुनवाई चली। सीजेआई डीवाई चंद्रचूड़, जस्टिस जेबी पारदीवाला और जस्टिस मनोज मिश्रा की बेंच ने मामले की सुनवाई की। दो याचिकाकर्ता के वकील एडवोकेट गोंजाल्विस और एडवोकेट करुणा नंदी ने आज दलीलें रखीं। एडवोकेट करुणा नंदी ने कहा- पत्नी के साथ जबरन संबंध बनाने में पति को सिर्फ इसलिए छूट मिल रही, क्योंकि पीड़ित पत्नी है। यह जनता बनाम पितृसत्ता की लड़ाई है, इसलिए हम अदालत में आए हैं। वहीं दूसरे एडवोकेट गोंजाल्विस ने कहा- पड़ोसी देश नेपाल में मैरिटल रेप को अपराध माना गया है। वहां यह किसी विवाह संस्था को अपमानित नहीं करता है। बल्कि विवाह में दुर्व्यवहार और बलात्कार विवाह संस्था को अपमानित करता है। यदि कोई महिला (पत्नी) संबंध बनाने को लेकर न कहती है, तो इसका मतलब न ही है। 3 अक्टूबर को पिछली सुनवाई में सरकार ने इसका विरोध करते हुए कहा था कि ऐसा करने से वैवाहिक संबंधों पर बुरा असर पड़ेगा।

मैरिटल रेप का मामला सुप्रीम कोर्ट कैसे पहुंचा

मैरिटल रेप को लेकर नए कानून बनाने की मांग काफी समय से हो रही थी। पिछले दो सालों में दिल्ली हाईकोर्ट और कर्नाटक हाईकोर्ट का फैसला आने के बाद इसकी मांग और तेज हो गई। सुप्रीम कोर्ट में दो मुख्य याचिकाएं हैं, जिन पर सुनवाई हो रही है। एक याचिका पति की तरफ से लगाई गई, तो दूसरी याचिका एक अन्य मामले में एक महिला ने दायर की थी।साल 2022 में एक महिला ने पति द्वारा जबरन शारीरिक संबंध बनाने पर दिल्ली हाईकोर्ट में याचिका लगाई। 11 मई 2022 को दिल्ली हाईकोर्ट के 2 जजों ने अलग-अलग फैसला दिया था। जस्टिस राजीव शकधर ने वैवाहिक बलात्कार के अपवाद को रद्द करने का समर्थन किया था। वहीं, जस्टिस सी हरि शंकर ने कहा कि पति को मिली छूट असंवैधानिक नहीं है और एक समझदार अंतर पर आधारित है। सीजेआई डीवाई चंद्रचूड़, जस्टिस जेबी पारदीवाला और जस्टिस मनोज मिश्रा की बेंच ने मामले की सुनवाई की। याचिकाकर्ता की तरफ से एडवोकेट करुणा नंदी और एडवोकेट कॉलिन गोंजाल्विस ने दलीलें रखीं। कर्नाटक हाईकोर्ट में एक पति ने पत्नी की तरफ से लगाए रेप के आरोपों पर हाईकोर्ट का रुख किया था। 23 मार्च 2023 को कर्नाटक हाईकोर्ट ने पति पर लगाए गए रेप के आरोपों को समाप्त करने से इनकार कर दिया। हाईकोर्ट ने इस मामले में अपवाद को मानने से इनकार कर दिया। कर्नाटक हाईकोर्ट के जस्टिस एम नागप्रसन्ना की सिंगल बेंच ने इस मामले में कहा था कि तथ्यों के आधार पर इस तरह के यौन हमले/दुष्कर्म के लिए पति को पूरी छूट नहीं दी जा सकती है। सरकार इसके विरोध में, कहा-ये कानूनी नहीं सामाजिक मुद्दा मैरिटल रेप को अपराध घोषित करने की मांग का सरकार ने विरोध किया है।

जयपुर के मंदिर में जागरण में चाकूबाजी, 8 घायल

कहासुनी के बाद हुआ झगड़ा, दिल्ली-अजमेर हाइवे को किया जाम

■ संजीवनी टुडे

जयपुर। जयपुर के एक मंदिर में जागरण में गुरुवार रात चाकूबाजी में 8 लोग घायल हो गए। जागरण को लेकर दो पक्षों में कहासुनी के बाद झगड़ा होने पर चाकूबाजी हुई थी। करणी विहार थाना पुलिस ने चाकूबाजी में घायलों को ट्रख्रट्ट हॉस्पिटल में एडमिट करवाया है। विरोध में गुस्साई भीड़ ने दिल्ली-अजमेर हाइवे को जाम कर दिया। करणी विहार थाना पुलिस ने अतिरिक्त जाब्ते के साथ मौके पर पहुंचकर स्थित पर काबू पाया। पुलिस ने बताया- करणी विहार इलाके में स्थित मंदिर में आरएसएस संघ की ओर से शरद पूर्णिमा के अवसर पर जागरण का प्रोग्राम रखा गया था। गुरुवार रात को प्रोग्राम के अवसर पर खीर वितरण की जा रही थी। इसी दौरान पड़ोस में ही रहने वाले दो लोगों ने पहुंचकर प्रोग्राम को लेकर आपत्ति जताई। कहासुनी के दौरान ही उन्होंने अपने साथियों को बुला लिया। देखते ही देखते दोनों पक्ष आमने-सामने हो गए। विरोध करने वाले गुट ने चाकू से हमला बोल दिया। चाकूबाजी में प्रोग्राम में शामिल 8 लोग घायल हो गए। झगड़े की सूचना पर करणी विहार थाना पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस ने लोगों की मदद से घायलों को ट्रख्रट्ट हॉस्पिटल में एडमिट करवाया। हमले को लेकर गुस्साएं लोगों ने दिल्ली-अजमेर हाइवे को जाम कर दिया। लोगों का कहना था कि हमारा शांतिपूर्ण प्रोग्राम चल रहा था। जबरन स्थिति को बिगाड़ा गया और चाकूबाजी की गई। हमले के समय मंदिर में भजन-कीर्तन चल रहे थे और खीर वितरण की जा रही थी। पुलिस ने समझाइस कर मामले को शांत करवाने के साथ ही अतिरिक्त पुलिस जाब्ता मौके पर तैनात किया। पुलिस ने हमलवार दो जनों को राउंडअप किया है। घायलों का एसएमएस हॉस्पिटल में इलाज चल रहा है। पुलिस टीमें अन्य हमलावरों की तलाश में दबिश दे रही है। डीसीपी (वेस्ट) अमित कुमार ने बताया- आरएसएस की एक शाखा की ओर से करणी विहार के रजनी विहार में शरद पूर्णिमा का कार्यक्रम चल रहा था। इस दौरान अचानक चाकूबाजी होने पर अफरा-तफरी मच गई।

मेयर बोले- हेरिटेज निगम में जल्द होगा समितियां का गठन

यादव बोली- विधायकों और संगठन की राय के बाद होगा चेयरमैन के नाम का ऐलान

■ संजीवनी टुडे

जयपुर। जयपुर नगर निगम हेरिटेज में जल्द समितियां का गठन किया जाएगा। 25 अक्टूबर को राजस्थान इंटरनेशनल सेंटर में आयोजित नगर निगम हेरिटेज की साधारण सभा की बैठक में समितियां के गठन को लेकर प्रस्ताव रखा जाएगा। इसके बाद सरकार (क्ख्रउ) के आदेश के साथ ही समितियां के चेयरमैन के नाम का ऐलान किया जाएगा। नगर निगम हेरिटेज मेयर कुसुम यादव ने कहा- 25 अक्टूबर के दिन राजस्थान इंटरनेशनल सेंटर में साधारण सभा की बैठक आयोजित की जाएगी। इस बैठक में स्वच्छता, सड़क और वार्डों की मूलभूत सुविधाओं और समस्याओं जैसे मुद्दों पर चर्चा की जाएगी। इसके साथ ही पार्षदों के मुद्दे भी साधारण सभा की बैठक में रखे जाएंगे। ताकि जयपुर नगर निगम हेरिटेज के 100 वार्ड में रहने वाली जनता को राहत मिल सके। इसको लेकर अब निगम प्रशासन ने तैयारियां शुरू कर दी है। ऐसे में अब 25 अक्टूबर को हेरिटेज नगर निगम की तीसरी साधारण सभा की बैठक होगी।

संचालन समितियां के गठन की तैयारी भी शुरू

यादव ने कहा कि साधारण सभा की बैठक से पहले ही अब संचालन समितियां के गठन की तैयारी भी शुरू हो गई है। इसको लेकर मैंने क्षेत्रीय विधायकों और विधायक प्रत्याशियों के साथ ही संगठन से भी पार्षदों को चेयरमैन बनाने को लेकर राय मांगी है। जैसे ही विधायकों और संगठन का अप्रूवल आएगा। उसके बाद समितियां के चेयरमैन की घोषणा स्वायत्त शासन विभाग द्वारा कर दी जाएगी। यादव ने कहा- ऐसा भी हो सकता है कि साधारण सभा की बैठक में ही समितियां के चेयरमैन के नाम की घोषणा हो जाए। या फिर इसमें कुछ दिन आगे पीछे भी हो सकते हैं। लेकिन पार्षदों की मांग के आधार पर अब जल्द समितियां का गठन किया जाएगा। ताकि लंबे समय से हटके आम जनता के काम से समय पर पूरे हो सके। बता दें कि नगर पालिका एक्ट के मुताबिक नगर निगम में 60 दिनों में एक साधारण सभा की बैठक होनी चाहिए। लेकिन नगर निगम हेरिटेज में पिछले साढ़े तीन साल में महज दो साधारण सभा की बैठक हुई है। दोनों बैठक भी हंगामा की भेंट चढ़ गई थी। जिसकी वजह से पार्षद अपने वार्डों की समस्या को अब तक साधारण सभा की बैठक में नहीं रख पाए हैं। ऐसे में मेयर बनने के बाद कुसुम यादव ने सबसे पहले पार्षदों की मांग पर साधारण सभा की बैठक बुलाने का फैसला किया है।

जिला निर्वाचन अधिकारी ने संयुक्त टीम के साथ किया रामगढ़ विधानसभा क्षेत्र के चेक पोस्टों का निरीक्षण

दिल्ली-मुम्बई एक्सप्रेस हाइवे को दुर्घटना मुक्त रखने हेतु एनएचआई, पुलिस व परिवहन विभाग कार्य योजना बनाकर समन्वित रूप से कार्य करें

संजीवनी टुडे

आदर्श आचार संहिता की कडाई से पालना कराने के दिए निर्देश

अलवर। जिला निर्वाचन अधिकारी एवं जिला कलक्टर डॉ. आर्तिका शुक्ला ने आज रामगढ विधानसभा क्षेत्र में प्रशासन एवं पुलिस, आबकारी व परिवहन विभाग की टीम के साथ अंतरराज्यीय चेकपोस्ट नौगावां, गोविन्दगढ़-सिकरी मार्ग पर स्थित अंतर जिला चेक पाखसेड़ी एवं दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेस हाइवे के शीतल कट चेकपोस्ट निरीक्षण कर रामगढ़ विधानसभा उपचुनाव की तैयारी का जायजा लिया।

जिला निर्वाचन अधिकारी ने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिये कि रामगढ विधानसभा उप चुनाव को निष्पक्ष, शांतिपूर्ण एवं पारदर्शी सम्पन्न कराने हेतु भारत निर्वाचन आयोग के दिशा-निर्देशों की सख्ती से पालना सुनिश्चित करावे। उन्होंने निर्देश दिये कि चाक-चौबंद रहते हुए चेकपोस्टों पर वाहनों

से गुजरने वाले वाहनों की सघन जांच करे तथा अवैध शराब, नकदी आदि पाए जाने पर नियमानुसार कार्रवाई करें। की जाने वाली कार्रवाई की वीडियो रिकॉर्डिंग कराई जाए। साथ ही जांच में सीसीटीवी कैमरे का भी उपयोग करें। उन्होंने निर्देश दिये कि चेकपोस्ट पर जांच आदि कार्य इस प्रकार संपादित करें कि आमजन को असुविधा नहीं होवे। उन्होंने रिटर्निंग अधिकारी रामगढ को निर्देशित किया कि चेकपोस्टों पर पर्याप्त संख्या में आवश्यक संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित की जावे। साथ ही समय-समय पर इनकी मॉनिटरिंग करें। उन्होंने रामगढ विधानसभा क्षेत्र के मतदान केंद्रों में भी सभी मूलभूत सुविधाएं सुनिश्चित करने के निर्देश दिये। उन्होंने निर्देश दिये कि नाम निर्देशन पत्र भरने की प्रक्रिया की पूर्ण तैयारी सुनिश्चित करे। उन्होंने निर्देश दिये कि एफएसटी, एसएसटी आदि दल निरन्तर क्षेत्र की प्रभावी मॉनिटरिंग करते हुए गश्त पर रहे।

उन्होंने शीतल कट प्लाजा का निरीक्षण कर एनएचआई के परियोजना निदेशक से दिल्ली-मुम्बई एक्सप्रेस हाइवे पर हो रही दुर्घटनाओं आदि की जानकारी लेकर निर्देश दिये कि स्थानीय पुलिस व परिवहन विभाग के साथ समन्वय रखते हुए हाइवे पर अनाधिकृत रूप से खडे होने वाले ट्रकों के विरूद्ध कार्रवाई करे। ओवर स्पीड वाहनों के चालान करे। उन्होंने निर्देश दिये कि तकनीकी का उपयोग कर दुर्घटनाओं में रोकथाम लाए। उन्होंने जिला परिवहन अधिकारी को निर्देश दिये कि जिले में एक्सप्रेस हाइवे पर होने वाली दुर्घटनाओं की रोकथाम के लिए एनएचआई व पुलिस से समन्वय कर कार्य करे। इस दौरान एडीएम द्वितीय योगेश डागुर, एनएचआई के परियोजना निदेशक पी.के कौशिक, जिला परिवहन अधिकारी सुरेश यादव, जिला आबकारी अधिकारी अर्चना जैमन, रिटर्निंग अधिकारी एवं उपखण्ड अधिकारी रामगढ़ सुरेंद्र प्रसाद, उपखण्ड अधिकारी गोविन्दगढ़ सुभाष यादव, पुलिस अधिकारियों सहित संबंधित अधिकारी मौजूद थे।

खबरें फटाफट

साइंस पार्क ऑडिटोरियम में आज होगा शास्त्रीय संगीत समारोह का आगाज

संजीवनी टुडे

जयपुर। संगीत आश्रम संस्थान की ओर से तीन दिवसीय शास्त्रीय संगीत समारोह का आगाज 18 अक्टूबर, शुक्रवार शाम 4:30 बजे शास्त्रीनगर स्थित साइंस पार्क ऑडिटोरियम में होगा। संस्थान सचिव अमित अनुपम ने बताया कि समारोह के पहले दिन कथक नृत्य कार्यक्रम होगा। इसमें कलाकार जयपुर घराने का शुद्ध पारंपरिक कथक की प्रस्तुति देंगे। इसी प्रकार समारोह के दूसरे दिन 19 अक्टूबर को शाम 4:30 बजे बॉलीवुड के लेजेण्डरी प्लेबैक सिंगर किशोर कुमार याद में सांस्कृतिक संध्या संजोयी जाएगी। समारोह के आखिरी दिन 20 अक्टूबर को शाम 4:30 बजे शास्त्रीय गायक हरबंस ग्रेवाल का संगीत की राग-रागनियों का गुलदस्ता सजाएंगे।

निर्भयराम महाराज की छतरी पर हुआ शरद पूर्णिमा पर भव्य कार्यक्रम

संजीवनी टुडे

राजगढ़(अलवर)। कस्बे के गंगाबाग स्थित श्री श्री 1008 श्री निर्भय राम जी महाराज की छतरी गंगा बाग में शरद पूर्णिमा का उत्सव बैंड बाजा और भजनों के प्रस्तुति के साथ धूमधाम से मनाया गया। रात्रि 12 बजे खीर प्रसाद का वितरण किया गया। जिसमें भक्तों ने नाच कर व भजन गाकर और श्रद्धा के साथ आरती कर बाबा का प्रसाद प्राप्त किया। कार्यक्रम के संयोजन मंडल में शामिल अलवर रेलवे स्टेशन स्थित फूड प्लाजा संचालक राजेश जोशी ने बताया कि गंगाबाग राजगढ़ स्थित श्री दादू पंथ पीठाधीश्वर अष्टम आचार्य स्वामी श्री निर्भय राम जी महाराज की छतरी पर यह कार्यक्रम वर्षों से चला आ रहा है।जिसमें राजगढ़, अलवर, बसवा, बांदीकुई सहित आसपास के ग्रामीणों के लोग आते हैं और नाचकर गाकर अपने भजन के माध्यम से प्रस्तुति देते हैं और रात्रि 12 बजे बैंड बाजा के साथ महाराज की आरती में शामिल होकर खीर का महाप्रसाद प्राप्त करते हैं।

रामगढ विधानसभा उप चुनाव 2024 के लिए 18 अक्टूबर से 25 अक्टूबर तक भरे जा सकेंगे नाम-निर्देशन पत्र

संजीवनी टुडे

अलवर। निर्वाचन अधिकारी डॉ. आर्तिका शुक्ला ने बताया कि भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार रामगढ विधानसभा उप चुनाव 2024 हेतु 18 अक्टूबर से नाम-निर्देशन पत्र भरने की प्रक्रिया प्रारम्भ होगी तथा 25 अक्टूबर तक (परक्राम्य लिखत अधिनियम के तहत घोषित राजकीय अवकाश को छोडकर) अभ्यर्थियों द्वारा प्रातः 11 बजे से अपराह्न 3 बजे तक रिटर्निंग अधिकारी एवं उपखण्ड अधिकारी रामगढ के कार्यालय में नामांकन भरे जा सकेंगे। उन्होंने बताया कि नामांकन पत्रों की स्क्रूटनी 28 अक्टूबर को की जावेगी तथा 30 अक्टूबर तक अभ्यर्थनाएं वापस ली जा सकेंगी। उन्होंने बताया कि नाम-निर्देशन पत्र भरने की प्रक्रिया के दौरान भारत निर्वाचन आयोग के प्रोटोकॉल के तहत नामांकन भरने हेतु अभ्यर्थी सहित कुल 5 व्यक्ति ही प्रवेश कर सकेंगे। रिटर्निंग अधिकारी कार्यालय की 100 मीटर की परिधि तक अभ्यर्थी अधिकतम तीन वाहन ही अनुमत है। उन्होंने बताया कि नामांकन भरने हेतु आवेदन पत्र रिटर्निंग अधिकारी कार्यालय रामगढ से प्राप्त किए जा सकते है।

23 अक्टूबर को आयोजित होने वाला जिला स्तरीय इन्वेस्टर मीट आगामी आदेशों तक के लिए स्थगित

संजीवनी टुडे

अलवर। जिला कलक्टर डॉ. आर्तिका शुक्ला ने बताया कि जिले में 23 अक्टूबर को आयोजित होने वाले जिला स्तरीय इन्वेस्टर मीट को रामगढ विधानसभा उप चुनाव के अन्तर्गत जिले में आदर्श आचार संहिता के चलते आगामी आदेशों तक के लिए स्थगित किया गया है।

मतदान सामग्री की सुरक्षा के लिए पुलिसकर्मियों को नियुक्त करने के निर्देश

संजीवनी टुडे

डूंगरपुर। डूंगरपुर जिले की विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र चौरासी-161 के विधानसभा उप चुनाव-2024 की घोषणा निर्वाचन आयोग भारत सरकार द्वारा घोषणा निर्वाचन आयोग भारत सरकार 15 अक्टूबर को की जा चुकी है। इसके साथ ही जिले में आदर्श आचार संहिता प्रभावी हो चुकी है। उप जिला निर्वाचन अधिकारी श्री दिनेश धाकड़ ने बताया कि इसी क्रम में 11 अक्टूबर को सायं 4 बजे तक कॉलेज ग्राउण्ड पर निर्वाचन विभाग द्वारा काउण्टर स्थापित किए जाकर मतदान दलों को दी जाने वाली सामग्री के बेग एवं वोटिंग कम्पार्टमेन्ट काउण्टरों पर उपलब्ध कराई जाएगी। मतदान सामग्री की सुरक्षा के लिए 2 पुलिसकर्मियों की ड्यूटी कॉलेज ग्राउण्ड डूंगरपुर में लगाए जाने के निर्देश दिए है।

सोशल मीडिया बना अनाथ परिवार का सहारा

संजीवनी टुडे

बांदीकुई । आज के तकनीकी युग में सोशल मीडिया का प्रयोग अच्छे कामों के लिए भी हो रहा है खासकर अनाथ परिवारों के लिए सोशल मीडिया वरदान साबित हो रहा है ।भांवता गांव में स्व. राजेश बलाई सुपुत्र स्व. पूरण मल बलाई का निधन हो जाने के कारण परिवार के सामने भरण पोषण की समस्या आ गई थी। पीड़ित परिवार में उसके दो छोटे भाई और विधवा बहिन हैं जो बिल्कुल अनाथ हो गए। परिवार के पास न जमीन है और न ही आय का कोई स्रोत है। उस पीड़ित परिवार की दयनीय व नाजुक स्थिति को देखते हुए गांव वालों तथा सर्व समाज नवयुवक हेल्प टीम ने सोशल मीडिया पर सहायता हेतु मिशन चलायाऔर जिसमें सर्व समाज के समाजसेवियों ने बढ़- चढ़कर योगदान किया। इस मिशन में कुल सहयोग राशी 157463 रुपए रही। यह राशि उपस्थित सदस्यों ने 1 लाख रुपए की एफडी कराने व शेष राशी घर खर्च हेतु सुपुर्द की। मिशन से जुड़े हुए व्यक्ति सुखदेवा गुरुजी ने मीडिया को बताया कि हनुमान जगसोल्या, रोहिताश मेघवाल, मनीष मीणा, जीतू मीणा, भीम सिंह मीणा (रेलवे) भांवता, अमरपाल योगी, रतिराम मीणा, राकेश कुमार बलाई, हरिओम जरासी, महेश बैरवा

प्रॉजेक्ट मैनेजर व विष्णु शर्मा चांदेरा उपाध्यक्ष, लक्ष्मी नारायण रेहड़िया, मुकेश कुमार बलाई, महेश सिनेस्टार जयपुर, दीपक छेड़वाल (मोदी ग्रुप), मुकेश कुमार दिल्ली पुलिस, मुथरेश मीणा ट्रेन मैनेजर, शक्तिमान मुंगेशिया, धर्मपाल (दिल्ली पुलिस), रामकेश मीणा, सुखदेवा मास्टर करनावर, नरसी रेलवे जगसोली आदि मिशन में सक्रिय रहे । मिशन समापन के अवसर पर स्थानीय सरपंच रत्तीराम मीना, हनुमान जगसोल्या, जयसिंह, मुकेश कुमार बलाई, कालूराम, रमेश, चंद्रपाल, बिल्लू प्रसाद, पप्पूराम, रोहतास कुमार, किशोरी लाल मीणा, भोलाराम बलाई, राकेश कुमार, विक्रम कुमार मीणा, राहुल मीणा,मनोज योगी आदि सर्व समाज के बंधु, भांवता ग्रामवासी, रिश्तेदार व नवयुवक हेल्प टीम के सदस्य उपस्थित रहें।

ब्रह्माकुमारीज के जयपुर में 60 वर्ष पूर्ण होने पर मनाया डायमंड जुबली उत्सव

संजीवनी टुडे

जयपुर। राजधानी जयपुर में ब्रह्माकुमारीज राजापार्क के 60 वर्ष पूरे होने पर एक डायमंड जुबली कार्यक्रम का आयोजन एंटरटेनमेंट पैराडाइज के सेंट्रल लॉ में रखा गया। साथ ही ब्रह्माकुमारीज राजापार्क सबजॉन इंचार्ज आदरणीय पूनम दीदी का अलोकिक जन्म दिवस भी मनाया गया। मीडिया प्रभारी पीयूष बच्चानी ने बताया कि इस अवसर पर राजापार्क सबजॉन के अंतर्गत आने वाले राजस्थान के विभिन्न सेवा केंद्र की इंचार्ज बहनें उपस्तिथ थी।

नैतिक मूल्य तथा परमात्मा संदेश को जन जन तक पहुंचाने के लिए ब्रह्माकुमारीज निरंतर प्रयासरत है, जिसके अंतर्गत पूरे राजस्थान के अंदर कई सेवा केंद्र है। तथा जयपुर में इन सेवाओं को पूरे साठ वर्ष कंप्लीट हो गए हैं जिससे उन सभी सेवाकेंद्र के

इंचार्ज बहनों का सम्मान समारोह भी रखा गया ।जिसमें मुख्य 21 राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी बहनें सम्मिलित हुई।

कार्यक्रम की मुख्य अतिथि अंतरराष्ट्रीय आध्यात्मिक वक्ता बीके उषा दीदी थी, जो माउंट आबू से खास इस कार्यक्रम के लिए पधारी। कार्यक्रम की शुरुआत सुंदर गीतों से की गई तथा बाद में राजापार्क सबजॉन की सभी सेवाओं को लेकर एक वीडियो दिखाया गया। तथा कन्याओं द्वारा सुंदर नृत्य भी प्रस्तुत किया गया। अंत में आदरणीय बीके पूनम दीदी द्वारा केक कटिंग कर जन्मदिन मनाया गया। इस दौरान राजस्थान के कई सेवा केंद्र से बीके भाई -बहनें भी मौजूद थे।

पंचम कोरोना वॉरियर क्रिकेट प्रतियोगिता का फाइनल एसएमएस हॉस्पिटल ने जीता

संजीवनी टुडे

जयपुर। 14 अक्टूबर से चल रही प्रतियोगिता के संयोजक महिपाल सिंह सामोता ने बताया कि प्रतियोगिता के अंतिम दिन फाइनल मुकाबला एस एम एस हॉस्पिटल जयपुर व राजसमंद रॉयल्स के बीच खेला गया। जिसमे एस एम एस हॉस्पिटल ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 96 रन बनाये जिसके जवाब में राजसमंद ने 49 रन बनाये। जिसमे एस एम एस हॉस्पिटल को 47 रन से विजयी घोषित किया गया। मैन ऑफ़ द मैच रमेश श्रीमल रहे। आयोजन के सचिव मनोज दुब्बी ने बताया कि समापन समारोह में निदेशक अराजपत्रित राकेश शर्मा संयुक्त निदेशक राकेश गोचर,ने विजेता टीम के कप्तान किशन सैनी, व मैन ऑफ़ द सीरीज फारूक अहमद को ट्रॉफी व मैडल देकर सम्मानित किया। उपविजेता टीम राजसमंद को ट्रॉफी व मैडल दिए गए। इस दौरान आरएनए के प्रदेश अध्यक्ष प्यारेलाल चौधरी कार्यकारी प्रदेश अध्यक्ष नरेंद्र सिंह शेखावत एनटीएआई के प्रदेश अध्यक्ष पुरषोत्तम कुम्भज, पूर्व रजिस्ट्रार महेश शर्मा, नर्सिंग अधीक्षक सुरेश मीणा, पवन मीणा, मनोज दुब्बी सोमसिंह मीणा, भूपेंद्र मीणा, प्रहलाद मीणा, जीतेन्द्र सामोता, आमीन खान मनीष अरोड़ा, सत्यप्रकाश, नमोनारायण मीणा आयोजनकर्ता हरिसिंह भाटी, महेश, महेंद्र कुड़ी आदि उपस्थित रहे।

जनसुनवाई में 7 का सर्तकता समिति में 5 प्रकरणों का निस्तारण

कलक्टर मंत्री ने सुनी आमजन की समस्यायें समाधान के लिये दिये निर्देश

संजीवनी टुडे

पाली। जन भावना के अनुरूप पारदर्शी, संवेदनशील वातावरण में आमजन की परिवेदनाओं/समस्यों की सुनवाई एवं त्वरित समाधान के लिए प्रतिमाह अनुसार त्रिस्तरीय जनसुनवाई की जाती है । इसके तहत गुरूवार को जिला कलेक्ट्रेट परिसर स्थित सूचना प्रौद्योगिकी और संचार विभाग कार्यालय में वीडियो कॉन्फ्रेसिंग के माध्यम से हुआ। इस अवसर पर जयपुर से मुख्य सचिव व अन्य अधिकारी वर्चुअली प्रदेश के सभी जिलों में आयोजित हो रही जिला स्तरीय जनसुनवाई में जुड़े। जनसुनवाई में जिला कलक्टर एलएन मंत्री ने जनसुवाई करते हुये कहा कि आमजन की समस्याओं का त्वरित ,गुणवत्तापूर्ण निस्तारण करें और उन्हें राहत प्रदान करें। इस अवसर पर आये हुये लोगों की सुनवायी की और निस्तारण के लिये संबधित अधिकारियों को निर्देश दिये। जिला कलक्टर ने सम्पर्क पर दर्ज प्रकरणों की समीक्षा कर उनके निस्तारण के लिये सभी अधिकारियों को निर्देश दिये और कहा कि सम्पर्क दर्ज प्रकरणों का समयबद्ध निस्तारण करे। जनसुनवाई में कुल 7

प्रकरणों का निस्तारण कुल 58 प्रकरण आए। जनसुनवाई में कुल 58 प्रकरण आए जिसमे से 2 प्रकरणो का हाथों हाथ निस्तारण किया गया व शेष रहे प्रकरणों को सम्बन्धित अधिकारियों को निस्तारण के निर्देश दिये। जनसुनवाई में, स्वायत्त शासन से जुड़े 14 प्रकरण, राजस्व के 13 , पुलिस के 2 , विजिलेंस का 1,, बिजली का 2, जलदाय विभाग का 2, ग्रामीण विकास के 6, कोष का 2, सिंचाई , शिक्षा का 1 ,मेडिकल के 2 , आरपीसीबी का 1, डूईट का 1, रीको का 1, यूआईटी के2, विजिलेंस का 1 ,सांख्यिकी का 1, प्रकरण जनसुनवाई में आये मामलों पर सुनवाई करते हुए संबंधित अधिकारियों को जल्द ही समाधान के निर्देश दिए। जिला कलेक्टर एलएन मंत्री ने आयोजित जिला सतर्कता समिति की बैठक में 5 प्रकरणों का निस्तारण किया व कुल 9 प्रकरणों की सुनवाई की अन्य मामलों में संबंधित अधिकारियों को निस्तारण के दिशा निर्देश प्रदान किये। इस अवसर पर अतिरिक्त जिला कलेक्टर प्रशासन डॉ बजरंग सिंह , अतिरिक्त जिला कलेक्टर ,सीलिंग भवानी सिंह ,जिला परिषद सीईओ मुकेश चौधरी , अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक विपिन शर्मा , नगर निगम आयुक्त ,नवीन भारद्वाज व अन्य विभिन्न विभागों के जिला स्तरीय अधिकारी उपस्थित व पाली ब्लाक लेवल अधिकारी वीसी से जुडे।

एनयूबीसी के नाम का दुरूपयोग कर सम्मेलन करने वालों के खिलाफ कार्यवाही करने की मांग

संजीवनी टुडे

जयपुर। राष्ट्रीय पिछड़ावर्ग अनुसूचित जाति जनजाति एवं अल्पसंख्यक महासंघ के नाम का दुरूपयोग कर पैसा मांगने का मामला सामने आया है। संगठन के संगठन सचिव विजय मीना ने बताया कि पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष जगदीश यादव जिसको अप्रैल में चेन्नई में निष्कासित कर दिया एवं महासंघ की स्थाई एवं कार्यकारी समिती द्वारा एस. गीता को राष्ट्रीय अध्यक्ष चुना गया। उसकी सूचना दिल्ली रजिस्ट्रार कार्यालय एव पूर्व अध्यक्ष जगदीश यादव को दे दी गई तथा महासंघ के समस्त अधिकार, बैंक खाते की लेन-देन एवं समस्त गतिविधियां एस. गीता के पास निहित है तथा सम्पूर्ण भारत में कार्य कर रही है। निष्कासित जगदीश यादव द्वारा महासंघ के निष्कासन के बाद भी महासंघ को तोडने व महासंघ के खिलाफ कार्य करने के लिए राष्ट्रीय अध्यक्ष द्वारा पूर्व में पत्र लिखकर सूचना दे दी गई उसके बाद भी महासंघ अध्यक्ष बने हुए है। इनके पास किसी प्रकार के अधिकारी नही है। हाल ही में राजस्थान में गैर कानुनी तरीके से प्रदेशाध्यक्ष हनुमान सहाय सिरसी को बनाकर गुरूवार को जयपुर में कार्यकर्ता सम्मेलन आयोजित किया गया जो कि महासंघ के संविधान के खिलाफ है। महासंघ के प्रदेशाध्यक्ष राजपाल मीना, जो चैयरमैन नॉर्थ जोन इण्डिया एनयूबीसी भी है के द्वारा आयुक्त पुलिस आयुक्तालय जयपुर एवं थानाधिकारी मानसरोवर को परीवाद दायर करवा दिया था। लेकिन पुलिस द्वारा अभी तक कार्यवाही नही की गई। शिवचरण उपनिरीक्षक, थाना मानसरोवर से जांच दी गई लेकिन अभी तक सकारात्मक कार्यवाही नही की गई। महासंघ मांग करता है कि हनुमान सहाय सिरसी के खिलाफ केश दर्ज कर उनके खिलाफ सख्त से सख्त खिलाफ कार्यवाही की जावे जिससे भविष्य में सामाजिक संगठनों का फर्जी तरीके से दुरूपयोग ना हो सके तथा समाज से पैसे उगाकर भ्रष्टाचार नही कर सके।

विद्या दान महादान, विद्यालय के लिए कक्षा कक्षों का निर्माण पुनीत कार्य: राणावत

संजीवनी टुडे

सादड़ी। विद्या दान महादान है, भामाशाह द्वारा विद्यालय के लिए कक्षा कक्षों का निर्माण करवाने से विद्यार्थियों को पढ़ने में सहायता मिलेगी। भामाशाह कैलाशकुमार भंवरलाल जी गेहलोत का यह सहयोग अभिनंदनीय व अनुकरणीय है। उक्त उद्गार श्री कृष्ण उपासक गादीपति मामाजी धाम महेंद्र सिंह जी राणावत ने स्थानीय महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय मेघवालों का बड़ा बास में कक्षा-कक्षों के भूमि पूजन समारोह में व्यक्त किए। राणावत ने कहा कि वाल्मीकि जयंती शरद पूर्णिमा के अवसर पर यह शुभ कार्य हो रहा है यह विद्यार्थियों के लिए अमृत समान सिद्ध होगा।इस अवसर पर परम पूज्य देवीदास जी महाराज ने भी भामाशाह के इस प्रयास को सराहते हुए इसे विद्यालय हित में बताया तथा अभिभावकों से बालक बालिकाओं को पढ़ाने की अपील की। शहरी संकुल प्रारंभिक शिक्षा अधिकारी विजय सिंह माली ने समारोह की अध्यक्षता की। इस अवसर पर सर्व प्रथम संस्था प्रधान राजकुमार मेघवाल के नेतृत्व में विद्यालय स्टाफ के सदस्यों लकमा राम परिहार,सुमन कुमारी

व बस्तिवासियों ने पूज्य संतों महेंद्र सिंह जी राणावत व देवीदास जी महाराज व भामाशाह प्रतिनिधि नरेश कुमार तंवर का स्वागत किया तत्पश्चात आचार्य संजीव कुमार के निर्देशन में पूज्य संतों देवीदास जी महाराज व महेंद्र सिंह जी राणावत ने वैदिक विधि विधान के साथ भूमि पूजन कर शिलान्यास किया। संस्था प्रधान राजकुमार ने भामाशाह कैलाश कुमार भंवरलाल जी गेहलोत सादड़ी हाल त्रिपुर का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर जसाराम बाफना, गुलाब राम बाफना, गंगा राम माराज, छोगाराम, पूनाराम रोवरिया,नेताराम, भंवरलाल भटनागर,कपूर वर्मा,वालाराम सोलंकी, वेनाराम माधव,पदमा राम,कलाराम, मगाराम, बाबूलाल, मांगीलाल उपस्थित रहे। उल्लेखनीय है कि शहरी संकुल प्रारंभिक शिक्षा अधिकारी विजय सिंह माली के अनुरोध पर नरेश कुमार तंवर के प्रयासों से भामाशाह कैलाश कुमार भंवरलाल जी गेहलोत ने महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय मेघवालों बास सादड़ी में 3कक्षाकक्ष व बालक बालिकाओं के लिए पृथक शौचालय मूत्रालयों का निर्माण करवा कर विद्यालय को सौंपने का निर्णय लिया।

महर्षि वाल्मीकि के जीवन से प्रेरणा ले: माली

संजीवनी टुडे

सादड़ी। महर्षि वाल्मीकि आदि कवि थे। उन्होंने रामायण जैसा श्रेष्ठ कालजयी कृति हमें दी। कला ,साहित्य,ज्ञान विज्ञान के मर्मज्ञ महर्षि वाल्मीकि मानवीय मूल्यों के संवाहक थे।हमें उनके जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए। उक्त उद्गार प्रधानाचार्य विजय सिंह माली ने स्थानीय पीएम श्री श्रीधनराज बदामिया राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय सादड़ी में अखिल भारतीय साहित्य परिषद के तत्वावधान में वाल्मीकि जयंती पर आयोजित संगोष्ठी में व्यक्त किए। माली ने कहा कि महर्षि वाल्मीकि के साहित्यिक अवदान पर हमें गर्व होना चाहिए। उनकी कालजयी कृति रामायण को सभी को पढ़ना चाहिए।

इस अवसर पर मधु गोस्वामी महावीर प्रसाद कन्हैयालाल ने भी महर्षि वाल्मीकि के जीवन पर प्रकाश डाला। इससे पहले कविता कंवर मनीषा ओझा के निर्देशन में भाषण निबंध चार्ट निर्माण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें प्रथम द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त करने वाली बालिकाओं को

सम्मानित किया गया।मंच संचालन प्रकाश कुमार शिशोदिया ने किया।इस अवसर पर वीरमराम चौधरी रमेश सिंह राजपुरोहित रमेश कुमार वछेटा मनीषा सोलंकी व गजेंद्र सिंह समेत समस्त स्टाफ उपस्थित रहा। इसी प्रकार राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय जाटों की डोरन में भी अखिल भारतीय साहित्य परिषद की ओर से वाल्मीकि जयंती पर प्रधानाचार्य महेंद्र देवपाल के सानिध्य में विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें उप प्राचार्य नारायण लाल हिंगड़ ने महर्षि वाल्मीकि के जीवन पर प्रकाश डाला।इस अवसर पर जसाराम चौधरी फूली कुमारी मोहनलाल कालुराम विक्रम सिंह जुगराज माली समेत समस्त स्टाफ उपस्थित रहा। सेवा भारती द्वारा संचालित समस्त सेवा प्रकल्पों पर भी वाल्मीकि जयंती का आयोजन हर्षोल्लास से किया गया। सेवा भारती जिला प्रचार प्रमुख दिनेश लूणिया ने बताया कि बाल संस्कार केन्द्र अंबेडकर नगर, मेघवालों का बड़ा बास , रेतरला बस्ती, मीणों का अरट में क्रमश भावना रिंडर, कुसुम भाटी, भावना कालबेलिया व तरुणा मीणा के निर्देशन में भैया बहनों ने महर्षि वाल्मीकि के जीवन प्रसंग सुनाए। सिलाई व कसीदा प्रशिक्षण केन्द्र पर भी महर्षि वाल्मीकि के जीवन पर शिक्षिका करिश्मा व कंचन ने प्रकाश डाला।

खबरें फटाफट

राइजिंग राजस्थान ग्लोबल इन्वेस्टमेंट समिट, उदयपुर में इन्वेस्टर मीट 22 को

■ संजीवनी टुडे

उदयपुर। प्रदेश में औद्योगिक प्रोत्साहन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से राज्य सरकार की ओर से आयोजित होने वाले राइजिंग राजस्थान ग्लोबल इन्वेस्टमेंट समिट के तहत उदयपुर में इन्वेस्टर मीट का आयोजन 22 अक्टूबर को सुबह 10 बजे होटल रेडिसन ब्लू में होगा। जिला उद्योग केन्द्र के महाप्रबंधक शैलेन्द्र शर्मा ने बताया कि इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि जिला प्रभारी एवं राजस्व मंत्री हेमंत मीणा, विशिष्ट अतिथि जनजाति क्षेत्रीय विकास मंत्री बाबूलाल खराड़ी, जिला प्रभारी सचिव व जेडीए आयुक्त श्रीमती आनन्दी, जिला कलक्टर अरविंद पोसवाल सहित अन्य गणमान्य अतिथि उपस्थित रहेंगे। इस मीट में रजिस्ट्रेशन व प्रतिभागियों के परिचय सत्र के बाद उदयपुर में निवेश के अवसरों पर प्रजेन्टेशन, राज्य व जिला स्तर पर बनाई मूवी का प्रदर्शन होगा और एमओयू होंगे।

राजसमंद : मंत्री जोगाराम पटेल करेंगे श्रीनाथ जी और चारभुजानाथ जी के दर्शन

■ संजीवनी टुडे

राजसमंद। संसदीय कार्य विभाग, विधि एवं विधिक कार्य, विधि परामर्शी एवं न्याय विभाग मंत्री जोगराम पटेल शुक्रवार 18 अक्टूबर को सुबह 10:30 बजे राजसमंद जिले के गाँव चारभुजा में प्रभु चारभुजा नाथ जी मंदिर तथा दोपहर 11:30 बजे नाथद्वारा में प्रभु श्रीनाथ जी के मंदिर में दर्शन करेंगे। दर्शन पश्चात वे चित्तौड़गढ़ स्थित मंडफिया में प्रभु साँवलिया सेठ के दर्शन हेतु प्रस्थान करेंगे।

ईएसएमएस पोर्टल का ऑनलाइन प्रशिक्षण

■ संजीवनी टुडे

उदयपुर। विधानसभा उपचुनाव- 2024 को लेकर निर्वाचन आयोग की ओर से गुरूवार ईएसएमएस (इलेक्शन सीजर मैनेजमेंट सिस्टम) पोर्टल का ऑनलाइन प्रशिक्षण हुआ। उदयपुर में डीओआईटी के वीडियो कांफ्रेन्स कक्ष में निर्वाचन व्यय निगरानी प्रकोष्ठ प्रभारी कृष्णपाल सिंह चौहान सहित प्रकोष्ठ से जुड़े सभी विभागों के अधिकारियों ने उपस्थित रहकर ऑनलाइन प्रशिक्षण में भाग लिया। विषय विशेषज्ञों ने उड़नदस्तों, स्थैतिक निगरानी दलों, पुलिस, आबकारी, जीएसटी आदि के माध्यम से होने वाली जब्ती को पोर्टल पर दर्ज करने आदि की प्रक्रिया से अवगत कराया। साथ ही जब्ती की कार्यवाही और पोर्टल पर इंद्राज के दौरान रखी जाने वाली सावधानियों आदि का भी प्रशिक्षण दिया।

जिला कृषि विकास समिति की समीक्षा बैठक 22 को

■ संजीवनी टुडे

उदयपुर। कृषि विकास कार्यक्रमों के प्रभावी, गुणवत्तापूर्ण, उद्देश्यपरक एवं समयबद्ध क्रियान्वयन हेतु गठित जिला कृषि विकास समिति की समीक्षा बैठक 22 अक्टूबर को दोपहर 12.30 बजे जिला कलक्टर अरविन्द पोसवाल की अध्यक्षता में जिला कलेक्ट्रेट सभागार में आयोजित होगी। कृषि विभाग के संयुक्त निदेशक सुधीर वर्मा ने बताया कि बैठक में कृषि विभाग वर्ष 2024-25 की कार्ययोजना एवं प्रगति के साथ संबंधित बिंदुओं पर चर्चा की जाएगी।

दीपोत्सव पर हर वर्ग तक पहुंचाएंगे शुद्ध मिठाईयां

■ संजीवनी टुडे

उदयपुर । सहकार भारती दीपावली पर्व के अवसर पर प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी शुद्धता का पालन करते हुए उचित मूल्य पर आमजन को काजू कतली, बेसन चक्की, मक्खन बड़ा एवं ड्रायफ्रूट बर्फी उपलब्ध कराएगा । जिला महामंत्री उमेश जोशी ने बताया कि इसके सफल क्रियान्वयन को लेकर प्रदेश संगठन प्रमुख प्रदीप चौबीसा की अध्यक्षता में बैठक हुई एवं स्वच्छता एवं शुद्धता संबंधित दिशा निर्देश दिए, बैठक के पश्चात विभाग प्रमुख गोपाल पालीवाल, प्रांत प्रचार प्रमुख स्वदेशी जागरण मंच धीरज बोड़ा ने पोस्टर का विमोचन किया गया, जिला महामंत्री उमेश जोशी ने बताया कि उदयपुर शहर में मिठाई की अग्रिम बुकिंग के लिए 34 विक्रय केंद्र रहेंगे जिन पर 26 अक्टूबर तक बुकिंग एवं 28 से 29 अक्टूबर तक मिठाई का वितरण रहेगा । बैठक में प्रदेश मंत्री दिनेश बंब, राजेश चित्तौड़ा, प्रदेश उपाध्यक्ष शांतिलाल शर्मा, जिला उपाध्यक्ष डॉ ओम साहू, महिला विभाग प्रमुख डॉ रचना कर्णपुरिया आदि सहकारविद उपस्थित थे।

जिले में राइजिंग राजस्थान इन्वेस्टर मीट का हुआ भव्य आयोजन

■ संजीवनी टुडे

फलोदी। औद्योगिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण फलोदी जिले में उद्योग और रोजगार के अवसर पैदा करने के लिए गुरुवार को राइजिंग राजस्थान इन्वेस्टर मीट का आयोजन प्रभारी मंत्री श्री मदन दिलावर के मुख्य आतिथ्य में पगड़ी रिसॉर्ट में हुआ। जिला मुख्यालय पर आयोजित इन्वेस्टर मीट में 138 से ज्यादा उद्यमियों ने 10 हजार 600 करोड़ के एमओयू किए। इस दौरान प्रभारी मंत्री श्री मदन दिलावर ने जिला प्रशासन व उद्योग विभाग द्वारा लगाई गई प्रमुख उद्योगों की विभिन्न स्टॉलो का अवलोकन करते हुए कार्यों की सराहना की। प्रभारी मंत्री ने कृषि विज्ञान केंद्र स्टॉल, सोनामुखी इंडस्ट्रीज स्टॉल,श्री राम किशन साल्ट,बैंकिंग प्रॉडक्ट, श्री खतरी फूड,साईं इंजीनियरिंग वर्क्स, कलानिवास, राजीविका आदि रहे।

प्रयासों से निवेश, रोजगार और राजस्व में होगी बढ़ोतरी: टी. रविकान्त

मेजर मिनरल ब्लॉकों के ऑक्शन में राजस्थान बन रहा अग्रणी प्रदेश

■ संजीवनी टुडे

प्रमुख सचिव माइंस ने ली खनिज विभाग की समीक्षा बैठक

उदयपुर। माइंस व पेट्रोलियम विभाग के प्रमुख शासन सचिव टी. रविकान्त ने प्रदेश में वैध खनन को बढ़ावा और अवैध खनन पर कारगर रोक लगाने के लिए खनिज एक्सप्लोरेशन, डेलिनियेशन, माइनिंग ब्लॉक तैयार कर ऑक्शन के कार्य में योजनावद्ध तरीके से तेजी लाने की आवश्यकता प्रतिपादित की है। उन्होंने कहा कि एक्सप्लोरेशन से ऑक्षन तक योजनावद्ध प्रयासों से निवेष, रोजगार और राजस्व में बढ़ोतरी होगी। मेजर मिनरल प्लॉटों के ऑक्षन में राजस्थान देश का अग्रणी प्रदेष बनता जा रहा है।

प्रमुख सचिव टी. रविकान्त उदयपुर खनिज भवन में डीएमजी भगवती प्रसाद कलाल के साथ विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों से रुबरु हो रहे थे। उन्होंने कहा कि राजस्व लक्ष्यों की शतप्रतिशत उपलब्धि सुनिश्चित करने के साथ ही राजस्व में होने वाली छीजत को रोकना होगा। विभागीय अधिकारियों को फील्ड में अधिक से अधिक सक्रिय रहने पर जोर देते हुए उन्होंने कहा कि इससे अवैध खनन गतिविधियों पर रोक लग सकेगी। रविकान्त ने कहा कि राज्य सरकार ने परिवर्तित बजट घोषणा की क्रियानविति में एमनेस्टी योजना जारी कर दी है। अब अधिकारियों का दायित्व हो जाता है कि वे योजना के मुख्य बिन्दुओं और लाभों

की जानकारी संबंधित तक पहुंचा कर इस योजना में अधिक अधिक वसूली के प्रयास करें। उन्होंने कहा कि हमें नीलाम खनिज ब्लॉकों में खनन कार्य शीघ्र आरंभ हो इसके लिए संबंधित से समन्वय बनाते हुए ठोस प्रयास करने होंगे। इससे प्रदेश में रोजगार व राजस्व में बढ़ोतरी होगी।

रविकान्त विधान सभा प्रश्नों, न्यायालयों के प्रकरणों में बकाया जबाव दावें अविलंब प्रस्तुत करने, मुख्यमंत्री, मुख्यसचिव सहित वीआईपी प्रकरणों पर तत्काल कार्रवाई कर जबाव भिजवाने और सीएमआईएस पोर्टल के प्रकरणों के निस्तारण के निर्देश दिए। निदेशक माइंस भगवती प्रसाद कलाल ने बताया कि विभाग द्वारा मिनरल ब्लॉकों तैयार कर नीलामी का रोडमेप तैयार कर कार्रवाई की जा रही है। उन्होंने कहा कि विभागीय मोनेटरिंग व्यवस्था को मजबूत करने के सकारात्मक परिणाम प्राप्त हो रहे हैं।

कलाल ने बताया कि इस साल सर्वाधिक मेजर मिनरल ब्लॉकों की नीलामी की जा रही है। इससे देश में अग्रणी होने के साथ ही निवेश, राजस्व में बढ़ोतरी होने लगी है। इस अवसर पर अतिरिक्त निदेशक माइनिंग एमपी मीणा, दीपक तंवर, पीआर आमेटा, एडीजी एसएन डोडिया, एनके सिंह, एफए गिरिश कछारा, ओएसडी श्रीकृष्ण शर्मा, एसजी रिमोट सेंसिंग सुनील वर्मा, एसएमई सतीश आर्य, एसपी शर्मा, आसिफ अंसारी, एसीपी जयेश नीनामा आदि ने विस्तार से गतिविधियों की जानकारी दी। बैठक में विभागीय अधिकारी उपस्थित रहे। इससे पहले प्रमुख सचिव टी. रविकान्त ने खनिज भवन व अतिरिक्त निदेशक खनिज उदयपुर के कार्यालयों का निरीक्षण और पौधारोपण किया।

समन्वय के साथ सूचनाओं पर त्वरित कार्रवाई हो: जिला निर्वाचन अधिकारी

■ संजीवनी टुडे

डूंगरपुर। जिला निर्वाचन अधिकारी एवं कलक्टर अंकित कुमार सिंह ने गुरुवार को विधानसभा उपचुनाव के तहत गठित जिला स्तरीय एकीकृत नियंत्रण कक्ष का निरीक्षण किया। भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार जिला कलक्ट्रेट परिसर में एकीकृत नियंत्रण कक्ष स्थापित किया गया है, जहां मीडिया अनुवीक्षण, , 1950 शिकायत निवारण, सी विजिल और जिला सामान्य नियंत्रण कक्ष 24 घंटे क्रियाशील हैं। जिला निर्वाचन अधिकारी ने सबसे पहले मीडिया अनुवीक्षण प्रकोष्ठ में समाचार चौनलों पर प्रसारित होने वाले समाचारों और राजनीतिक विज्ञापनों की मॉनीटरिंग की प्रक्रिया को समझा। उन्होंने प्रकोष्ठ में संचालित विभिन्न गतिविधियों और संधारित किए जा रहे रजिस्टरों के बारे में जानकारी ली। उपचुनाव से संबंधित सभी राजनीतिक समाचारों का बारीकी से विश्लेषण करते हुए भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार रिकॉर्ड संधारित करने और अपने उत्तरदायित्वों का गंभीरता से पालन करने के निर्देश दिए। उन्होंने प्रकोष्ठ 24 घंटे क्रियाशील रखने, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में राजनीतिक विज्ञापन के अधिप्रमाणन, समाचार पत्र, सोशल मीडिया, पेड न्यूज, फ़ेक न्यूज, राजनीतिक प्रचार-प्रसार आदि की सतत निगरानी और पर्यवेक्षण के निर्देश दिए। इस दौरान उप जिला निर्वाचन अधिकारी दिनेश चंद्र धाकड़, एकीकृत नियंत्रण कक्ष के प्रभारी मोतीलाल मीणा, मीडिया सेल प्रभारी विपुल शर्मा, सामान्य नियंत्रण कक्ष प्रभारी प्रदीप कुमार, सहायक जनसम्पर्क अधिकारी मोहनलाल खराड़ी भी उपस्थित थे।

त्यौहारी सीजन में मिलावटखौरो के विरुद्ध विशेष अभियान

■ संजीवनी टुडे

राजसमंद। सीएमएचओ डॉ हेमन्त कुमार बिन्दल ने बताया कि राज्य स्तर से दिये गये निर्देशानुसार त्यौहारी सीजन में जिले भर में मिलावटखौरो के विरूद्ध विशेष अभियान का संचालन किया जायेगा। उन्होंने बताया आमजन को गुणवत्तापूर्ण खाद्य पदार्थ मिले यह सुनश्चित करना है। उन्होंने बताया कि अभियान के लिये जिला कलक्टर के निर्देशानुसार नमूनीकरण एवं निरीक्षण हेतु जिले में दल का गठन कर दिया गया है। उन्होंने बताया कि खाद्य कारोबारी यह सुनिश्चित करलें की उनके प्रतिष्ठानो एवं खाद्य व्यवसाय में खाद्य सुरक्षा एवं मानक अधिनियम के नियम एवं विनियमों का पूर्ण पालना हो। उन्होंने बताया कि अभियान के तहत दूध, पनीर,मावा व इनसे बनी मिठाईंया, घी, तेल, मसाले आदि के नमूनीकरण कार्य किया जायेगा साथ ही टीम सम्बन्धित प्रतिष्ठानो में साफ - सफाई एवं स्वच्छता को लेकर भी विशेष निगरानी कर कार्यवाही करेगी। उन्होंने बताया कि अभियान के सूचारू संचालन के लिये खाद्य सुरक्षा अधिकारी शशीकांत शर्मा, अशोक कुमार यादव, सहायक कर्मचारी कालूराम एवं महेन्द्र सिंह को नियोजित कर दिया है।

28 को नौ चौकी पाल पर होगा भव्य दीपोत्सव और झील पूजन का आयोजन

■ संजीवनी टुडे

इक्कीस हजार से अधिक दीपकों से जगमगाएगी पाल, जुटेंगे सैंकड़ों लोग

राजसमंद। जिला कलक्टर बालमुकुंद असावा ने 28 अक्टूबर को नौ चौकी पाल पर भव्य आयोजन के निर्देश दिए हैं। तय कार्यक्रम अनुसार शाम 6 बजे से 8 बजे तक राजसमंद झील स्थित नौ चौकी पाल पर बेहद भव्य झील पूजन, भव्य आरती और दीपोत्सव का आयोजन होगा। साथ ही आतिशबाजी के साथ कार्यक्रम का समापन होगा। इस दौरान 21 हजार से अधिक दीपकों से नौ चौकी पाल को सजाया जाएगा। साथ ही नगर परिषद द्वारा सम्पूर्ण परिसर की भव्य लाइटिंग कराई जाएगी। यहाँ बड़ी संख्या में स्थानीयजन दीपोत्सव में भाग लेने हेतु पहुंचेंगे। कार्यक्रम के दौरान भजन और भक्ति गीत से पाल गुंजायमान रहेगी। नगर परिषद ने कार्यक्रम को लेकर तैयारियां शुरू कर दी है।

जिला कलक्टर असावा ने देर शाम अपने कक्ष में एडीएम नरेश बुनकर, जिला परिषद सीईओ बृज मोहन बैरवा और नगर परिषद अधिशासी अभियंता तरुण बाहेती के साथ इस आयोजन को सफल बनाने हेतु बैठक लेकर चर्चा की। इस दौरान यातायात, आमजन के आगमन, प्रस्थान, सुरक्षा, स्टेज, कार्यक्रम के समय, संसाधनों सहित विभिन्न प्रकार की जरूरी व्यवस्थाओं को प्रभावी रूप से अंतिम रूप देने के निर्देश दिए। उन्होंने निर्देश दिए कि कार्यक्रम भव्य हो, इसके लिए सभी अधिकारी पाल की पूर्व में विजिट कर तैयारियों की समीक्षा कर ले। इसके अलावा नौ चौकी पाल की साफ-सफाई भी नियमित रूप से सुनिश्चित करें। आपसी समन्वय से कार्यक्रम को सफल बनाएं।

न्यायाधीश भाटी ने सखी वन स्टॉप सेन्टर का औचक निरीक्षण किया

■ संजीवनी टुडे

पाली। राजस्थान राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, जयपुर के निर्देशानुसार आज विक्रम सिंह भाटी, सचिव, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण (अपर जिला न्यायाधीश), पाली द्वारा राजकीय बांगड़ चिकित्सालय, पाली में संचालित सखी वन स्टॉप सेन्टर का औचक निरीक्षण किया गया। सचिव भाटी द्वारा केन्द्र प्रबन्धक सुश्री देवी बामणिया से सखी वन स्टॉप सेन्टर पर पीड़िताओं के लिये आवासीय सुविधाओं इत्यादि के संबंध में जानकारी ली गई। केन्द्र में घरेलू हिंसा पीड़ितों के लिए अस्थाई आवास की सुविधा उपलब्ध है। निरीक्षण के दौरान सखी वन स्टॉप सेन्टर के रिकॉर्ड का अवलोकन किया गया। केन्द्र पर दर्ज प्रकरणों की समीक्षा में पाया गया कि केन्द्र द्वारा सक्रिय व प्रभावी रूप से कार्य किया जा रहा है। सेन्टर पर सहायता हेतु पीड़ित महिलाओं को प्रदान की गई सहायता के बारे में जानकारी प्राप्त की गई। काउंसलिंग हेतु पीड़ित महिला को हर संभव सहायता प्रदान करने एवं विधिक सहायता अपेक्षित होने पर निःशुल्क विधिक सहायता हेतु प्राधिकरण को आवेदन पत्र प्रेषित किये जाने के संबंध में सचिव भाटी द्वारा केन्द्र प्रबन्धक को निर्देश दिये गये। वन स्टॉप सेन्टर के विभिन्न रजिस्टरों एवं पत्रावलियों का निरीक्षण कर आवश्यक दिशा निर्देश प्रदान किए एवं विगत माह के आंकडे एकत्रित किए। निरीक्षण के दौरान केन्द्र प्रबन्धक देवी बामणीया, सोनीया जोशी, गीता आदि उपस्थित रहें।

राजनीतिक पार्टी के चुनावी पोस्ट, बैनर इत्यादि हटाने के निर्देश

■ संजीवनी टुडे

डूंगरपुर। विधानसभा उप चुनाव-2024 की घोषणा के साथ ही पूरे जिले में आदर्श आचार संहिता प्रभावी हो गई है। जिला निर्वाचन अधिकारी एवं कलक्टर अंकित कुमार सिंह ने आयुक्त नगरपरिषद डूंगरपुर एवं अधिशाषी अधिकारी नगरपालिका सागवाड़ा, आसपुर, सीमलवाड़ा तथा ग्रामीण क्षेत्रों के लिए विकास अधिकारियों तथा तहसीलदारों को सभी दीवारों पर पूर्व में लिखे गए चुनावी नारे, चुनाव चिन्ह और पोस्टर इत्यादि को साफ कराने के निर्देश दिए हैं। चुनाव आदर्श आचार संहिता के तहत कोई भी राजनीतिक दल अथवा उम्मीदवार किसी भी निजी सम्पत्ति पर उसकी अनुमति के बिना ध्वज, बैनर, पोस्टर इत्यादि नहीं लगाएगा। संबंधित अधिकारी अपने-अपने क्षेत्र में किसी भी राजनीतिक पार्टी के उम्मीदवार द्वारा निजी भवनों, भूमि अथवा दीवार पर बिना उसके स्वामी की अनुमति के कोई भी चुनावी नारा, बैनर, पोस्टर नहीं लगाएगा। यदि बिना अनुमति के कोई व्यक्ति यह कार्य करता हुआ पाया जाए तो उसको रोका जाए।

टोबैको फ्री यूथ केम्पेन 2.0 पर संभाग स्तरीय कार्यशाला का आयोजन

■ संजीवनी टुडे

उदयपुर। चिकित्सा विभाग की ओर से टोबैको फ्री यूथ केम्पेन की संभाग स्तरीय कार्यशाला का आयोजन संयुक्त निदेशक डॉ प्रकाश चंद्र शर्मा की अध्यक्षता में हुआ। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ शंकर एच बामनिया ने बताया कि कार्यशाला में उदयपुर और बांसवाड़ा संभाग के सभी जिलों के सीएमएचओ, डिप्टी सीएमएचओ के साथ शिक्षा व पुलिस विभाग, नगर निगम, सभी ब्लॉक से बीसीएमओ और स्टेक होल्डर ने भाग लिया। कार्यशाला में राज्य स्तर से नरेन्द्र सिंह व एसआरकेपीएस एनजीओ के राजन चौधरी शामिल हुए। संयुक्त निदेशक ने शपथ दिलाते हुए कहा कि तम्बाकू मुक्त ग्राम और शहर के लिए सार्वजनिक स्थानों पर तम्बाकू पर पूर्ण प्रतिबंध लगाया जाना चाहिए। इसमें पुलिस विभाग और नगर निगम का सहयोग अपेक्षित है। राज्य प्रतिनिधि नरेंद्र सिंह ने केन्द्र और राज्य सरकार के इस कार्यक्रम की जानकारी देते हुए बताया कि टोबैको फ्री यूथ केम्पेन के

माध्यम से जागरूकता द्वारा लोगों को तम्बाकू उत्पादों के सेवन से दूर करना ही इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य है। सीएमएचओ डॉ बामनिया ने बताया कि 60 दिवसीय टोबैको फ्री यूथ केम्पेन के माध्यम लोगों को जागरूक करना है। उन्होंने कोटपा एक्ट के अंतर्गत उपयुक्त धाराओं के अनुसार चालान की कार्यवाही करने की बात कही। सलूंबर सीएमएचओ डॉ बुनकर ने भी उपयोगी सुझाव दिए। एसआरकेपीएस एनजीओ के राजन चौधरी ने बताया कि हमारा मुख्य उद्देश्य तम्बाकू मुक्त ग्राम पंचायत बना कर युवा पीढ़ी को इसके दुष्परिणामों से बचाना है। डिप्टी सीएमएचओ डॉ अंकित जैन व एनटीपीसी नोडल डॉ प्रणव भावसार ने भी विचार रखे। उप निदेशक डॉ पंकज गौड़ ने आभार जताया।

बिहार के अधिकारी दल ने किया राजस्थान में बाल संरक्षण योजनाओं का अध्ययन

■ संजीवनी टुडे

उदयपुर। राजस्थान सरकार द्वारा बाल संरक्षण के लिए संचालित योजनाओं के क्रियान्वयन तथा बाल अधिकारिता विभाग और युनिसेफ के नवाचारों के अध्ययन के लिए बिहार राज्य के समाज कल्याण विभाग के राज्य स्तरीय अधिकारियों ने उदयपुर जिले का भ्रमण किया।

उदयपुर में आयोजित एक बैठक में युनिसेफ राजस्थान के बाल संरक्षण विशेषज्ञ डॉ.संजय कुमार निराला ने बालकों के सर्वांगीण विकास में परिवार एवं समाज की भूमिका पर प्रकाश डाला और बताया कि किशोर न्याय अधिनियम के अंतर्गत परिभाषित देखरेख एवं संरक्षण की आवश्यकता वाले बालकों के पुनर्वास के लिए सरकार द्वारा परिवार आधारित योजनाएं फोस्टर केयर योजना एवं वात्सल्य आदि संचालित की जा रही है। उन्होंने बताया कि उदयपुर जिले में कई बालकों को परिवार आधारित योजनाओं से जोड़ा गया

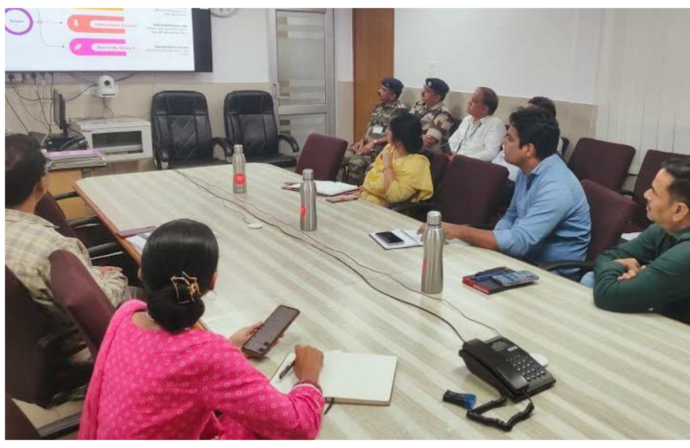

तथा उन्हे षिक्षा एवं विकास के अवसर उपलब्ध कराए जा रहे हैं। बिहार के समाज कल्याण विभाग की संयुक्त निदेषक श्रीमती ममता झा ने बिहार में बाल संरक्षण के लिए संचालित योजनाओं से उदयपुर एवं राजस्थान के अधिकारियों को अवगत कराया तथा राजस्थान सरकार की योजनाओं के बारे में जाना। बैठक में बिहार राज्य के समाज कल्याण विभाग की सहायक निदेषक श्रीमती रंजना, प्रोग्राम मैनेजर राज्य दत्तक गृहण एजेंसी बिहार के प्रषान्त आदि ने परिवार आधारित बाल संरक्षण पुनर्वास योजनाओं के बारे में जानकारी ली। बाल कल्याण समिति उदयपुर की अध्यक्ष श्रीमती यशोदा पाणिया ने जिले में देखरेख एवं संरक्षण की आवश्यकता वाले बालकों के संबंध में विभिन्न प्रक्रियाओं तथा परिवार आधारित पुनर्वास योजनाओं पर प्रकाश डाला। बाल अधिकारिता विभाग की सहायक निदेशक श्रीमती अरूषि जैन, प्रोबेशन अधिकारी राजकुमार जीनगर, गृह अधीक्षक राजकीय किशोर गृह के पंकज पचार, परामर्शदाता अनुपम ,फोस्टर केयर सोसायटी की निदेशक डॉ.शिल्पा मेहता, पुलिसिंग फॉर केयर ऑफ चिल्ड्रन कार्यक्रम यूनिसेफ की संभाग स्तरीय सलाहकार श्रीमती सिन्धु बिनुजीत, मानव तस्करी विरोधी प्रकोष्ठ उदयपुर के प्रभारी गोविन्द लाल आदि ने भी विचार व्यक्त किए। बैठक में बिहार राज्य के समाज कल्याण विभाग तथा उदयन केयर एंड मिरेकल फाउंडेशन के लगभग 15 अधिकारियों के साथ जिले में बाल संरक्षण के लिए कार्यरत विभिन्न विभागों तथा संस्थानों के प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

राज्यसभा सांसद चुन्नीलाल गरासिया ने संसदीय पेट्रोलियम और नेचुरल गैस स्थायी समिति की बैठक में लिया भाग

■ संजीवनी टुडे

उदयपुर। राज्यसभा सांसद चुन्नीलाल गरासिया ने गुरुवार को लोक सभा सचिवालय में संसदीय पेट्रोलियम और नेचुरल गैस स्थायी समिति की बैठक में भाग लिया। गुरुवार को संसदीय पेट्रोलियम और नेचुरल गैस स्थायी समिति के अध्यक्ष सुनील तटकरे की अध्यक्षता में बैठक का आयोजन किया गया जिसमें मंत्रालय का लेखजोखा समिति के सदस्यो के सामने रखा गया तथा भविष्य में मंत्रालय की आगामी योजनाओं के बारे में सदस्यों को अवगत कराया गया। इस बैठक में अधिकांश सदस्यों ने अपनी जिज्ञासाओं को अध्यक्ष के माध्यम से मंत्रालय के सामने रखा, जिसका अधिकारियों ने सभी जिज्ञासाओं का सिलसिलेवार जवाब दिया। माननीय सांसद चुन्नीलाल गरासिया ने प्रश्न पूछा कि क्या पेट्रोलियम वितरक और उपभोक्ताओं के बनाये गये गैर-सरकारी संगठनों के माध्यम से समय-समय पर आने वाली समस्याओं की चर्चा मंत्रालय से होती है? प्रत्युत्तर में अधिकारियों ने अवगत कराया की निश्चित समय के अंतराल में गैर-सरकारी संगठनों के प्रतिनिधियों के साथ चर्चा करते है और उनकी सलाहों पर अपने स्तर पर समस्याओं का निराकरण भी करते है, क्योकि पेट्रोलियम उत्पाद को ग्राहक तक पहुचाने का कार्य पेट्रोलियम वितरक ही करते हैं।

सम्पादक की कलम से....
सम्पादकीय

नदियों पर निर्भर है हमारा जीवन, इसे प्रदूषित होने से रोके

नदियां सदैव ही जीवनदायिनी रही हैं। प्रकृति का अभिन्न अंग हैं नदियाँ। नदियाँ अपने साथ बारिश का जल एकत्रित उसे भू-भाग में पहुचती हैं। एशिया में गंगा, ब्रह्मपुत्र, यमुना, आमूर, लेना, कावेरी, नर्बदा, सिंघु, यांगत्सी नदियाँ, अफ्रीका नील, कांगो, नाइजर, जम्बेजी नदियाँ, उत्तरी अमेरिका में मिसिसिपी, हडसन, डेलावेयर, मैकेंजी नदियाँ, दक्षिणी अमेरिका में आमेजन नदी, यूरोप में वोल्गा, टेम्स एवं आस्ट्रेलिया में मररे डार्लिंग विश्व की प्रमुख नदियाँ हैं। यह विडंबना ही है कि हमारी आस्था की पवित्र और संस्कृति से जुड़ी नदियां प्रदूषित हो रही हैं। लोगों काफी समय से सीवर, औद्योगिक कचरा, पॉलीथिन आदि डाल रहे हैं, जिस से आज भारत की नदियां दुनिया मे सबसे ज्यादा प्रदूषित हो गई हैं । दिल्ली में यमुना, कानपुर में गंगा एवं मुम्बई में मीठी नदी अत्यंत प्रदूषित हैं। इन नदियों का पानी ही नहीं वरण आसपास की भूमि भी बंजर बनती जा रही है। इस से देश की अर्थव्यवस्था एवं नागरिकों के स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा है। एक तरफ नदियों को माता कह कर पूजा जाता है दूसरी ओर उनमें सीवर, कचरा औऱ शव डाले जाते है। ऐसे में नदी को पूजने और पवित्र कहने का कोई अर्थ नहीं रह जाता। हम नदियों को प्रदूषित करने का कारक बनते हैं तो कर्मकांडों से हमे खुशी नहीं मिलने वाली।

सीपीसीबी की रिपोर्ट के मुताबिक जीनदायिनी कही जाने वाली ये नदियां खुद खतरे में हैं। देश में 521 नदियों के पानी की मॉनिटरिंग करने वाले प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के मुताबिक देश की 198 नदियां ही स्वच्छ हैं। इनमें अधिकांश छोटी नदियां हैं। जबकि, बड़ी नदियों का पानी भयंकर प्रदूषण की चपेट में है। जो 198 नदियां स्वच्छ पाई गईं, इनमें ज्यादातर दक्षिण-पूर्व भारत की हैं। नदियों की स्वच्छता के मामले में तो महाराष्ट्र का बहुत बुरा हाल है। यहां सिर्फ 7 नदियां ही स्वच्छ हैं, जबकि 45 नदियों का पानी प्रदूषित है। गंगा सफाई के लिए मिले डेढ़ हजार करोड़ खर्च ही नहीं हुए जिस कारण गंगा का हाल जस का तस बना हुआ है। भारतीय जनजीवन में नदियों महत्व इसी से जाना जा सकता है कि धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक, व्यापारिक, पर्यटन, स्वास्थ्य, कृषि, शैक्षिक, औषधि, पर्यवरण और न जाने कितने क्षेत्र हैं जो हमारी नदियों से सीधे-सीधे जुडे हुए हैं। किसी भी अन्य सभ्यता से बहुत लंबे समय तक हमने नदियों को धर्म से जोड कर इन्हें स्वच्छ और पवित्र भी बनाए रखा।

नदियों का सामाजिक, आध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक महत्व किसी प्रकार काम नही है। आध्यात्मिक स्तर पर यह माना जाता है कि पानी की स्वच्छ करने की शक्ति आंतरिक बाधाओं को दूर करने में सहायता करती है। जब हम नदी में डुबकी लगाते हैं तो पानी हमारे नकारात्मक विचारों को अवशोषित कर लेता है। जब ऋषि नदियों के किनारे तपस्या करते हैं तो नदी उन नकारात्मक विचारों से मुक्त हो जाती है और पानी पवित्र हो जाता है। नदी का पानी वह पवित्र मार्ग है जो पापियों को पवित्र पुरूषों और महिलाओं के साथ जोड़ता है और नदी के किनारे उन लोगों की आध्यात्मिक ऊर्ज़ा से भर जाते हैं जो यहां ध्यान लगाते हैं। पत्थरों, बजरी, जड़ी-बूटियों और पौधों को छूकर बहते पानी के कारण नदी के भौतिक, रासायनिक और जैविक गुण बढ़ जाते हैं। उदाहरण के लिए, गंगा नदी के निश्चित औषधीय गुण पहाड़ों की हिमालय श्रृंखला में पाई जाने वाली औषधीय जड़ी-बूटियों की उपस्थिति से बढ़ते हैं। इस तरह के पानी में लाभकारी रेडियोधर्मिता सूक्ष्म स्तर पर पाई जाती है। यह आवश्यक है कि नदी के पानी में उपस्थित भौतिक गुणों को पवित्र रखा जाए जिससे कि गहन आध्यात्मिक गुण प्रकट हो सकें। नदियों से जीवन के लिए अत्यन्त आवश्यक स्वच्छ जल प्राप्त होता है यही कारण है कि अधिकांश प्राचीन सभ्यताएं, जनजातियाँ नदियों के समीप ही विकसित हुईं। भारत की प्राचीन सिंधु घाटी सभ्यता सिंधु नदी के पास विकसित हुई। सम्पूर्ण विश्व के बहुत बड़े भाग में, पीने का पानी और घरेलू उपयोग के लिए पानी, नदियों के द्वारा ही प्राप्त किया जाता है। आर्थिक दृष्टि से भी नदियां बहुत उपयोगी होती है क्योंकि उद्योगों के लिए आवश्यक जल नदियों से सरलता से प्राप्त किया जा सकता है। कृषि के लिए सिंचाई हेतु आवश्यक पानी नदियों द्वारा प्रदान किया जाता है। नदियाँ खेती के लिए लाभदायक उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी का उत्तम स्त्रोत होती हैं।

आज का राशिफल

यह राशिफल जन्म राशि पर आधारित है। व्यक्ति के जन्म के समय चंद्रमा जिस राशि पर थे, वही उसकी जन्म राशि होती है। यदि राशि की जानकारी आपको नहीं है तो अपने नामाक्षर से राशिफल देखें।

मेष (चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ) : आज भाग्य से कोई नया प्रस्ताव मिल सकता है। सरकारी काम आसानी से बन जाएंगे। अधिकारी सहयोग करेंगे। किसी चैरिटी आदि में धन खर्च करेंगे। मित्रों के साथ पार्टी में जा सकते हैं।

वृषभ (ई,उ,ए,ओ,वा,वी,वू,वे,वो) : सुख-सुविधाओं पर खर्च होगा। व्यक्तिगत मामलों में गलतफहमी को जन्म देने वाली कोई बात हो सकती है। परिवार के साथ पार्टी में जा सकते हैं। कोई नया प्रस्ताव यदि आज मिलता है।

मिथुन (क,की,कू,घ,ङ, छ, के,को, ह) : कार्यों को मन लगाकर पूरा करेंगे। आपकी बढ़ते प्रभाव से कुछ लोगों को परेशानी हो सकती है। आज की गई मेहनत का पूरा फल नहीं मिलेगा। व्यक्तिगत मामलों को सावधानी से हल करें।

कर्क (ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो) : किसी योजना का क्रियान्वयन हो जाएगा। अधूरे काम भी किसी न किसी सहयोग से आज पूरे हो जाएंगे। धैर्यपूर्वक निर्णय लेने पड़ेंगे। भाग-दौड़ बनी रहेगी, परंतु यात्रा करना आज ठीक नहीं रहेगा।

सिंह (मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे) : परिवार के बड़े सदस्यों की आज्ञा मान कर चलेंगे तो फायदे में रहेंगे। लाभ के एक से अधिक अवसर सामने होंगे। चाहा गया सहयोग नहीं मिलने से काम खुद ही पूरे करने पड़ेंगे। बड़े भाई से लाभ होगा।

कन्या (टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो) : आज घर और बाहर दोनों जगह आपके काम की सराहना होगी। काम के घंटे बढ़ जाएंगे अतः पिछले छूटे कामों को पहले पूरा कर लें। अधिकारी वर्ग प्रसन्न रहेगा। विद्यार्थी वर्ग लाभ में रहेगा।

तुला (रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते) : आज काम बनने में थोड़ी असुविधा हो सकती है। विरोधियों से सावधान रहना होगा। प्रोपर्टी के खरीदने या बेचने से संबंधी बात हो सकती है। पुराने मित्रों से मुलाकात होने की संभावना है।

वृश्चिक (तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू) : व्यावसायिक कार्यों का विस्तार करने के लिए अतिरिक्त परिश्रम करना पड़ेगा। सहयोग मिल जाने से थोड़ी आसानी हो जाएगी। व्यक्तिगत संबंधों में सौहार्द्र की भावना बढ़ने से मन प्रसन्न होगा।

धनु (ये, यो, भ, भी, भू, धा, फा, ढा, भे) : आज का दिन महत्वपूर्ण काम करने के लिए नहीं है। निजी समस्याओं को अपने ऊपर हावी न होने दें। परिवार के साथ समय बिताना आवश्यक है, चाहें तो कहीं आउटिंग के लिए जा सकते हैं।

मकर (भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, ग, गी) : आज स्वास्थ्य का ध्यान रखना होगा, परंतु काम फिर भी आसानी से बन जाएंगे। लाभ की कोई नई योजना बनाकर उस पर अमल करेंगे। मित्र विशेष सहयोगी बनकर सामने आएंगे।

कुंभ (गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा) : आज घर की बुजुर्ग स्त्री की सलाह काम आएगी, महत्वपूर्ण निर्णय लेते समय उसको नजरअंदाज ना करें। यात्रा करना हित में नहीं रहेगा, बहुत जरूरी हो तो पहले मंदिर जाएं फिर यात्रा करें।

मीन (दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची) : आज योग्यता दिखाने का उचित अवसर मिलेगा। लाभ देने वाली छोटी यात्रा की संभावना है। बडी प्रतिस्पर्धा में भी विजयी होंगे। वाहन धीमी गति में चलाएं, अन्य कामों में भी जल्दबाजी ना करें।

भ्रष्टाचार की आंधी में ईमानदारी के दीपक जलाने होंगे

विचार बिन्दु

भ्रष्टाचार और काले घन के खिलाफ जो माहौल बना निश्चित ही एक शुभ संकेत है देश को शुद्ध सांसें देने का। क्योंकि हम गिरते गिरते इतने गिर गये कि भ्रष्टाचार ही शिष्टाचार बन गया। राष्ट्रीय चरित्र निर्माण, नैतिकता, पारदर्शिता की कहीं कोई आवाज उठती भी थी तो ऐसा लगने लगता है कि यह विजातीय तत्व है जो हमारे जीवन में घुस रहा है। लेकिन देर आये दुरस्त आये कि भांति अब कुछ संभावनाएं मोदी ने जगाई है, इस जागृति से कुछ सबक भी मिले हैं और कुछ सबब भी है।

ललित गर्ग

अन्तर्राष्ट्रीय भ्रष्टाचार निरोध दिवस प्रतिवर्ष 9 दिसम्बर को पूरे विश्व में मनाया जाता है। 31 अक्टूबर 2003 को संयुक्त राष्ट्र ने एक भ्रष्टाचार-निरोधी समझौता पारित किया था और तभी से यह दिवस मनाया जाता है। पूरे विश्व में एक समृद्ध, मूल्याधारित समाज को बनाए रखने के लिए भ्रष्टाचार को खत्म करना इस दिन का मुख्य उद्देश्य है। इस दिन सम्मेलन, भाषण, रैलियां, प्रदर्शनियां, नाटक आदि कई गतिविधियां संयुक्त राष्ट्र और संबंधित सदस्य राज्यों के द्वारा भ्रष्टाचार से लड़ने की भावना के साथ आयोजित की जाती हैं। तेजी से पांव पसार रहा भ्रष्टाचार किसी एक समाज, प्रांत या देश की समस्या नहीं है। इसने हर व्यक्ति एवं व्यवस्था को दूषित किया है, इसे रोकने के लिये प्रतीक्षा नहीं प्रक्रिया आवश्यक है। सत्ता एवं स्वार्थ ने भ्रष्टाचारमुक्ति को पूर्णता देने में नैतिक कायरता दिखाई है। इसकी वजह से लोगों में विश्वास इस कदर उठ गया कि चैराहे पर खड़े आदमी को सही रास्ता दिखाने वाला भी झूठा-सा, भ्रष्ट एवं अनैतिक लगता है। आंखें उस चेहरे पर सचाई की साक्षी ढूंढती हैं। भ्रष्टाचार एक गंभीर अपराध है जो सभी समाजों में नैतिक, सामाजिक और आर्थिक विकास को कमजोर करता है। आज के समय में भ्रष्टाचार से कोई देश, क्षेत्र या समुदाय बचा नहीं है। यह दुनिया के सभी हिस्सों में फैल गया है चाहे वो राजनीतिक, सामाजिक या आर्थिक हो और साथ ही लोकतांत्रिक संस्थानों को भी कमजोर करता है, सरकारी अस्थिरता में योगदान देता है और आर्थिक विकास को भी धीमा करता है, तभी इस विकराल होती समस्या पर नियंत्रण पाने के लिये संयुक्त राष्ट्र ने भ्रष्टाचार निरोध दिवस को आयोजित करने का निश्चय किया।

प्रश्न है कि आखिर भ्रष्टाचार है क्या? आसान शब्दों में कहें तो भ्रष्टाचार उन लोगों के द्वारा जिनमें पॉवर होती है एक प्रकार का बेईमान या धोखेबाज आचरण को दर्शाता है। यह समाज की बनावट को भी खराब करता है। यह लोगों से उनकी आजादी, स्वास्थ्य, धन और कभी-कभी उनके जीवन को ही खत्म कर देता है। किसी ने सही कहा है कि भ्रष्टाचार एक मीठा जहर है।' विश्व भर में हर साल खरबों डॉलर की रकम या तो रिश्वतखोरी या फिर भ्रष्ट तरीकों की भेंट चढ़ जाती है जिससे कानून के शासन की अहमियत तो कम होती ही है, साथ ही मादक पदार्थों, हथियारों और लोगों की अवैध तस्करी, हिंसा एवं आतंकवाद को भी बढ़ावा मिलता है। हर साल भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ने वाली खरबों डॉलर की ये रकम वैश्विक घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के लगभग 5 फीसदी के बराबर है। इसके कारण राष्ट्रों की समृद्धि से ज्यादा साख खतरे में पड़ी है। आज हमारे कंधे भी इसीलिये झुक गये कि भ्रष्टाचार का बोझ सहना हमारी आदत हो गयी है। भ्रष्टाचार के नशीले अहसास में रास्ते गलत पकड़ लिये और इसीलिये भ्रष्टाचार की भीड़ में हमारे साथ गलत साथी, संस्कार, सलाह, सहयोग जुड़ते गये। जब सभी कुछ गलत हो तो भला उसका जोड़, बाकी, गुणा या भाग का फल सही कैसे आएगा? तभी भ्रष्टाचार से एक बेहतर दुनिया बनाने के प्रयासों के रास्ते में भारी रुकावट पैदा हो रही है। भ्रष्टाचार निरोध दिवस मनाते हुए दुनिया के कतिपय राष्ट्रों ने ईमानदार शासन व्यवस्था देने का उदाहरण प्रस्तुत किया है, जिनमें भारत में नरेन्द्र मोदी सरकार ने देश में एक नयी चुस्त-दुरूस्त, पारदर्शी, जवाबदेह और भ्रष्टाचार मुक्त कार्यसंस्कृति को जन्म दिया है, इस तथ्य से चाहकर भी मुंह नहीं मोड़ा जा सकता। न खाऊंगा का प्रधानमंत्री का दावा अपनी जगह कायम है लेकिन न खाने दूंगा वाली हुंकार अभी अपना असर नहीं दिखा पा रही है। सरकार को भ्रष्टाचार को समाप्त करने के लिये सख्ती के साथ-साथ व्यावहारिक कदम उठाने की अपेक्षा है। पिछले सत्तर वर्षों की भ्रष्ट कार्यसंस्कृति ने देश के विकास को अवरूद्ध किया। आजादी के बाद से अब तक देश में हुये भ्रष्टाचार और घोटालों का हिसाब जोड़ा जाए तो देश में विकास की गंगा बहायी जा सकती थी। दूषित राजनीतिक व्यवस्था, कमजोर विपक्ष और क्षेत्रीय दलों की बढ़ती ताकत ने पूरी व्यवस्था को भ्रष्टाचार के अंधेरे कुएं में धकेलने का काम किया। देखना यह है कि क्या वास्तव में हमारा देश भ्रष्टाचारमुक्त होगा? यह प्रश्न आज देश के हर नागरिक के दिमाग में बार-बार उठ रहा है कि किस प्रकार देश की रगों में बह रहे भ्रष्टाचार के दूषित रक्त से मुक्ति मिलेगी। वर्तमान सरकार की नीति और नियत दोनों देश को भ्रष्टाचारमुक्त बनाने की है, लेकिन उसका असर दिखना चाहिए। विभिन्न राजनीतिक दल जनता के सेवक बनने की बजाय स्वामी बन बैठे। मोदी ने इस सड़ी-गली और भ्रष्ट व्यवस्था को बदलने का बीड़ा उठाया और उसके परिणाम भी देखने को मिले। प्रधानमंत्री का स्वयं को प्रधानसेवक कहना विपक्ष के लिये जुमलेबाजी का विषय हो सकता है। लोकतंत्र में लोक विश्वास, लोक सम्मान जब ऊर्ज़ा से भर जाए तो लोकतंत्र की सच्ची संकल्पना आकार लेने लगती है। मोदी ने लोकतंत्र में लोक को स्वामी होने का एहसास बखूबी कराया है। लेकिन प्रश्न यह है कि यही लोक अब तक भ्रष्टाचार के खिलाफ जागृत क्यों नहीं हो रहा है? जन-जागृति के बिना भ्रष्टाचार को समाप्त नहीं किया जा सकता।

यह एक बड़ा यथार्थ है कि सरकार की काम करने की नीयत में कोई खोट नहीं है। देखा जाए तो नीति, नीयत और निर्णय यह तीन गुण किसी भी सफल लोकतंत्र व राष्ट्र के उत्तरोत्तर विकास एवं प्रगति के लिये आवश्यक होते हैं। मोदी सरकार की नीतियों में जन कल्याण, जन सम्मान, राष्ट्र गौरव की नीयत और निर्णय स्पष्ट दिखाई देते हैं। देश के सम्मान, समृद्धि और सुरक्षा के संकल्प को हकीकत में बदलने का काम मोदी सरकार कर रही है। लेकिन एक प्रश्न यहां यह भी खड़ा है कि भाजपा की प्रांत सरकारें एवं भाजपा के नेता भ्रष्टाचारमुक्ति के लिये उदाहरण क्यों नहीं बन पा रहे हैं? देखा जाए तो भ्रष्टाचार किसी भी राज्य को कई स्तर पर कमजोर करता है। इसके कारण कामकाज में देर होती है। इसका असर उत्पादन से लेकर अन्य परिणामों पर पड़ता है। योग्य लोग नजरअंदाज कर दिये जाते हैं और अयोग्य लोगों के हाथों में कमान आ जाती है। भ्रष्टाचार के कारण ही देश में प्राकृतिक संपदा एवं जनधन की लूट होने के आरोप भी लगते रहते हैं। इन त्रासद स्थितियों से सरकार के प्रति नकारात्मक सोच तो बनती ही है, साथ ही आम लोग मानसिक तौर पर कुंठित एवं निराश भी होने लगते हैं।

भ्रष्टाचार और काले घन के खिलाफ जो माहौल बना निश्चित ही एक शुभ संकेत है देश को शुद्ध सांसें देने का। क्योंकि हम गिरते गिरते इतने गिर गये कि भ्रष्टाचार ही शिष्टाचार बन गया। राष्ट्रीय चरित्र निर्माण, नैतिकता, पारदर्शिता की कहीं कोई आवाज उठती भी थी तो ऐसा लगने लगता है कि यह विजातीय तत्व है जो हमारे जीवन में घुस रहा है। लेकिन देर आये दुरस्त आये कि भांति अब कुछ संभावनाएं मोदी ने जगाई है, इस जागृति से कुछ सबक भी मिले हैं और कुछ सबब भी है। इसका पहला सबब तो यही है कि भ्रष्टाचार की लडाई चोले से नहीं, आत्मा से ही लड़ी जा सकती है। दूसरा सबब है कि कोई गांधी या कोई गांधी बन कर ही इस लड़ाई को वास्तविक मंजिल दे सकता है। एक सबब यह भी है कि कांग्रेस एवं अन्य विपक्षी दलों से भ्रष्टाचारमुक्ति की आशा करना, अंधेरे में सूई तलाशना है। भ्रष्टाचार की चरम पराकाष्ठा के बीच मोदी रूपी एक छोटी-सी किरण जगी है, जो सूर्य का प्रकाश भी देती है और चन्द्रमा की ठण्डक भी। और सबसे बड़ी बात, वह यह कहती है कि 'अभी सभी कुछ समाप्त नहीं हुआ।

नक्कटैया मेले में झांकियों के जरिए होता है सामाजिक कुरीतियों का प्रदर्शन

नक्कटैया मेला विजयादशमी के एक सप्ताह बाद कार्तिक कृष्ण चतुर्थी की रात को लगता है। इस बार नक्कटैया मेला 17 अक्टूबर को आयोजित किया जाएगा। इस मेले में रामचरित मानस की घटनाओं का क्रमवार प्रदर्शन होता है। करवा-चौथ की रात में बनारस शहर में विश्व प्रसिद्ध नक्कटैया मेला लगता है। नक्कटैया मेला में रामचरित मानस में वर्णित घटनाओं का प्रदर्शन होता है और तमाम तरह की सामाजिक बुराइयों की झांकी निकलती है तो आइए हम आपको बनारस के नक्कटैया मेले के बारे में कुछ खास बातें बताते हैं।

नक्कटैया मेला विजयादशमी के एक सप्ताह बाद कार्तिक कृष्ण चतुर्थी की रात को लगता है। इस बार नक्कटैया मेला 17 अक्टूबर को आयोजित किया जाएगा। इस मेले में रामचरित मानस की घटनाओं का क्रमवार प्रदर्शन होता है। सबसे पहले लक्ष्मण अमर्यादित सुपर्णखा की नाक काटते हैं। उसके बाद सुपर्णखा अपने भाइयों खर-दूषण के साथ सैन्य शक्तियों का प्रदर्शन होता है। राम के साथ इनके युद्ध का प्रदर्शन ही इस मेले का मुख्य आकर्षण होता है। यह युद्ध यात्रा में होता है जो पिशाच मोचन से लेकर संकटमोचन तक चलता है।

नक्कटैया मेले में लाखों की भीड़ होने के कारण इसे लक्खी मेला भी कहा जाता है। मेले में दिखाई जाने वाली लीला न केवल भारत में बल्कि विदेशों में भी मशहूर है। राम के खिलाफ सुपर्णखा का सैन्य प्रदर्शन बहुत से भयावह और चमत्कृत दृश्यों के जरिए भी होता है। इसमें देश की विभिन्न सामाजिक कुरीतियों और समकालीन समस्याओं को लोगों द्वारा प्रदर्शन किया जाता है। साथ ही सामाजिक कुरीतियों जैसे शराबी, गौनहारिन और राक्षसों का भी प्रदर्शन होता है। यही नहीं विभिन्न प्रकार के देवी-देवताओं की भी झांकी निकलती है जिसमें दुर्गा जी और काली मां के मुखौटे और देवताओं के वस्त्र और मुकुट पहने हुए लोग भी रहते हैं।

बनारस के पारंपरिक लक्खी मेले में शामिल चेतगंज की नक्कटैया को विशाल रूप मिला था अंग्रेजों के कारण। बनारस के बाबा फतेह राम अंग्रेजों के दमन पर आधारित लाग विमान को इस नक्कटैया मेले में शामिल करते थे। तत्कालीन नक्कटैया मेले की खासियत यह थी कि उस समय के अंग्रेज कलेक्टर ही नक्कटैया के जुलूस का उद्घाटन करते थे। पुरानी परम्परा का निर्वाह करते हुए आज भी कलेक्टर ही आधीरात को जुलूस का उद्घाटन करते है।

महान क्रांतिकारी चंद्रशेखर आजाद ने भी नक्कैटया मेले में क्रांतिकारियों के लिए वार्षिक सम्मेलन का स्थान बनाया था। इन स्वतंत्रता सेनानियों की खास बात यह है कि चंद्रशेखर आजाद और उनके सभी क्रांतिकारी साथी मेला में शामिल होकर नक्कटैया का हिस्सा बनते थे। आजादी के समय चेतगंज क्षेत्र में स्थित सरस्वती वाचनालय सभी क्रांतिकारियों के मिलने की जगह हुआ करती थी। इस बार नक्कटैया बहुत खास है।

इस नक्कटैया में प्लास्टिक से आजादी का नारा बुलंद किया जाएगा। इसमें ऐसी झांकियों को शामिल किया जाएगा जिसमें प्लास्टिक के विकल्प के साथ ही उससे होने वाले नुकसानों के बारे में भी दर्शाया जाएगा। साथ कश्मीर विधानसभा भवन पर तिरंगा फहराते हुए दिखाया जाएगा जो धारा 370 हटाने का सूचक होगा। एयरफोर्स में हाल में गठित महिला फाइटर विंग की झांकी का भी नक्कटैया के मेले में प्रदर्शन होगा जो नारी सशक्तिकरण की मिसाल पेश करेगा। मिर्ज़ापुर, प्रयागराज, आजमगढ़, ज्ञानपुर, जौनपुर, प्रतापगढ़ और फूलपुर जिलों के सौ से अधिक लाग विमान इस साल नक्कटैया मेले में सम्मिलित होंगे।

18 अक्टूबर की महत्त्वपूर्ण घटनाएँ

1898	अमेरिका ने स्पेन से प्यूर्टो रिको का अपने कब्जे में लिया।
1922	ब्रिटिश ब्रॉडकास्टिंग कॉरपोरेशन की स्थापना।
1944	द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान नाजी जर्मनी से चेकोस्लोवाकिया की स्वतंत्रता के लिये सोवियत संघ ने लड़ाई शुरु की।
1972	पहले बहुद्देशीय हेलिकॉप्टर एस ए 315 का बैंगलोर में परीक्षण।
1980	पहली हिमालय कार रैली को बम्बई (मुंबई) के ब्रेबोर्न स्टेडियम से हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया।
1985	सम्पूर्ण विश्व में व्यापक विरोध के बावजूद दक्षिण अफ़्रीकी सरकार द्वारा अश्वेत कवि बेंजामिन मोलोइस को फ़ाँसी।
1991	दक्षिण पश्चिम एशिया और दक्षिणी पूर्वी यूरोप के मुहाने पर स्थित अजरबैजान ने तत्कालीन सोवियत संघ से स्वतंत्र होने की घोषणा की।
1995	कोलंबिया के कार्टाजेना में गुट निरपेक्ष देशों का ग्यारहवां शिखर सम्मेलन प्रारम्भ।
1998	भारत और पाकिस्तान आणविक ख़तरे रोकने के लिए सहमत।
2000	श्रीलंका में पहली बार विपक्षी सदस्य अनुरा भंडारनायके को संसद अध्यक्ष बनाने की सहमति।
2005	पाकिस्तान के राष्ट्रपति परवेज मुशर्रफ़ ने नियंत्रण रेखा को भूकम्प राहत कार्य के लिए खोलने का सुझाव दिया।
2007	आठ वर्ष के बाद बेनजीर भुट्टो अपने वतन पाकिस्तान लौटीं। बेनजीर भुट्टो की मोटर कार रैली में हुये आत्मघाती हमले में 139 लोगों की मौत हुई और 450 अन्य घायल हुए। इस आत्मघाती हमले में भुट्टो बाल बाल बचीं।

झाड़ू पर मचा बवाल !

विचार बिन्दु

ओम प्रकाश मीना

मौहल्ले की महिला मण्डली ने मिडिया की भांती कवरेज करते हुए मेरे झाड़ू निकालने को ब्रेकिंग न्यूज बना डाली। घरो मे उदाहरण दिया जाने लगा, तो मुझे भी विश्वास हो गया कि वाकई झाड़ू मे दिव्य शक्ति है।

झाड़ू एक बार फिर चर्चा मे है दीपावली की साफ -सफाई को लेकर इसकी महत्ता एकाएक बढ़ गयी। वही उत्तरप्रदेश ,पंजाब आदि राज्यो के विधान सभा चुनावों के मध्यनजर नेताओ ने भी एक बार फिर मतदाताओ को अपनी सादगी का प्रमाण देने के लिए हाथ मे झाड़ू पकड लिया।सामान्य तौर पर देखा जाए तो झाड़ू ' एक घरेलू सामान है जो सफ़ाई के लिये काम मे लिया जाता है। यह तरह-तरह की सामग्री से बनाया जाता है। स्थानीय स्तर पर घास, पत्तियाँ व पौधे ही झाड़ू बनाने के काम आते है। लेकिन परिवर्तन के इस दौर में आजकल कृत्रिम (संश्लेषित) सींकों और फाइबर से भी झाड़ू बनाये जाने लगे हैं झाड़ू भारतीय राजनीति को काटते हुऐ आस्था तक ले जाने का काम भी करता है पौराणिक ग्रंथों मे झाड़ू के महत्व को स्वीकर करते हुए माना गया कि अंधेरा होने के बाद घर में झाड़ू लगाना, उलटा रखना व इस पर पैर रखना अपशकुन है,पौराणिक मान्यता अपना स्थान रखती है लेकिन हम बात करे झाड़ू की तो मानना पडेगा कि झाड़ू वाकई परिवर्तन का प्रतीक है सन 2013 के बाद तो झाड़ू ने अपना चमत्कार दिखाना ही शुरु कर दिया जब देश की राजधानी पर झाड़ू को अपना चुनाव चिन्ह बनाने वाला राजनीतिक दल ने सत्ता पर कब्जा किया। चमत्कार तब और बढा़ जब देश के मुखिया ने भारी भरकम मिडिया के सामने झाड़ू लगा कर देश मे स्वच्छता अभियान की शुरुआत की। झाड़ू के दिन फिरने लगे । राजनेताओ से लेकर नौकरशाह के हाथों मे झाड़ू ही झाड़ू नजर आने लगा।टी वी चैनलो से लेकर समाचार पत्रों मे इनसे जुडी खबर ही आने लगी। गली मौहल्लो मे भी छुटभैया नेताओ मे झाड़ू लगाते हुए की फोटो सोशल मिडिया पर अपलोड करने की होड मच गयी। इसे झाड़ू का ही चमत्कार कहे या संयोग कि दिल्ली मे रह रहे दोनो सरकार के मुखियाओं का झाड़ू से सम्बन्ध है एक का चुनाव चिन्ह है तो दूसरा स्वच्छता अभियान को सफल बनाने के लिए इसका उपयोग करता रहता है झाड़ू के सहारे से दोनों की मिली सफलता को देखकर पिछले दिनों विपक्षी दल के एक नेता ने भी झाड़ू लगा कर समाचार पत्रो मे सुर्खिया बंटोरी । इन सबको देखकर मुझे लगा कि झाड़ू सफलता प्राप्ति का साधन है।इसलिए एक दिन अलसुबह यह सोचकर कि जब इस झाड़ू का सहारा लेकर प्रधानमंत्री व मुख्यमंत्री बना जा सकता है तो क्या मैं भी जन प्रतिनिधि बन सकता हूँ ? मन मे सकारात्मक विचार लेकर झाड़ू लगाना शुरु कर दिया। मन प्रसन्न था कि इस झाड़ू के सहारे जन प्रतिनिधि बनने का स्वप्न साकार हो जायेगा। स्वप्न साकार होगा या नही यह तो भविष्य के गर्त मे है लेकिन श्री मती खुश हो गयी ओर मौहल्ले वालो को चर्चा का विषय जरूर मिल गया । मौहल्ले की महिला मण्डली ने मिडिया की भांती कवरेज करते हुए मेरे झाड़ू निकालने को ब्रेकिंग न्यूज बना डाली। घरो मे उदाहरण दिया जाने लगा, तो मुझे भी विश्वास हो गया कि वाकई झाड़ू मे दिव्य शक्ति है वास्तविकता मे झाड़ू लगाना स्वाभीमान और सादगी का प्रतीक है हमारे देश मे प्रतिदिन करोडो़ महिलाएं और सफाईकर्मी झाड़ू लगा कर स्वच्छ भारत अभियान मे योगदान दे रहे है।

अस्थमा अटैक के पहले के लक्षणों को जानें

अस्थमा अटैक से बचने के लिए जरूरी है कि रोगी को उसके पहले दिखायी और महसूस होने वाले संकेतों के बारे में पता हो? इव संकेतों के बारे में जानकारी आपको अस्थमा अटैक से बचाने में मददगार साबित हो सकती है। आइए जानें अस्थमा अटैक से पहले दिखने वाले लक्षणों के बारे में।

गले और ठोढ़ी में खुजली

अस्थमा की समस्या शुरु होने से पहले गले और ठोढ़ी में खुजली की समस्या हो सकती है। यह समस्या क्यों होती है इसके बारे में कोई जानकारी नहीं है। लेकिन ज्यादातर लोग इस लक्षण को नजरअंदाज कर देते हैं जो कि ठीक नहीं है।

मूड में बदलाव

अचानक से रोगी के मूड में बदलाव देखने को मिलता है। बोलते-बोलते चुप हो जाना, तनाव और चिंताग्रस्त हो जाना भी अस्थमा अटैक का संकेत हो सकता है। अगर आपको या आपके आसपास किसी अस्थमा रोगी में यह लक्षण दिखे तो इसे नजरअंदाज ना करें।

कफ

अस्थमा का मुख्य लक्षण है कफ की समस्या। जब यह समस्या पूरी रात आपको सताने लगे तो इसके पीछे कुछ खास वजह हो सकती है। हो सकता है कि यह साइनस या अन्य किसी वजह से हो लेकिन जब किसी अस्थमा रोगी को यह समस्या होती है तो इसे हल्के में ना लें।

सांसों में घरघराहट

अस्थमा रोगी को सांस लेने में समस्या होना सामान्य माना जाता है लेकिन जब सांस लेते वक्त घरघराहट की आवाज आने लगे तो इसे सामान्य ना समझें। यह गंभीर समस्या का संकेत हो सकता है।

सांस लेने में समस्या

अस्थमा अटैक होने से पहले रोगी को सांस लेने में समस्या महसूस होने लगती है क्योंकि सांस लेने वाली जगह के आसपास की मांसपेशियां कठोर हो जाती हैं और एयरवे लाइनिंग में सूजन आ जाती है। अत्यधिक म्यूकस बनने के कारण सांस नली ब्लॉक हो जाती है।

पॉश्चर बदलना

ठीक तरह से सांस लेने के प्रयास में रोगी आगे की तरफ झुकने लगाता है जिससे वो कूबड़नुमा आकार में आ जाता है। लेकिन सांस लेने में कठिनाई होने पर इस स्थिति में आना समस्या को और बढ़ा सकता है।

सीने में जलन

जब अस्थमा की समस्या बढ़ने वाली होती है तो रोगी को सीने में जलन या कुछ अन्य तरह की समस्या भी हो सकती है। अस्थमा ग्रस्त बच्चों में जब यह समस्या होती तो वो समझ नहीं पाते कि उन्हें क्या हो रहा है। ऐसे में उनके माता-पिता को ज्यादा सर्तक रहना चाहिए।

होठों और अंगुलियों में नीलापन

जब शरीर को पर्याप्त मात्रा में ऑक्सीजन नहीं मिल पाता है तो होठों और अंगुलियों और होठों पर नीलापन दिखायी देने लगता है। इस स्थिति को केयानोसिस कहते हैं। यह स्थिति इशारा करती है कि रोगी को तुरंत चिकित्सक के पास ले जाया जाए।

सेहत का सतरंगी खजाना

अपने बोरिंग खाने में जरा रंग भरिए। गहरे रंग के फलों और सब्जियों, जैसे खुबानी, गाजर और लाल व पीली मिर्च और पालक जैसी हरी पत्तेदार सब्जियों, अस्थमा के मरीजों के लिए लाभप्रद बीटा-कैरोटीन नाम का एक खास तत्व पाया जाता है। जिस सब्जी या फल का रंग जितना गहरा होगा उसमें एंटी-ऑक्सीडेंट्स की मात्रा उतनी अधिक होगी।

आपके लिए नहीं है विटामिन-ई

यूं तो विटामिन-ई काफी गुणों से भरपूर होता है, लेकिन अस्थमा मरीजों को इससे जरा दूर ही रहना चाहिए। यह खाना पकाने के लगभग सभी तेलों में मौजूद होता है, लेकिन इसका इस्तेमाल जरा सीमित मात्रा में ही करना चाहिए। सूरजमुखी के बीज, केल (एक प्रकार की गोभी), बादाम और अधिक साबुत अनाजों में विटामिन- ई की मात्रा कम होती है। इन आहारों को अपने भोजन में अवश्य शामिल करें।

विटामिन बी,बना है आपके लिए

ऐसा भोजन जिसमें विटामिन-बी मौजूद हो, अस्थमा के मरीजों के भोजन का अहम हिस्सा होना चाहिए। हरी पत्तेदार सब्जियां और दालें, अस्थमा मरीजों को तनाव के जरिए होने वाले अटैक से बचाने में सहायक होती हैं। इस बात के भी साक्ष्य मिले हैं कि विटामिन बी6 और नियासिन (विटामिन बी3, निकोटिन और विटामिन पीपी) की कमी से भी अस्थमा का खतरा बढ़ जाता है।

प्याज- खांसी पर वार,गले से प्यार

प्याज चाहे लाल हो या हरा, यह अस्थमा मरीजों के लिए किसी वरदान से कम नहीं। प्याज में मौजूद सल्फर तत्व अस्थमा के मरीजों को जलन से राहत दिलाते हैं। यह बात साबित हो चुकी है कि प्याज का सेवन सांस संबंधी तकलीफों से भी राहत दिलाने वाला होता है।

ओमेगा-3 फैटी एसिड- अस्थमा में दिलाए राहत

ओमेगा-3 फैटी एसिड फेफड़ों में होने वाली जलन और उत्तकों को होने वाले नुकसान से बचाने में मदद करता है। यह जानना बहुत जरूरी है लगातार जलन और खांसी से उत्तकों को काफी नुकसान पहुंचता है, जिसके चलते नियमित अस्थमा अटैक आते रहते हैं। यह मुख्य रूप से सलमन, मैक्रेल और ऐसी मछलियों में पाया जाता है जिनमें ऑयल की मात्रा अधिक होती है।

मसालों को ना, सेहत को हां

मसाले गर्म होते हैं और अस्थमा मरीजों को इनसे दूर ही रहना चाहिए। मसाले खाने से, मुंह, गले और फेफड़ों की कोशिकाएं उत्तेजित हो जाती हैं, परिणामस्वरूप उनमें से साल्विया निकलने लगता है। साल्विया से बलगम पतला हो जाता है। तो, मसालेदार भोजन से दूर ही रहना चाहिए।

दुग्ध उत्पाद, सेहत के साथ स्वाद

वसायुक्त दूध, मक्खन और अन्य दुग्ध उत्पाद अस्थमा होने से रोकते हैं। वे बच्चे जो वसायुक्त दुग्ध उत्पादों का सेवन करते हैं उन्हें सांस में घरघराहट संबंधी तकलीफें भी होने की आशंका कम होती है।

कॉफी- मदद करती है काफी

अस्थमा अटैक होने पर कॉफी का सेवन बहुत मदद करता है। यह श्वसन प्रक्रिया को मदद पहुंचाता है। हालांकि कई डॉक्टर यह भी कहते हैं कि अगर आपके अटैक तनाव के कारण हो रहे हैं तो आपको कैफीन की अधिक मात्रा का सेवन नहीं करना चाहिए।

कैसा हो अस्थमा के मरीजों का आहार

अस्थमा को नियंत्रिण में रखने में भोजन की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। अपने आहार में समुचित बदलाव कर इस बीमारी के असर को कम किया जा सकता है। ऐसे खाद्य पदार्थों की लिस्ट बहुत लंबी है जिनसे अस्थमा के मरीजों को दूर रहने की सलाह दी जाती है। ऐसी कई चीजें हैं जिनसे एलर्जी और अस्थमा अटैक पड़ने का खतरा होता है। तो, आइए जानते हैं कि आपकी रसोई में ऐसे कौन से खाद्य पदार्थ हैं जो आपको अस्थमा से लड़ने में मददगार हो सकते हैं।

घुटने का दर्द धीमी न कर दे चाल

युवाओं में घुटनों के दर्द के मामले तेजी से बढ़ रहे हैं। सही जांच व उपचार में देरी का नतीजा होता है कि हल्का मांसपेशीय दर्द बढ़ कर घुटने, जांघ व कूल्हे की मूवमेंट पर असर डालने लगता है। तीस की उम्र के करीब की एक स्कूल टीचर हैं। घर और काम के बीच संतुलन बनाने की कोशिश करती हुई वह बेहद व्यस्त रहती हैं। वह जानती हैं कि सेहतमंद और फिट रहना उनके लिए कितना जरूरी है, बावजूद इसके व्यायाम के लिए समय निकालना उनके लिए मुश्किल होता है। व्यायाम की भरपाई के तौर पर उन्होंने कुछ समय पहले खुद को अधिक सक्रिय बनाए रखने का फैसला किया, जिसके चलते वह लिफ्ट की जगह सीढ़ियों का इस्तेमाल करने लगीं और रिक्शा की जगह पैदल घर व बाजार जाने लगीं। वह तीसरी मंजिल पर रहती हैं। शुरुआत में सीढ़ियां चढ़ने में थकान होती थी, पर आदत हो जाने के बाद अब समस्या नहीं होती।

समय रहते दें ध्यान

लेकिन एक माह बाद ही उन्हें सीढ़ियां उतरते हुए सीधे पैर के घुटने में सामने के हिस्से में कुछ परेशानी महसूस होने लगी, पर उन्होंने ज्यादा ध्यान नहीं दिया। करीब एक सप्ताह गुजरने के बाद यह परेशानी हल्के दर्द में बदल गई। धीरे-धीरे सीढ़ियां चढ़ते हुए भी पैरों में दर्द होने लगा। डॉक्टर ने इसे घुटने के सामने वाले हिस्से का दर्द बताया, जिसे चिकित्सकीय भाषा में पेटेलोफीमोरल पेन सिंड्रोम/ एंटीरियर नी पेन या फिर कॉन्ड्रोमेलेसिया पटेला कहते हैं। डॉक्टर ने उन्हें कुछ दर्द निवारक दवाएं लेने को कहा है। साथ ही सीढ़ियां चढ़ने-उतरने से बचने की सलाह दी है। दर्द दोबारा न हो, इसलिए मांसपेशियों को मजबूत बनाने के लिए फिजियोथेरेपिस्ट के पास जाने की सलाह भी दी है।

दर्द का कारण

जांघ की हड्डी को फीमर, जोड़ की मुख्य बड़ी हड्डी को टिबिया और नी कैप को पटेला कहते हैं। जांघ की हड्डी और नी कैप से मिल कर जो जोड़ बनता है, उसे पेटेलोफीमोरल जॉइंट कहते हैं। लगभग 20 फीसदी मरीज पेटेलोफीमोरल पेन सिंड्रोम (पीएफपीएस) के शिकार होते हैं। पुरुषों की तुलना में महिलाओं में यह समस्या अधिक होती है। यह दर्द नी कैप और जांघ की हड्डी के बीच अधिक घर्षण होने के कारण होता है। इस वजह से पंजे की एड़ियों का पिछला हिस्सा, टखना, कूल्हे का ऊपरी हिस्सा, पेड़ू और पैरों के मध्य में दर्द बढ़ जाता है। नी कैप के जांघ की हड्डी से टकराने के कई कारण होते हैं। पीएफपीएस के अधिक होने का मुख्य कारण पैर की मांसपेशियों का प्रभावित होना है। ये मांसपेशियां एक तरह से हमारे शरीर का इंजन रूम होती हैं, जिनकी सक्रियता के कारण ही हमारी सक्रियता बनी रहती है। चलने से लेकर दौड़ने जैसी हर गतिविधि इन्हीं मांसपेशियों के कारण होती है। जब ये मांसपेशियां ढंग से काम नहीं करतीं तो घुटनों पर दबाव पड़ने लगता है। जांघ के बाहरी और सामने वाले हिस्से की मांसपेशियों पर काफी वजन पड़ता है, जिससे कई बार ये मांसपेशियां चोटिल हो जाती हैं व उनमें खिंचाव आ जाता है। उनका लचीलापन भी कम होने लगता है। मांसपेशियों में अकड़न बढ़ने से दर्द बढ़ने लगता है और मांसपेशियों की कार्यकुशलता कम होने लगती है। घुटने के जोड़ में दर्द भी होता है। आमतौर पर जांघ के भीतरी हिस्से की मांसपेशियों की तुलना में बाहरी मांसपेशियां अधिक कड़ी हो जाती हैं। इस असंतुलन के कारण नी कैप बाहर की ओर उठने लगती है और चलते समय जांघ वाली हड्डी से टकराती है। इसी वजह से नी कैप और जांघ की हड्डी के बीच सूजन और दर्द बढ़ जाता है।

उपचार का तरीका

फिजियोथेरेपिस्ट दर्द में आराम देने के लिए एक्यूप्रेशर या क्रॉस फ्रिक्शन मसाज तकनीक का इस्तेमाल करते हैं, जिसमें दर्द वाले हिस्से पर थोड़ा जोर देकर प्रेशर दिया जाता है। इसके अलावा मालिश से भी काफी आराम मिलता है। नियमित मालिश से मांसपेशियों की अकड़न वाले हिस्से में लचीलापन आ जाता है। कुछ आराम आने पर मांसपेशियों में मजबूती लाने के लिए स्ट्रेचिंग कराई जाती है। अपने डॉक्टर और फिजियोथेरेपिस्ट से आप घर में किए जाने वाले व्यायाम से राहत पा सकते हैं। आमतौर पर आराम आने में 12 से 16 सप्ताह का समय लग जाता है। घर में व्यायाम, डॉक्टर द्वारा की गयी सही जांच और फिजियोथेरेपिस्ट द्वारा अपनाई गयी विभिन्न तकनीक और मसाज कूल्हे और टखने के लचीलेपन को बढ़ा देते हैं। स्थायी निजात पाने के लिए नियमित व्यायाम करना ही सबसे बेहतर उपाय है। ऐसा करने पर घुटने के आसपास की सभी मांसपेशियां मजबूत हो जाती हैं।

ये व्यायाम देंगे मांसपेशियों के दर्द से आराम

इलियोटिबियल बैंड को कूल्हे, जांघ और घुटने के भीतरी हिस्से की मांसपेशियों का समूह समझा जा सकता है। इस हिस्से में होने वाले दर्द में राहत पाने के लिए फोम रोलिंग एक प्रभावी तरीका है। इसके लिए आपको एक ट्यूब की जरूरत होगी, जिसे फोम रोलर कहते हैं। यह आसानी से आपको किसी आसपास के स्पोर्ट्स स्टोर से मिल जाएगा। फोम रोलर पर इस तरह लेटें, जिससे आपके शरीर का पूरा वजन जांघ के बाहरी हिस्से पर रहे। जांघ के निचले हिस्से से शुरू कर रोलर को मूव करते हुए धीरे-धीरे ऊपरी हिस्से तक जाएं। हर पैर से ऐसा पांच मिनट तक करें। लगातार दर्द वाली जगह पर इस तरह रोल करना मांसपेशियों को आराम पहुंचाएगा।

जांघ की सामने वाली मांसपेशियां

फोम रोलर पर इस तरह लेटें कि रोलर आपके दोनों घुटनों यानी नी कैप से थोड़ा ऊपर रहे। धीरे-धीरे ऊपर से नीचे और नीचे से ऊपर तक लाएं। ऐसा 5 से 10 मिनट तक करें।

घुटने का लचीलापन बढ़ाएं

पेट के बल लेटें। पेट की मांसपेशियों को भीतर की ओर खींचें। एक घुटने को मोड़ते हुए पीछे की ओर ले जाएं और पैर से पंजे को पकड़ते हुए एड़ी को कूल्हे पर टिकाने का प्रयास करें। 30 से 60 सेकंड तक इस मुद्रा में रहें। फिर इसे दूसरे पैर से दोहराएं। ऐसा तीन बार करें।

फोम रोलिंग, बाहरी कूल्हे के लिए

फोम रोलर पर इस तरह लेटें कि ये आपकी कूल्हे की हड्डी के पास हो। थोड़ा आगे और पीछे धीरे-धीरे मूव करें। हर तरफ से पांच मिनट ऐसा करें। इससे कूल्हे व कमर दोनों की मांसपेशियां मजबूत बनेंगी। दर्द कम होगा।

‘पुष्पा 2’ का नया पोस्टर जारी

मुंबई। अभिनेता अल्लू अर्जुन की फिल्म ‘पुष्पा 2: द रूल’ के पोस्टर का इंतजार फैंस बेसब्री से कर रहे थे। अल्लू अर्जुन ने अपनी इस फिल्म का नया पोस्टर सोशल मीडिया पर साझा किया है। इस पोस्टर को प्रशंसक काफी पसंद कर रहे हैं। अल्लू अर्जुन अपने इस नए पोस्टर में स्वैग अवतार में नजर आ रहे हैं। फिल्म की रिलीज अब बहुत करीब है। इसे रिलीज होने में 100 से भी कम दिनों का समय बचा है। इस फिल्म का काउंटडाउन शुरू हो चुका है। फिल्म में अल्लू अर्जुन के साथ रश्मिका मंदाना एक बार फिर नजर आने वाली हैं। फिल्म के निर्देशन की कमान सुकुमार ने संभाली है। फिल्म के गानों को भी प्रशंसकों ने काफी पसंद किया है।

लाइफ Style

करीना

हर फिल्म का होता है अलग दर्शक वर्ग

एजेंसी ▶▶ मुंबई

‘द बकिंघम मर्डर्स’ की बॉक्स ऑफिस असफलता पर जारी चर्चा के बीच करीना कपूर खान ने भी फिल्मों की सफलता को लेकर अपनी राय साझा की है। इस दौरान उन्होंने बतौर कलाकार अपने अंदर आई परिपक्वता को लेकर भी बात की है।

करीना कपूर खान की नवीनतम फिल्म ‘द बकिंघम मर्डर्स’ इन दिनों काफी चर्चा में है। फिल्म इस साल की शुरुआत में सिनेमाघरों में रिलीज हुई थी। फिल्म बॉक्स ऑफिस पर सफल नहीं हो सकी थी, जिसे लेकर काफी चर्चा भी हो रही है। फिल्म की असफलता को लेकर तरह-तरह के कारण लोगों द्वारा गिनाए जा रहे हैं। इस बीच अब फिल्म की अभिनेत्री करीना कपूर खान ने भी इस पर बात की है। उन्होंने कहा कि हर फिल्म का अपना एक अलग दर्शक वर्ग होता है। करीना कपूर खान इन दिनों अपनी आगामी फिल्म ‘सिंघम अगेन’ की रिलीज की तैयारियों में व्यस्त हैं। हाल में ही अभिनेत्री ने कहा कि हर फिल्म का अपना एक दर्शक वर्ग होता है, जो उस फिल्म को देखने आते हैं। अभिनेत्री ने फिल्मों के चुनाव को लेकर उनमें आई परिपक्वता को लेकर कहा कि उनके कम सफल शुक्रवार अब अतीत का हिस्सा हो गए हैं। इसका श्रेय वो उनकी उम्र, समझ और परिपक्वता को देती हैं। हाल में ही उन्होंने मिस मालिनी के साथ एक इंटरव्यू के दौरान खुद को फिल्म को लेकर बुद्धिमान बताया है। उन्होंने कहा कि फिल्म को लेकर उनमें विकसित हुई बुद्धिमता का श्रेय वो अपने प्रतिष्ठित फिल्म परिवार और अपने जीवन में मौजूद प्रतिभाशाली और समझदार व्यक्तियों को देती हैं ये लोग उन्हें वास्तविकता से जोड़े रखने में मदद करते हैं।

हॉलीवुड मसाला

एरास टूर के अंतिम चरण पर निकलीं

लॉस एंजिल्स। टेलर स्विफ्ट आधिकारिक तौर पर अपने रिकॉर्ड-ब्रेकिंग एरास टूर के आखिरी चरण की शुरुआत करेंगी और इसके समाप्त होने के बाद वे अपनी पहली पुस्तक जारी करेंगी। टेलर स्विफ्ट अब एक लेखिका बनने जा रही हैं। अपनी नई किताब के बारे में प्रशंसकों को जानकारी देते हुए गायिका-गीतकार ने बताया कि वह दिसंबर 2024 में अपने एरास टूर के समाप्त होने के तुरंत बाद अपनी पहली आधिकारिक पुस्तक जारी करेंगी, जो उनके जीवन का सबसे शानदार दौरा है।

बॉय बैंड से अलग होकर बनाया एकल करियर

लॉस एंजिल्स। लियाम पायने शराब और आत्मघाती विचारों से अपनी लड़ाई के बारे में स्पष्टवादी थे। पिछले साल ही, उन्होंने साझा किया था कि उन्होंने तीन महीने से अधिक समय से शराब को हाथ नहीं लगाया है। लियाम ने कहा था, ‘अब मुझे 100 दिनों से ज्यादा हो गए हैं, मैंने शराब नहीं पी। मैं बहुत अच्छा महसूस कर रहा हूं। इस दौरान प्रशंसकों का समर्थन अविश्वसनीय रहा है।’ ब्यूनस आयर्स मीडिया के अनुसार, पूर्व ‘वन डायरेक्शन’ सदस्य और एकल कलाकार लियाम पायने की ब्यूनस आयर्स में एक होटल की तीसरी मंजिल से गिरने के बाद मौत हो गई है। इस खबर से म्यूजिक इंडस्ट्री में शोक की लहर है। एमटीवी की लैटिन अमेरिकी शाखा ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर एक पोस्ट में लिखा, ‘हमारा दिल टूट गया है।

मीनाक्षी ने गाया 39 साल पुराना गाना

नई दिल्ली। बॉलीवुड एक्ट्रेस मीनाक्षी शेषाद्रि भले ही बड़े पर्दे से दूर हैं, लेकिन सोशल मीडिया पर खूब एक्टिव रहती हैं और अपने लेटेस्ट वीडियो शेयर करती रहती हैं। इस बीच उन्होंने 39 साल पहले रिलीज हुई अपनी फिल्म मेरी जंग के एक गाने को रीक्रिएट किया और अपनी फ्रेंड और एक्ट्रेस मंजरी फडनिस के साथ इस गाने को एक नए तरीके से गाया है। एक तरफ जहां फैंस मीनाक्षी शेषाद्रि के इस इंस्पायरिंग वीडियो की तारीफ करते थक नहीं रहे हैं। वही, इस उम्र में भी उनकी खूबसूरती के भी फैंस कायल हो रहे हैं। वायरल वीडियो में मीनाक्षी शेषाद्रि ने अपनी फिल्म के 39 साल पूरे होने पर उसके गाने को रीक्रिएट किया। इस वीडियो में वो एक्ट्रेस मंजरी फडनिस के साथ जिंदगी हर कदम एक नई जंग है गाने को गाती हुई नजर आ रही हैं।

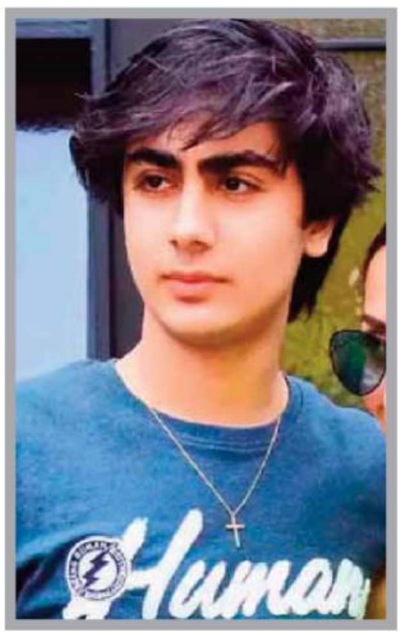

अरबाज के बेटे जल्द करेंगे बॉलीवुड में डेब्यू

मुंबई। बॉलीवुड अभिनेता अरबाज खान ने अपने बेटे अरहान खान के बॉलीवुड इंडस्ट्री में भविष्य के बारे में बात की। उन्होंने बताया कि अरहान अभी भी युवा है और अपने व्यक्तिगत विकास पर ध्यान दे रहे हैं। इसके साथ ही अरबाज ने इस बात से भी पर्दा उठाया कि कब उनके बेटे अहरान बॉलीवुड फिल्मों में नजर आ सकते हैं। अरबाज ने एक इंटरव्यू के दौरान कहा कि उनके बेटे अरहान को अभिनय में उतरने के लिए कम से कम एक या दो साल का समय और लगेगा। अरबाज ने कहा, ‘’मुझे यकीन है कि वह किसी और क्षेत्र में कदम रखने से पहले एक अभिनेता के रूप में उभरेगा।’ मलाइका अरोड़ा और उनके बेटे अरहान के बीच काफी अच्छी बॉन्डिंग है। मलाइका ने बेटे अरहान के साथ अपनी पेरेंटिंग को लेकर बताया था कि वह एक सख्त, लेकिन दयालु मां हैं।

टीवी मसाला

टॉप 10 में शामिल हुआ बिग बॉस, झनक की गिरी टीआरपी

नई दिल्ली। टीवी पर बहुत से सीरियल आते हैं। दर्शकों को कौन सा सीरियल पसंद आ रहा है, इसका पता चलता है हर हफ्ते आनेवाली टीआरपी रिपोर्ट से। हर हफ्ते की तरह इस हफ्ते की टीआरपी रिपोर्ट सामने आ गई है। इस रिपोर्ट के मुताबिक, पिछले हफ्ते की तरह ही स्टार प्लस के शो झनक की टीआरपी इस हफ्ते भी गिरी है। वहीं, सलमान खान के शो बिग बॉस 18 ने टॉप 10 में अपनी जगह बना ली है। रुपाली गांगुली का शो हर हफ्ते की तरह ही नंबर एक पर बना हुआ है। शो पिछले कई वक्त से नंबर वन है। अब शो में 15 साल का लीप आ गया है। बहुत से स्टार्स शो को छोड़कर जा चुके हैं। वहीं, कई नए चेहरे शो से जुड़े हैं, लेकिन शो की टीआरपी नंबर एक पर ही बनी हुई है। इस हफ्ते शो की टीआरपी 2.3 रिकॉर्ड की गई है। लिस्ट में दूसरे नंबर पर स्टार प्लस के शो ये रिश्ता क्या कहलाता है, ने जगह बना ली है। शो की टीआरपी इस हफ्ते 2.1 दर्ज की गई है। तीसरे नंबर पर शो उड़ने की आशा ने जगह पाई है। इस हफ्ते शो की टीआरपी 2.1 दर्ज की गई है। झनक की टीआरपी घटती जा रही है। इस हफ्ते शो चौथे नंबर पर आ गया है। टॉप 10 की लिस्ट में पांचवे नंबर पर एडवोकेट अंजलि अवस्थी शो है। इसकी टीआरपी 2.0 दर्ज की गई है। वहीं, 2.0 टीआरपी के साथ गुम है किसी के प्यार में शो लिस्ट में छठे नंबर पर है। सातवें नंबर पर कलर्स का शो मंगल लक्ष्मी है। इसकी टीआरपी 1.6 है। 1.6 की रेटिंग के साथ ही आठवें नंबर पर कलर्स का शो शिव शक्ति तप त्याग तांडव है। लिस्ट में बिग बॉस ने भी अपनी जगह बना ली है। बिग बॉस सीजन 18 की टीआरपी 1.5 रिकॉर्ड की गई है। लिस्ट में बिग बॉस 10वें नंबर पर है। वहीं, तारक मेहता का उल्टा चश्मा शो 1.5 की रेटिंग के साथ नौवें नंबर पर है।

चुपचाप धर्मार्थ प्रयासों में लगे रहते हैं बिग बी

नई दिल्ली। भारतीय सिनेमा के इतिहास में सबसे फेमस सुपरस्टार अमिताभ बच्चन 50 वर्षों से अधिक समय से फिल्मों का हिस्सा हैं। फिर भी, जब भी वह स्क्रीन पर आते हैं, तो दर्शक और फैंस उन्हें देखकर चहक उठते हैं। वैसे कई लोग अक्सर अमिताभ की ऑफ-स्क्रीन पर्सनैलिटी पर भी चर्चा करते हैं। हाल ही में ऋचा अनिरुद्ध ने अमिताभ बच्चन को लेकर कुछ खुलासा किया है। उन्होंने बताया कि वह अपनी वैनिटी वैन में आने वाले किसी भी इंसान के लिए खुद दरवाजा खोलते हैं, जब भी वे लोग आते हैं और जब वे जाते हैं। ऋचा ने कहा, ‘कुछ चीजें हैं जो मुझे लगता है कि हर किसी को अमिताभ बच्चन से सीखनी चाहिए।’ एंकर ने यह भी खुलासा किया कि बिग बी चुपचाप धर्मार्थ प्रयासों में लगे रहते हैं जिन्हें वह दिखाना पसंद नहीं करते हैं। उन्होंने कहा, ‘उन्होंने ये बातें कभी नहीं कही हैं, लेकिन कई कंटेस्टेंट्स ने मुझे बताया है। केबीसी में इंदौर से एक कपल आया था। उन्होंने बोलने और सुनने में अक्षम लोगों के लिए काम किया।

‘दस्तावेज : एक पन्ने की कहानी’ आज सिनेमाघरों में होगी रिलीज

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रायपुर

छत्तीसगढ़ी फिल्म निर्माण के क्षेत्र में एक नया पदार्पण है गुडलक फिल्म्स एंटरटेनमेंट, जिसके बैनर तले निर्मित पहली छत्तीसगढ़ी फिल्म ‘दस्तावेज : एक पन्ने की कहानी’ का दर्शकों को बेसब्री से इंतजार है। इसके गीत -संगीत के प्रति दीवानगी अपने चरम पर है और फिल्म का एक गीत ‘हृदय के बात ’ पर ही, 1 लाख के करीब रील्स बन चुकी है और यूट्यूब पर 18 लाख लोग देख चुके हैं। फिल्म 18 अक्टूबर को प्रदेश के सभी प्रमुख सिनेमाघरों में एक साथ रिलीज की जाएगी।

सच्ची घटनाओ से प्रेरित है फिल्म : *फिल्म एक सच्ची घटना से प्रेरित है। फिल्म में नगर पंचायत के एक क्लर्क की पूरी कहानी है जो की सरकारी कार्य से सम्बंधित दस्तावेज से उलझने और उससे होने वाली तकलीफ को दिखाती है। निर्माता सौरभ बरडिया की पारी की भी यह पहली फिल्म है। दस्तावेज में छत्तीसगढ़ के ग्राम जीवन की असल खुशबू है। नए कलाकारों के शीर्ष स्तर के अभिनव की भावनात्मक कहानी है, फिल्म दस्तावेज। प्रेम, उत्साह, हंसी ठिठोली जैसे कई सूत्रों से फिल्म भरी हुई है।फिल्म के प्रमोटर मंगलमूर्ति ने बताया कि फिल्म की शूटिंग कांकेर के नरहरपुर ब्लॉक के समीपस्थ गांवों में की गई है । इसमें युवा कलाकारों ने कई रचनात्मक किरदार निभाए हैं। सरकारी अधिकारी किशन के प्रमुख किरदार में यूट्यूब में फुफु के चरित्र से अनिल सिन्हा नजर आएंगे। जिसकी प्रख्यात हीरो अमलेश नागेश के साथ विगत फिल्म हांडा जबरदस्त हिट हो चुकी है । दर्शकों की पसंद के कई आयाम स्थापित कर चुकी इस जोड़ी का एक गीत चल चल अब धीरे धीरे.... भी दर्शकों के जज्बातों को सीधे सिनेमायी परदे से जोड़ने का प्रभाव रखता है।*

फिल्म के वितरक लाभांश तिवारी ने बताया कि टेलीविजन जगत की जानी मानी नायिका सुमन पटनायक के गांव की पली-बढ़ी किन्तु सोच समझ से आधुनिक ‘नित्या’ के किरदार में नजर आएंगी। अनिल सिन्हा याने ‘किशन’ के साथ ही उनकी माता फगेश्वरी सिन्हा ने इस फिल्म में घरेलू महिला, किन्तु जनसेवा के लिए समर्पित सामाजिक कार्यकर्ता की भूमिका अदा की है। जिनकी दस्तावेज में की गड़बड़ियों पर सीधा टकराव होता है आलोक मिश्रा से।

पिछले 10 सालों में दिवाली पर रिलीज हुईं ये फिल्में, बॉक्स ऑफिस पर ऐसा रहा था प्रदर्शन

नई दिल्ली। इस साल दिवाली पर दो बिग बजट फिल्में बॉक्स ऑफिस पर रिलीज हो रही हैं। इसमें ‘भूल भुलैया 3’ और ‘सिंघम अगेन’ शामिल हैं। दोनों फिल्में दिवाली पर रिलीज हो रही हैं, इसके चलते फिल्म के बॉक्स ऑफिस पर प्रदर्शन को लेकर काफी चर्चा हो रही है। ऐसा नहीं है कि इस साल ही दिवाली पर फिल्मों की भिड़ंत हो रही हो। आज हम आपको बताएंगे ऐसी कुछ फिल्मों के बारे में, जो बीते 10 सालों में बॉक्स ऑफिस पर भिड़ चुकी हैं।

टाइगर 3 (2023) : साल 2023 में दिवाली के मौके पर रिलीज हुई फिल्म ‘टाइगर 3’ का निर्देशन अली अब्बास जफर ने किया था। इस फिल्म ने भारत में 421.25 करोड़ रुपए और दुनियाभर में 607.84 करोड़ रुपए की कमाई की थी।

थैंक गॉड और राम सेतु (2022) : साल 2022 में दिवाली पर अजय देवगन और सिद्धार्थ मल्होत्रा की फिल्म थैंक गॉड रिलीज हुई। अक्षय कुमार की फिल्म राम सेतु भी दिवाली पर रिलीज हुई थी। मीडिया रिपोर्ट्स की मानें तो दोनों ही फिल्में बॉक्स ऑफिस पर कुछ खास कमाई नहीं कर पाई थीं। राम सेतु फिल्म ने लागत के बराबर भी कमाई नहीं की थी। यह फिल्म भी बॉक्स ऑफिस पर फ्लॉप साबित हुई थी।

सूर्यवंशी (2021) : साल 2021 में दिवाली के मौके फिल्म ‘सूर्यवंशी’ रिलीज हुई थी। रोहित शेट्टी निर्देशित इस फिल्म में अक्षय कुमार ने काम किया था। मीडिया रिपोर्ट की मानें तो फिल्म ने करीब 195 करोड़ रुपए का नेट कलेक्शन किया।

हाउसफुल 4 और सांड की आंख (2019) : साल 2019 में अक्षय कुमार की फिल्म ‘हाउसफुल 4’ बॉक्स ऑफिस पर रिलीज हुई थी। फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर अच्छी कमाई की थी। खबरों की मानें तो बॉक्स ऑफिस पर फिल्म का कलेक्शन 280.27 करोड़ कमाए थे। भूमि पेडनेकर और तापसी पन्नू की फिल्म ‘सांड की आंख’ ने बॉक्स ऑफिस पर 30.7 करोड़ का कलेक्शन किया था।

गजब की गंभीरता वाली एक्ट्रेस की फिल्में आज भी दर्शकों को बांधने में रहती हैं कामयाब

दूरदर्शन एंकर से सुपरस्टार बनीं ये बच्ची, सड़क पर गिरी तस्वीर ने बदली तकदीर

नई दिल्ली। मुंबई में जन्मीं वर्सेटाइल अभिनेत्री स्मिता पाटिल की पढ़ाई मराठी माध्यम के स्कूलों में हुई थी। पढ़ाई के बाद वह मुंबई दूरदर्शन में मराठी में समाचार पढ़ने लगी थीं। स्मिता पाटिल की जीवनी मैथिली राव ने ‘स्मिता पाटिल अ ब्रीफ इनकैनडिसेंस’ नाम से लिखी है, जिसमें उन्होंने स्मिता पाटिल के दूरदर्शन को लेकर मजेदार किस्सा सुनाया था। मैथिली राव ने स्मिता की जीवनी में बताया था, ‘स्मिता की एक दोस्त ज्योत्सना किरपेकर बंबई दूरदर्शन पर समाचार पढ़ा करती थी और उनके पति का नाम दीपक किरपेकर था, जो पेशे से फोटोग्राफर थे और प्रोफेशन के दौरान वह अक्सर स्मिता की तस्वीरें खींचा करते थे।’

ना जीने की उम्र है ना मरने की, जिंदगी बस एक नाम है सदमे की’ यह लाइन किसी और के लिए नहीं महज 31 साल की उम्र में दुनिया को अलविदा कह देने वाली सदाबहार और बेहद खूबसूरत एक्ट्रेस स्मिता पाटिल के लिए है। बड़ी-बड़ी आंखें, नूरानी चेहरा और गजब की गंभीरता वाली एक्ट्रेस की फिल्में आज भी दर्शकों को बांधने में कामयाब रहती हैं। पर्दे पर उनकी फिल्म चल रही हो तो देखने वाले बरबस हर सीन, हर हावभाव को बस निहारते रह जाते हैं। एक्टिंग की दुनिया में कमाल करने वाली स्मिता पाटिल पहले न्यूज एंकर थीं। खास बात यह है कि सड़क पर गिरी उनकी तस्वीरें दूरदर्शन के निर्देशक को पसंद आ गई थीं।

दूरदर्शन में पढ़ती थीं मराठी में समाचार

इसी दौरान एक बार दीपक उनकी तस्वीरें लेकर दूरदर्शन केंद्र गए थे, जहां प्रवेश करते ही स्मिता की तस्वीरें गिर पड़ीं और वह तस्वीरों को जमीन पर ही व्यवस्थित करने लगे। इस दौरान वहां से निकल रहे मुंबई दूरदर्शन के निर्देशक पीवी कृष्णामूर्ति की नजर तस्वीरों पर पड़ी। अचानक उन्होंने पूछा, ‘यह किसकी तस्वीरें हैं?’ फिर क्या था? दीपक ने उन्हें जब स्मिता के बारे में बताया तो उन्होंने कहा कि वो उनसे मिलना चाहते हैं। हालांकि, स्मिता इस काम के लिए तैयार नहीं थीं और वह काफी मान-मनौव्वल के बाद दूरदर्शन केंद्र जाने के लिए तैयार हुईं। खास बात यह है कि ऑडिशन में जब स्मिता से पसंद की कोई चीज सुनाने के लिए कहा गया तो उन्होंने कुछ और नहीं बांग्लादेश का राष्ट्र गान ‘आमार शोनार बांग्ला’ सुनाया। निदेशक को उनकी आवाज इतनी पसंद आई कि उन्होंने तत्काल न्यूज एंकर के लिए उन्हें चुन लिया। इसके बाद स्मिता मुंबई दूरदर्शन में मराठी में समाचार पढ़ने लगी थीं।

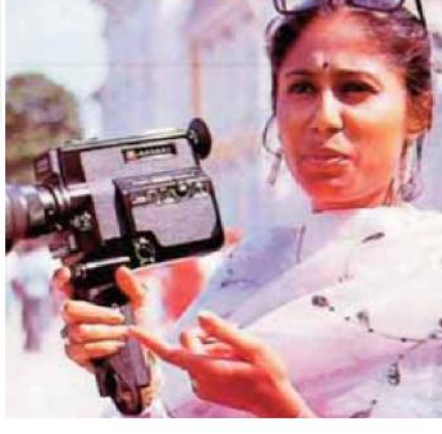

राज बब्बर से की थी शादी

लोगों को उनकी आवाज इतनी पसंद थी कि जिन्हें मराठी नहीं आती थी, वह भी उनकी आवाज को सुनने के लिए टीवी खोलकर बैठ जाते थे। स्मिता के एक्टिंग करियर को भी यहीं से शानदार मौका मिला। लोकप्रिय फिल्म निर्देशक श्याम बेनेगल ने भी स्मिता को पहली बार टीवी पर ही देखा था और देखने के बाद उन्हें अपनी फिल्म में साइन करने का मन बना लिया था। स्मिता पाटिल ने पहले से शादीशुदा एक्टर राज बब्बर से शादी की थी। राज बब्बर से उन्हें एक बेटा प्रतीक बब्बर है, जो एक्टर हैं और ‘आरक्षण’ के साथ ही अन्य कई फिल्मों में नजर आ चुके हैं। स्मिता महज 31 की उम्र में अपने फैंस को सदमा दे गईं। उनकी 13 दिसंबर 1986 को मृत्यु हो गई थी।

खबर संक्षेप

अमरावती में 22 से दो दिवसीय ड्रोन सम्मेलन

नई दिल्ली। आंध्र प्रदेश की राजधानी अमरावती में 22 और 23 अक्टूबर को ड्रोन शिखर सम्मेलन का आयोजन किया जाएगा। यह आयोजन नागर विमानन मंत्रालय और आंध्र प्रदेश सरकार द्वारा संयुक्त रूप से किया जा रहा है। सम्मेलन में ड्रोन कंपनियां, विदेशी इकाइयां और अन्य संबंधित लोग भाग लेंगे।

जेएसडब्ल्यू ने हाइब्रिड बिजली खरीदी का समझौता किया

नई दिल्ली। जेएसडब्ल्यू एनर्जी लिमिटेड की शाखा जेएसडब्ल्यू रिन्यू एनर्जी सेवेंटीन लिमिटेड ने एसटीयू से जुड़ी 192 मेगावाट पवन-सौर हाइब्रिड क्षमता के लिए गुजरात ऊर्जा विकास निगम लिमिटेड के साथ बिजली खरीद समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं। यह समझौता पवन-सौर हाइब्रिड क्षमता के लिए कंपनी का पहला बिजली खरीद समझौता है।

'कांदा एक्सप्रेस' से दिल्ली आएगा 1,600 टन प्याज

नई दिल्ली। सरकार त्योहारों के मद्देनजर प्याज की बढ़ती कीमतों को नियंत्रित करने के लिए बफर स्टॉक से 1,600 टन प्याज पहली बार महाराष्ट्र से दिल्ली 20 अक्टूबर को रेलवे के जरिये पहुंचाएगी। प्याज के लिए रेल का इस्तेमाल किए जाने की यह पहली पहल होगी। 'कांदा एक्सप्रेस' नाम की विशेष ट्रेन महाराष्ट्र के लासलगांव रेलवे स्टेशन से रवाना होगी।

परिधान निर्यात 8.5 प्रतिशत बढ़कर 7.5 अरब डॉलर

नई दिल्ली। अनिश्चितताओं के बावजूद देश का परिधान निर्यात चालू वित्त वर्ष 2024-25 में अप्रैल-सितंबर के दौरान 8.5 प्रतिशत बढ़कर 7.5 अरब डॉलर हो गया। वाणिज्य मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार, सितंबर में भी रेडीमेड परिधानों का निर्यात 17.3 प्रतिशत बढ़कर 1.11 अरब डॉलर हो गया। परिधान निर्यात संवर्धन परिषद के चेयरमैन सुधीर सेखरी ने उक्त जानकारी दी है।

शीतकालीन सत्र में 25,007 उड़ानें होंगी संचालित

नई दिल्ली। भारतीय विमानन कंपनियां 27 अक्टूबर से शुरू हो रहे शीतकालीन सत्र में 124 हवाई अड्डों से हर सप्ताह 25,007 उड़ानें संचालित करेंगी। विमानन नियामक डीजीसीए ने यह जानकारी दी। नागर विमानन महानिदेशालय के अनुसार, ग्रीष्मकालीन सत्र में 125 हवाई अड्डों से प्रति सप्ताह 24,275 उड़ाने संचालित की गई थीं।

सेम्बकॉर्प को पवन-सौर हाइब्रिड परियोजना का मिला ठेका

नई दिल्ली। सिंगापुर स्थित सेम्बकॉर्प इंडस्ट्रीज की उसकी इकाई सेम्बकॉर्प ग्रीन इंफ्रा प्राइवेट लिमिटेड के जरिये 150 मेगावाट की पवन-सौर हाइब्रिड परियोजना का ठेका मिला है। निर्माण-स्वामित्व-संचालन परियोजना एसईसीआई द्वारा जारी 600 मेगावाट की बोली का हिस्सा है। सेम्बकॉर्प इंडस्ट्रीज की अपनी पूर्ण स्वामित्व वाली नवीकरणीय अनुषंगी कंपनी सेम्बकॉर्प ग्रीन इंफ्रा प्राइवेट लिमिटेड के जरिये सोलर एनर्जी का ठेका मिला है।

ऐपल को पीछे छोड़ एनवीडिया बन सकती है दुनिया की सबसे मूल्यवान कंपनी

एजेंसी ▶▶ नई दिल्ली

- कंपनी के शेयरों में लगभग 14 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है

चिप निर्माता दिग्गज कंपनी एनवीडिया जल्द ही बाजार पूंजीकरण में आईफोन निर्माता ऐपल को पीछे छोड़ सकती है। एनवीडिया के शेयर लगातार बढ़ रहे हैं, जिससे निवेशकों की चिंता कम हो रही है। अक्टूबर में कंपनी के शेयरों में लगभग 14 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है, जिसमें सोमवार को 2.4 प्रतिशत की उछाल भी शामिल है। इस उछाल ने एनवीडिया को जून के बाद से उसके उच्चतम स्तर पर पहुंचा दिया है।

एनवीडिया जल्द ही बाजार पूंजीकरण में आईफोन निर्माता एप्पल को छोड़ सकती है पीछे

एआई चिप की बढ़ती मांग तेजी का कारण

एनवीडिया के शेयर तेजी से बढ़ रहे हैं, क्योंकि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस चिप की बढ़ती मांग ने इसे प्रमुख निवेश विकल्प बना दिया है। माइक्रोसॉफ्ट जैसी बड़ी कंपनियां एआई में भारी निवेश कर रही हैं, जिससे एनवीडिया को लाभ हो रहा है। माइक्रोसॉफ्ट एआई निवेश को 2025 तक 58 अरब डॉलर (लगभग 4,875 रुपये) तक बढ़ाने की योजना बना रही है। विश्लेषकों के अनुसार, माइक्रोसॉफ्ट का राजस्व इस साल दोगुना होने और अगले साल 44 प्रतिशत बढ़ने की उम्मीद है।

यह भी है वजह

एनवीडिया के मुख्य कार्यकारी अधिकारी जेन्सेन हुआंग के आश्वासन के बाद कंपनी के शेयरों में तेजी आई है। उन्होंने बताया कि कंपनी की नई ब्लैकवेल चिप अब पूरी तरह से उत्पादन में है। पहले इंजीनियरिंग समस्याओं के कारण देरी से शेयरों में बिकवाली हुई थी, लेकिन अब बाजार में उछाल है। मॉर्गन स्टेनली के अनुसार, ब्लैकवेल चिप के ऑर्डर एक साल तक बुक हो चुके हैं और कंपनी की भविष्य की संभावनाएं मजबूत हैं।

वर्तमान में इतना है पूंजीकरण

एनवीडिया के शेयरों में हाल ही में 2.4 प्रतिशत की उछाल के बाद इसका बाजार पूंजीकरण 3,390 अरब डॉलर (लगभग 2.84 लाख अरब रुपये) तक पहुंच गया। यह इसे ऐपल के 3,520 अरब डॉलर (लगभग 3.22 लाख अरब रुपये) के बाजार पूंजीकरण के करीब ले आया है। एनवीडिया पहले भी एक बार बाजार पूंजीकरण में ऐपल को पछाड़ चुकी है। पहली बार ऐसा 2002 में और फिर इस साल जून में भी ऐपल को एनवीडिया ने पछाड़ा था।

भारत के लिए वैकल्पिक ईंधन और जैव ईंधन के निर्यात की अपार संभावनाएं

भारत की लॉजिस्टिक लागत दो साल में घटकर एकल अंक में आएगी: गडकरी

एजेंसी ▶▶ नई दिल्ली

केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने बृहस्पतिवार को कहा कि भारत की 'लॉजिस्टिक' लागत अगले दो साल में घटकर एकल अंक में आ जाएगी। नीति आयोग द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम में गडकरी ने कहा कि मंत्रालय कई राजमार्गों तथा एक्सप्रेसवे का निर्माण कर रहा है, जिससे भारत की लॉजिस्टिक लागत को कम करने में मदद मिलेगी।

उन्होंने कहा, '' दो साल के भीतर हम अपनी लॉजिस्टिक लागत को नौ प्रतिशत तक कम करने जा रहे हैं। आर्थिक शोध संस्थान 'नेशनल काउंसिल ऑफ एप्लाइड इकोनॉमिक रिसर्च' (एनसीएईआर) के अनुमानों के अनुसार, वित्त वर्ष 2021-22 के लिए भारत में लॉजिस्टिक लागत सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के 7.8 प्रतिशत से 8.9 प्रतिशत के बीच थी। गडकरी ने कहा कि भारत के लिए वैकल्पिक ईंधन और जैव ईंधन के निर्यात की अपार संभावनाएं हैं।

मोटर वाहन उद्योग एक नंबर पर लाना है

उन्होंने कहा कि निम्न गुणवत्ता वाले कोयले का इस्तेमाल मेथनॉल बनाने के लिए किया जा सकता है। मंत्री ने कहा कि भारत जैव ईंधन क्षेत्र में, खासकर मेथनॉल के क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रगति कर रहा है। गडकरी ने साथ ही कहा कि उनका लक्ष्य भारतीय मोटर वाहन उद्योग को विश्व में पहले स्थान पर लाना है। उन्होंने कहा कि भारत पिछले वर्ष जापान को पीछे छोड़कर दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा मोटर वाहन बाजार बन गया था और केवल अमेरिका तथा चीन से पीछे था।

मोटर वाहन उद्योग रोजगार सृजन कर रहा

गडकरी ने कहा कि भारत के मोटर वाहन उद्योग का आकार 2014 में 7.5 लाख करोड़ रुपये से बढ़कर 2024 में 18 लाख करोड़ रुपये हो जाएगा। यह उद्योग अधिकतम संख्या में रोजगार सृजन कर रहा है। मंत्री ने इस बात पर जोर दिया कि सड़क निर्माण में पुनर्चक्रण किए गए टायर पाउडर तथा प्लास्टिक जैसी सामग्रियों का इस्तेमाल किया जा रहा है, जिससे 'बिटुमेन' के आयात में कमी लाने में मदद मिलती है।

- गडकरी ने पंजाब और हरियाणा में पराली जलाने की समस्या पर भी बात की
- गडकरी ने कहा कि मंत्रालय कई राजमार्गों तथा एक्सप्रेसवे का निर्माण कर रहा

ऐसी नीति से बढ़ें जो प्रभावी हो

मंत्री ने कहा कि भारत को एक ऐसी नीति के साथ आगे बढ़ने की जरूरत है जो लागत प्रभावी, स्वदेशी, आयात विकल्प तथा रोजगार सृजन करने वाली हो ताकि बढ़ते प्रदूषण तथा जीवाश्म ईंधन आयात के प्रमुख मुद्दों का समाधान किया जा सके।

पराली को कर सकते हैं ईंधन के रूप में इस्तेमाल

गडकरी ने इस बात पर भी जोर दिया कि फसल अपशिष्ट का इस्तेमाल करने की पहल देशभर के किसानों की आय बढ़ाने में कैसे मदद कर रही है। गडकरी ने पंजाब और हरियाणा में पराली जलाने की समस्या पर भी बात की। उन्होंने कहा कि अभी हम पराली का पांचवां हिस्सा ही संसाधित कर सकते हैं, लेकिन बेहतर योजना के साथ, हम पराली को वैकल्पिक ईंधन के लिए कच्चे माल के रूप में इस्तेमाल कर इससे होने वाले वायु प्रदूषण को कम कर सकते हैं।

भारत का निर्यात इस वित्त वर्ष की पहली छमाही में 4.8 प्रतिशत बढ़ा

एजेंसी ▶▶ नई दिल्ली

भारत का निर्यात वित्त वर्ष 2024-25 की पहली छमाही यानी अप्रैल से सितंबर तक की अवधि में सालाना आधार पर 4.86 प्रतिशत बढ़कर 393.22 अरब डॉलर हो गया है। यह पिछले वित्त वर्ष की समान अवधि में 375 अरब डॉलर था।

सरकार द्वारा जारी किए गए डेटा में यह जानकारी सामने आई। चालू वित्त वर्ष के पहले छह महीने में कुल माल निर्यात की संचयी वैल्यू 213.22 अरब डॉलर रही। वित्त वर्ष 2022-23 की अप्रैल-सितंबर अवधि के दौरान यह आंकड़ा 211.08 अरब डॉलर था। इसमें 1.02 प्रतिशत की बढ़त दर्ज की गई है। अप्रैल-सितंबर 2024 के दौरान सर्विसेज के निर्यात में 9.81 प्रतिशत का उछाल दर्ज किया गया है। वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय के मुताबिक, भारत का निर्यात सितंबर में माल और सर्विसेज को मिलाकर 65.19 अरब डॉलर रहने की उम्मीद है।

जैविक और अजैविक रसायनों का निर्यात

बीते महीने भारत के निर्यात में इंजीनियरिंग गुड्स, जैविक और अजैविक रसायन, प्लास्टिक और लिनोलियम, दवाएं और फार्मास्यूटिकल्स और सभी प्रकार के रेडीमेड गारमेंट्स आदि प्रमुख थे। सेक्टर के हिसाब से देखें तो सितंबर में इंजीनियरिंग गुड्स का निर्यात 10.55 प्रतिशत बढ़कर 8.89 अरब डॉलर से 9.82 अरब डॉलर हो गया।

प्लास्टिक और लिनोलियम का निर्यात

प्लास्टिक और लिनोलियम का निर्यात सितंबर 2024 में 28.32 प्रतिशत बढ़कर 0.79 अरब डॉलर हो गया, जो कि सितंबर 2023 में 0.62 अरब डॉलर था। दवाओं और फार्मास्यूटिकल्स का निर्यात 7.22 प्रतिशत बढ़कर 2.39 अरब डॉलर से 2.57 अरब डॉलर हो गया। कपड़ा निर्यात सितंबर 2024 में 17.30 प्रतिशत बढ़कर 1.11 अरब डॉलर हो गया, जो पहले 0.95 अरब डॉलर था। सितंबर में कुल आयात (माल और सेवाएं संयुक्त) 71.68 अरब डॉलर रहने का अनुमान है, इसमें 3.79 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई।

- इंस्टाग्राम और व्हाट्सऐप समेत कई विभागों के कर्मचारी प्रभावित

मेटा ने एक साथ 12 से अधिक टीमों में की छंटनी, कई की गई नौकरी

एजेंसी ▶▶ नई दिल्ली

मार्क जुकरबर्ग के स्वामित्व वाली कंपनी मेटा ने एक बार फिर बड़े स्तर पर अपने कर्मचारियों की छंटनी की है। इस छंटनी से इंस्टाग्राम, व्हाट्सऐप, मेटा-वर्स और मेटा के रियलिटी लैब में काम करने वाले कर्मचारी प्रभावित हुए हैं। कंपनी ने अपने संसाधनों को फिर से व्यवस्थित करने के लिए छंटनी की है। रिपोर्ट में कहा गया है कि इस छंटनी से थ्रेड्स, भर्ती, कानूनी संचालन और डिजाइन जैसी टीमों के कर्मचारियों पर भी असर पड़ा है।

मेटा ने छंटनी को लेकर क्या कहा : मेटा के प्रवक्ता डेव अर्नोल्ड ने बताया कि कंपनी अपने दीर्घकालिक लक्ष्यों के अनुसार संसाधनों को फिर से बांट रही है। इसमें टीमों का नया रूप और कर्मचारियों का नई भूमिकाओं में बदलाव शामिल है। उन्होंने कहा, जब पद समाप्त होते हैं, तो कंपनी प्रभावित कर्मचारियों के लिए नए अवसर ढूंढने की कोशिश करती है। अर्नोल्ड ने यह भी कहा कि मेटा की कुछ टीमें यह सुनिश्चित कर रही हैं कि संसाधन उनके दीर्घकालिक लक्ष्यों से मेल खाएं।

पहले भी की जा चुकी है छंटनी
कंपनी के एक पूर्व कर्मचारी ने बताया कि वीडियो कॉल में 12 से अधिक टीम के सदस्यों को नौकरी से निकाला गया है। प्रभावित कर्मचारियों में से कुछ को 6 हफ्तों का वेतन मिला है। मेटा ने 2022 में, कंपनी ने 11,000 कर्मचारियों की कटौती की। 2023 में जुकरबर्ग ने 10,000 और छंटनी की घोषणा की। 2024 में तकनीकी क्षेत्र में छंटनी जारी है, जिसमें 422 कंपनियों में 1.37 लाख से अधिक कर्मचारियों की छंटनी हुई है।

एलएंडटी को हाइड्रोकार्बन कारोबार का मिला 'बड़ा' ठेका

नई दिल्ली। बुनियादी ढांचा क्षेत्र की प्रमुख कंपनी लार्सन एंड टुब्रो (एलएंडटी) को सार्वजनिक क्षेत्र की राष्ट्रीय केमिकल्स एंड फर्टिलाइजर्स लिमिटेड से उसके हाइड्रोकार्बन कारोबार के लिए एक 'बड़ा' ठेका मिला है। कंपनी ने बृहस्पतिवार को बीएसई को दी सूचना में बताया, '' लार्सन एंड टुब्रो (एलएंडटी) के हाइड्रोकार्बन व्यवसाय को अपने 'एडवेंट' कारोबार के तहत नवरत्न दर्जा प्राप्त भारत सरकार के उपक्रम तथा भारत की एक अग्रणी उर्वरक व रसायन विनिर्माण कंपनी से एक बड़ा ठेका मिला हे।''एलएंडटी 1,000 करोड़ रुपये से 2,500 करोड़ रुपये के बीच के मूल्य के ठेके को '' बड़ा ठेका '' बताती है। कंपनी के पूर्णकालिक निदेशक एवं अध्यक्ष (ऊर्जा) सुब्रमण्यम शर्मा ने कहा, '' हम इसे समयसीमा के भीतर पूरा करने के लिए प्रतिबद्ध हैं..'लार्सन एंड टुब्रो 27 अरब अमेरिकी डॉलर की भारतीय बहुराष्ट्रीय कंपनी है जो दुनिया भर के 50 से अधिक देशों में परिचालन करती है।

भारत 2030 तक दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की ओर अग्रसर: एसएंडपी

नई दिल्ली। भारत 2030 तक तीसरी सबसे बड़ी वैश्विक अर्थव्यवस्था बनने की ओर अग्रसर है। रेटिंग एजेंसी एसएंडपी ग्लोबल रेटिंग्स ने बृहस्पतिवार को एक रिपोर्ट में यह बात कही। एजेंसी ने हालांकि कहा कि बढ़ती जनसंख्या बुनियादी सेवा का दायरा बढ़ाने में बढ़ती चुनौतियों को प्रस्तुत करती है और उत्पादकता बनाए रखने के लिए निवेश की बढ़ती जरूरतें भी सामने आती हैं। उभरती अर्थव्यवस्थाओं की अगले दशक और उससे आगे के लिए उच्च महत्वाकांक्षाएं हैं। वर्तमान में 3,600 अरब डॉलर की अर्थव्यवस्था भारत का लक्ष्य 2047 तक 30 हजार अरब डॉलर की अर्थव्यवस्था बनना है।

भारत वर्तमान में पांचवी बड़ी अर्थव्यवस्था

भारत इस समय दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। एसएंडपी ने कहा, "भारत अगले तीन साल में सबसे तेजी से बढ़ने वाली प्रमुख अर्थव्यवस्था बनने की ओर अग्रसर है और 2030 तक वैश्विक स्तर पर तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा। निवेश बैंकिंग कंपनी जेपी मॉर्गन के 'सरकारी उभरते बाजार बॉन्ड सूचकांक' में 2024 में इसका प्रवेश अतिरिक्त सरकारी वित्तपोषण प्रदान कर सकता है और घरेलू पूंजी बाजारों में महत्वपूर्ण संसाधनों तक पहुंच बना सकता है।

भारत ने बढ़ाया अपना पूंजीगत व्यय

एसएंडपी ने कहा, "इसके अलावा, 2035 तक भारत दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में स्थापित हो जाएगा, जबकि इंडोनेशिया और ब्राजील क्रमशः आठवें और नौवें स्थान पर होंगे।" इसमें कहा गया है कि भारत ने अपने पूंजीगत व्यय को बढ़ाकर अपने कमजोर राजकोषीय क्षमता को सुधारने के लिए भी कदम उठाए हैं, जिससे दीर्घकालिक वृद्धि को और अधिक समर्थन मिलेगा।

एलन मस्क ने लॉन्च की रोबोटैक्सी साइबरकैब

बिना ड्राइवर और स्टीयरिंग व्हील के चलेगी रोबो टैक्सी

एजेंसी ▶▶ नई दिल्ली

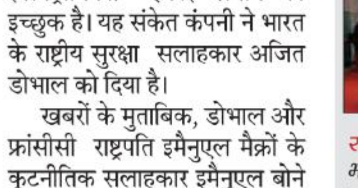

दुनियाभर की कंपनियां बाजार में अपनी बेहतरीन फीचर्स वाली कार्स बाजार में उतार रही हैं। लेकिन, क्या आपने कभी किसी ऐसी कार के बारे में सुना है जो बिना ड्राइवर के चले यहां तक की उसमें स्टीयरिंग व्हील भी ना हो। ऐसी कार की सिर्फ कल्पना ही की जा सकती है या फिर यह सवना हो सकता है लेकिन टेस्ला के सीईओ एलन मस्क ने इस सपने को सच कर दिखाया है। अमेरिका में अपनी फ्यूचरिस्टिक रोबोटैक्सी को अनवील किया है।

न ड्राइवर और न ही स्टीयरिंग व्हील

रोबोटैक्सी की सबसे खास बात यह कि, ये बिना ड्राइवर और स्टीयरिंग व्हील के चलेगी। इसमें स्टीयरिंग और पेडल नहीं दिया गया है। बल्कि इसमें सिर्फ दो लोगों की सीटिंग कैपेसिटी दी गई है। इसके अलावा कंपनी ने रोबोवैन को भी पेश किया है। इस कार की खूबियां एक से बढ़कर एक हैं।

सिर्फ टू सीटर है रोबोटैक्सी

साइबरकैब इलेक्ट्रिक टैक्सी में सिर्फ दो लोगों के बैठने के लिए ही जगह दी गई है, यानि कि यह दो सीटर कार है। इसमें कंपनी ने न ही स्टीयरिंग लगाई है और ना ही इसमें पैडल है। ये दो बड़ी वजह इस कार को पूरी तरह से ऑटोमेटिक व्हीकल बनाती हैं। इसमें दो दरवाजे दिए गए हैं, जो ऊपर की तरफ खुलते हैं। देखने में यह काफी खूबसरत है और इसमें कई बेहतरीन फीचर्स दिए गए हैं।

कम खर्च में चलेगी टैक्सी

मस्क का कहना है कि, रोबोटैक्सी को चलाने का खर्च करीब 0.20 डालर प्रति मील होगा यानी यानी 1.6 किलोमीटर की कॉस्ट लगभग 16 रुपए हो सकती है। इसके अलावा एक और खासियत यह भी कि, इसे स्मार्टफोन की तरह ही वायरलेस तरीके से चार्ज किया जा सकेगा।

कब तक लॉन्च होगी रोबोटैक्सी, तय नहीं

एलन मस्क ने इस फ्यूचरिस्टिक रोबोटैक्सी को अमेरिका के कैलिफोर्निया में आयोजित हुए 'वी रोबोट इवेंट' के दौरान अनवील किया गया हैलेकिन, उन्होंने यह नहीं बताया कि इसे कब तक लॉन्च किया जाएगा। बता दें कि टेस्ला अगले साल टेक्सास और कैलिफोर्निया में पूरी तरह से स्वचालित ड्राइविंग शुरू करने की योजना बना रही है, वहीं साइबरकैब का प्रोडक्शन 2026 तक शुरू हो जाएगा। हालांकि उन्होंने कहा कि यह 2027 तक भी हो सकता है। एलन मस्क ने है कि रोबोटैक्सी जैसी गाड़ियां बिना ड्राइवर और स्टीयरिंग व्हील के भी ड्राइवर से लैस गाड़ियों के मुकाबले 10-20 गुना अधिक सुरक्षित हैं।

फ्रांस में रक्षा क्षेत्र की प्रमुख कंपनी सफ्रान भारत में लगाएगी कारखाना

- फ्रांस ने रक्षा क्षेत्र में काम करने पर सहमति जताई, डोभाल और फ्रांसीसी राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों के बीच रणनीतिक वार्ता हुई

नई दिल्ली। फ्रांस में रक्षा क्षेत्र की प्रमुख कंपनी सफ्रान भारत में रक्षा इलेक्ट्रॉनिक्स इकाई लगाने की इच्छुक है। यह संकेत कंपनी ने भारत के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजित डोभाल को दिया है।

खबरों के मुताबिक, डोभाल और फ्रांसीसी राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों के कूटनीतिक सलाहकार इमैनुएल बोने और उनके मुख्य सैन्य सलाहकार फेबियन मैंडन के बीच रणनीतिक वार्ता हुई। इस दौरान फ्रांस ने रक्षा क्षेत्र में काम करने पर सहमति जताई है।

राफेल के लिए हो चुकी है भूमि अधिग्रहित
भारत और फ्रांस की विमान निर्माता कंपनी डसॉल्ट एविएशन एसए राफेल लड़ाकू विमान और नागरिक विमानों के संचालन के लिए पहले से साथ काम कर रहा है। फ्रांसीसी कंपनी ने इसके लिए उत्तर प्रदेश के जेवर में पूर्ण रखरखाव, ओवरहाल और मरम्मत सुविधा के निर्माण के लिए भूमि का अधिग्रहण कर लिया है।

कुछ प्रमुख भागों का निर्माण करेगी कंपनी : रिपोर्ट के मुताबिक, सफ्रान की योजना है कि कारखाने में सैन्य प्लेटफार्मों को समर्थन देने के लिए आवश्यक सेंसर और महत्वपूर्ण इलेक्ट्रॉनिक्स भागों का निर्माण किया जाएगा। कंपनी ने अभी तक इस सुविधा के स्थान पर फैसला नहीं किया है। वार्ता के दौरान दोनों पक्षों ने साइबर सुरक्षा से लेकर अंतरिक्ष में सैन्य अनुप्रयोगों तक के संवेदनशील सुरक्षा मुद्दों पर चर्चा की। इसमें सैन्य उपग्रहों का संयुक्त प्रक्षेपण, हैमर मिसाइल जैसे स्टैंड-ऑफ हथियारों का सह-विकास और निर्माण शामिल है।

फोनपे ने पेश किया पटाखों से हुई दुर्घटनाओं का इंश्योरेंस, मिलेगा 25 हजार रुपए का कवरेज

- फोनपे ने दिवाली से पहले पेश किया 'फायरक्रैकर इंश्योरेंस'

एजेंसी ▶▶ नई दिल्ली

डिजिटल पेमेंट प्लेटफॉर्म फोनपे ने दिवाली के अवसर पर एक नई बीमा पॉलिसी पेश की है। 'फायरक्रैकर इंश्योरेंस' नामक यह बीमा पॉलिसी पटाखों से होने वाली दुर्घटनाओं के खिलाफ कवरेज प्रदान करती है। यह पॉलिसी केवल 9 रुपये में उपलब्ध है और 10 दिनों के लिए 25,000 रुपये तक की कवरेज राशि देती है।

यह बीमा दिवाली के दौरान सुरक्षा सुनिश्चित करने का एक अभिनव तरीका है, जिससे यूजर्स सुरक्षित उत्सव का अनुभव कर सकते हैं। फोनपे इंश्योरेंस के मुख्य कार्यकारी अधिकारी विशाल गुप्ता ने कहा है कि यह बीमा परिवारों को दुर्घटनाओं से सुरक्षा प्रदान करेगा।

ऐसे खरीद सकेंगे पॉलिसी, यह बीमा परिवारों को दुर्घटनाओं से सुरक्षा प्रदान करेगा

इस बीमा को फोनपे ऐप पर आसानी से खरीदा जा सकता है। यूजर्स 'इंश्योरेंस' सेक्शन में जाकर 'फायरक्रैकर इंश्योरेंस' का चयन करके इसके लिए भुगतान कर सकते हैं। फोनपे ने दिवाली के दौरान पटाखों से होने वाली चोटों के बढ़ते मामलों के जवाब में इस बीमा पॉलिसी को लॉन्च किया है। फोनपे इंश्योरेंस के मुख्य कार्यकारी अधिकारी विशाल गुप्ता ने कहा है कि यह बीमा परिवारों को दुर्घटनाओं से सुरक्षा प्रदान करेगा, जिससे वे तनावमुक्त होकर जश्न मना सकेंगे।

चार सदस्यों को मिलता है कवरेज

पटाखा बीमा पॉलिसी 4 सदस्यों के परिवार को कवरेज प्रदान करती है, जिसमें पॉलिसीधारक, उनके जीवनसाथी और 2 बच्चे शामिल हैं। यह पॉलिसी पटाखों से होने वाली घटनाओं के कारण अस्पताल में भर्ती या आकस्मिक मृत्यु के खर्चों को कवर करेगी। पॉलिसी को फोनपे ऐप के माध्यम से खरीदा जा सकता है और इसका कवरेज 25 अक्टूबर, 2024 से शुरू होगा। अगर इसे इस तिथि के बाद खरीदा जाता है, तो कवरेज खरीद की तारीख से शुरू होगा।

सैनी कैबिनेट में नए पुराने चेहरों का समागम

मुख्यमंत्री सैनी ने अपनी नई कैबिनेट में सभी वर्गों को दी तरजीह

हरियाणा की तमाम जातियों को भागीदारी, इसके साथ ही अपने मंत्रिमंडल में सामंजस्य बनाए रखा

एजेंसी ▶▶ पंचकूला

हरियाणा में भाजपा ने तीसरी बार सरकार बना ली है। नायब सिंह सैनी के साथ ही 13 मंत्रियों ने भी पद की शपथ ली। सैनी सरकार ने गठन में हरियाणा की तमाम जातियों को भागीदारी दी है। पार्टी ने उसे हरियाणा में लगातार तीसरी बार सत्ता दिलाने वाले सभी अहम जातीय समुदायों के नेताओं को मंत्री बनने का मौका दिया है। इस तरह नए और पुराने दोनों ही चेहरों को तरजीह दी है।

इसके साथ ही सभी वर्गों को साधने की कोशिश की गई है। सैनी सरकार में दलित, ब्राह्मण और जाट समुदाय से दो-दो, ओबीसी से चार, राजपूत, पंजाबी और बनिया समुदाय से एक विधायक को मंत्री बनाया गया है।

अनिल विज- 71 वर्षीय अनिल विज अंबाला कैंट से सातवीं बार विधायक बने हैं। वे अनुभवी और जुझारू नेता माने जाते हैं। उनकी राजनीति की शुरुआत अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद से हुई। वे 1970 में एबीवीपी के महासचिव बने और 1974 में स्टेट बैंक ऑफ इंडिया में नौकरी ज्वाइन की।

राव नरबीर सिंह- विधायक राव नरबीर सिंह को नायब सैनी सरकार में मंत्री बनाया गया है।

कृष्णलाल पंवार- इसराना के विधायक पंवार थर्मल की नौकरी छोड़कर राजनीति में उतरे थे। पंवार पिछली मनोहर सरकार में परिवहन मंत्री थे। 2019 में चुनाव हारने के बाद भाजपा ने राज्यसभा सांसद बनाया। 1991 में पहली बार विधायक बने।

महीपाल ढांडा- महिपाल ढांडा पानीपत ग्रामीण विधानसभा में 2014 में भाजपा के टिकट पर पहली बार विधायक बने। उन्होंने अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी को 36132 वोटों से हराया।

विपुल गोयल- फरीदाबाद के विधायक विपुल गोयल बड़े व्यापारी और उद्यमी हैं। वर्ष 2014 में उन्हें भजपा का टिकट मिला। मनोहर लाल सरकार में कैबिनेट मंत्री का पद दिया गया। जनवरी 2024 को उन्हें भाजपा का प्रदेश उपाध्यक्ष बनाया गया।

डॉ. अरविंद शर्मा- सोनीपत के गोहाना विधानसभा क्षेत्र में भाजपा को पहली बार जीत दिलाने वाले डॉ. अरविंद शर्मा को मंत्रीमंडल में पद दिया गया है। डॉ. अरविंद शर्मा पहले केंद्रीय राजनीति में सक्रिय थे। डॉ. अरविंद शर्मा का राजनीतिक सफर 1996 में सोनीपत लोकसभा सीट से निर्दलीय चुनाव जीतने के साथ शुरू हुआ था।

श्याम सिंह राणा- रादौर से भाजपा विधायक श्याम सिंह राणा ने दूसरी बार रादौर से जीते। 2014 में भी वे विधायक चुने गए थे।

रणबीर गंगवा- 34 साल के राजनीतिक सफर में मंत्री पद तक का सफर तय किया है। 1990 में राजनीतिक पारी की शुरुआत की।

कृष्ण बेदी- कृष्ण कुमार बेदी मनोहरलाल सरकार में भी सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री के रूप में अपनी सेवाएं दे चुके हैं। 2014 में कुरुक्षेत्र के शाहाबाद विधानसभा क्षेत्र से विधायक चुने गए थे।

श्रुति चौधरी- श्रुति चौधरी 2024 के विधानसभा चुनावों में पहली बार तोशाम की विधायक बनीं हैं। जून 2024 में उन्होंने भाजपा की सदस्यता हासिल की थी।

कैबिनेट में 3 किसान, 4 व्यवसायी

नई कैबिनेट में शामिल तीन मंत्रियों ने अपना पेशा किसानी बताया है। इन मंत्रियों में रणबीर गंगवा, राव नरबीर सिंह और श्याम सिंह राणा शामिल हैं। सैनी के अलावा अनिल विज, कृष्ण कुमार, अरविंद कुमार शर्मा और कृष्ण लाल पंवार उन मंत्रियों में शामिल हैं जिन्होंने चुनावी हलफनामे में राजनीति को अपना पेशा बताया है।

नई कैबिनेट में तीन मंत्री 12वीं पास

कैबिनेट में तीन मंत्री 12वीं पास हैं। छह के पास स्नातक, दो के पास स्नातक पेशेवर और तीन के पास स्नाकोत्तर की डिग्री हैं। राजेश नागर, रणबीर गंगवा और कृष्ण लाल पंवार कैबिनेट के सबसे कम पढ़े लिखे मंत्री हैं। तीनों मंत्री 12वीं पास हैं। इसी तरह आरती सिंह राव, महिपाल ढांडा, विपुल गोयल, राव नरबीर सिंह, अनिल विज और श्याम सिंह राणा ने स्नातक किया है। मुख्यमंत्री नायब सैनी और श्रुति चौधरी के पास पेशवर स्नातक की डिग्री है। गौरव गौतम, कृष्ण कुमार और अरविंद कुमार शर्मा कैबिनेट के सबसे पढ़े लिखे मंत्री हैं। तीनों के पास परास्नातक की डिग्री है।

खबर संक्षेप

मूत्र कांडः वह 4 माह से ऐसा कर रही थी

गाजियाबाद। उत्तर प्रदेश के गाजियाबाद जिले में खाने में मूत्र मिलाने वाली घरेलू सहायिका को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। उसने कई खुलासे किए हैं। सहायिका ने यह भी बताया कि वो खाने में मूत्र क्यों मिलाती थी? मालिक उसके हर काम में कमी निकालते थे। एसीपी वेब सिटी लिपि नगायच ने बताया कि रीना पिछले करीब 4 महीने से ऐसा कर रही थी।

स्वच्छता को संस्थागत बनाने पहल जरूरी

नई दिल्ली। प्रशासनिक सुधार और लोक शिकायत विभाग ने 31 अक्टूबर तक स्वच्छता को संस्थागत बनाने और सरकारी कार्यालयों में लंबित मामलों को कम करने विशेष अभियान 4.0 शुरू किया है। पेयजल और स्वच्छता विभाग कार्यक्रम प्रभागों और डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी राष्ट्रीय जल एवं स्वच्छता संस्थान के साथ विशेष अभियान चला रहा है।

हरियाणा कांग्रेस को फिर झटका, यादव ने छोड़ी पार्टी

लुधियाना। कांग्रेस की ओबीसी विंग के राष्ट्रीय अध्यक्ष और हरियाणा की सियासत के बड़े नेता कैप्टन अजय सिंह यादव ने कांग्रेस को अलविदा कह दिया है। यादव ने ट्वीट कर बताया कि उन्होंने इस्तीफा कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे को भेज दिया है और पार्टी की प्राथमिक सदस्यता भी छोड़ दी है। इस फैसले को काफी भारी बताया है।

कर्नाटक के आवासीय स्कूलों का बदलेगा नाम

बेंगलुरु। कर्नाटक में सभी एसटी सरकारी आवासीय विद्यालयों का नाम बदलकर महर्षि वाल्मीकि आवासीय विद्यालय कर दिया जाएगा और रायचूर विश्वविद्यालय का नाम बदलकर महर्षि वाल्मीकि विश्वविद्यालय कर दिया जाएगा। यह ऐलान सीएम सिद्धारमैया ने गुरुवार को किया। अब नाम बदलकर महर्षि वाल्मीकि आवासीय विद्यालय रखा जाएगा।

कांग्रेस डिजिटल मीडिया संयोजक सरीन निष्कासित

नई दिल्ली। कांग्रेस के डिजिटल मीडिया संयोजक डॉ. पी सरीन को पलक्कड़ विधानसभा उपचुनाव के लिए उम्मीदवार चयन को लेकर सार्वजनिक विरोध के बाद पार्टी से निष्कासित कर दिया गया है। केरल प्रदेश कांग्रेस कमेटी ने यह फैसला सुनाया, जो सरीन की प्रेस कॉन्फ्रेंस के साथ ही हुआ। उन्होंने वाम मोर्चा के साथ सहयोग की अपनी इच्छा व्यक्त की थी।

विज्ञान भवन में बौद्ध भिक्षुओं को पीएम मोदी ने किया संबोधित

संस्कृति को नए सिरे से पेश कर रहा भारत करुणा और सद्भावना को बताया महत्वपूर्ण

भगवान बुद्ध के अभिधम्म, उनकी वाणी, उनकी शिक्षाएं विरासत के तौर पर विश्व को मिलीं

एजेंसी ▶▶ नई दिल्ली

पीएम नरेंद्र मोदी गुरुवार को अभिधम्म दिवस पर दिल्ली में एक कार्यक्रम में विज्ञान भवन में बौद्ध भिक्षुओं को संबोधित करते हुए भगवान बुद्ध से अपने जुड़ाव पर बात की। उन्होंने सरकार के पाली भाषा को शास्त्रीय भाषा का दर्जा देने और भारत के अपनी संस्कृति और सभ्यता को नए सिरे से प्रस्तुत करने की बात कही।

पीएम मोदी ने कहा कि अभिधम्म दिवस हमें याद दिलाता है कि करुणा और सद्भावना से ही हम दुनिया को और बेहतर बना सकते हैं। इससे पहले 2021 में कुशीनगर में ऐसा ही आयोजन हुआ था, ये मेरा सौभाग्य है कि वहां उस आयोजन में भी मैं शामिल हुआ था। ये मेरा सौभाग्य है कि भगवान बुद्ध के साथ जुड़ाव की जो यात्रा मेरे जन्म के साथ शुरू हुई है, वो अनवरत जारी है। मेरा जन्म गुजरात के उस वड़नगर में हुआ, जो एक समय बौद्ध धर्म का महान केंद्र हुआ करता था।

इस वर्ष के आयोजन के साथ ऐतिहासिक उपलब्धि जुड़ी

अभिधम्म दिवस पर भगवान बुद्ध के साथ जुड़ाव पर की बात, साथ ही उनके उपदेशों को भी सराहा

10 वर्ष में पवित्र आयोजनों में शामिल हुआ

पीएम मोदी ने कहा कि 10 वर्षों में भारत के ऐतिहासिक बौद्ध तीर्थ स्थानों से लेकर दुनिया के अलग अलग देशों तक, नेपाल में भगवान बुद्ध की जन्मस्थली के दर्शन, मंगोलिया में उनकी प्रतिमा के अनावरण से लेकर श्रीलंका में वेसाक समारोह तक मुझे कितने ही पवित्र आयोजनों में शामिल होने का अवसर मिला है। आज शरद पूर्णिमा का पवित्र पर्व भी है और आज ही भारतीय चेतना के महान ऋषि वाल्मीकि जी की जन्मजयंती भी है। मैं समस्त देशवासियों को शरद पूर्णिमा और वाल्मीकि जयंती की भी बधाई देता हूं।

पाली को शास्त्रीय भाषा का दर्जा दिया

पीएम मोदी ने कहा, इस वर्ष अभिधम्म दिवस के आयोजन के साथ एक ऐतिहासिक उपलब्धि भी जुड़ी है। भगवान बुद्ध के अभिधम्म, उनकी वाणी, उनकी शिक्षाएं जिस पाली भाषा में विरासत के तौर पर विश्व को मिली है। इसी महीने भारत सरकार ने उस पाली भाषा को शास्त्रीय भाषा का दर्जा दिया है। पाली भाषा को शास्त्रीय भाषा का ये दर्जा, पाली भाषा का ये सम्मान भगवान बुद्ध की महान विरासत का सम्मान है। अभिधम्म धम्म के निहित है, धम्म के मुलभाव को समझने के लिए पाली भाषा का ज्ञान आवश्यक है। धम्म यानी बुद्ध के संदेश, बुद्ध के सिद्धांत और मानव के अस्तित्व से जुड़े सवालों का समाधान। धम्म यानी मानवमात्र के लिए शांति का मार्ग, धम्म यानी बुद्ध की सर्वकालिक शिक्षाएं, धम्म यानी समूची मानवता के कल्याण का अटल आश्वासन।

भारत सभ्यता को नए सिरे से प्रस्तुत कर रहा

पीएम ने बताया कि 20 अक्टूबर को वे वाराणसी जा रहे हैं, जहां सारनाथ में हुए अनेक विकास कार्यों का लोकार्पण करेंगे। हम नए निर्माण के साथ-साथ अपने अतीत को भी सुरक्षित कर रहे हैं। 10 वर्षों में हम 600 से ज्यादा प्राचीन धरोहरों, कलाकृतियों और अवशेषों को दुनिया के अलग-अलग देशों से वापस भारत लाए हैं। इनमें से कई अवशेष बौद्ध धर्म संबंधित हैं। यानी बुद्ध की विरासत के पुनर्जागरण में भारत अपनी संस्कृति और सभ्यता को नए सिरे से प्रस्तुत कर रहा है।

बुद्ध में आस्था ने पूरी मानवता की सेवा का मार्ग समाया

पीएम मोदी ने कहा कि भारत की बुद्ध में आस्था केवल अपने लिए ही नहीं, बल्कि पूरी मानवता की सेवा का मार्ग है। भगवान बुद्ध को लेकर मैंने पहले भी कहा है कि बुद्ध, बौद्ध भी है और बुद्ध शोध भी है। इसलिए हम भगवान बुद्ध को जानने के लिए आंतरिक और अकादमिक दोनों तरह की रिसर्च पर जोर दे रहे हैं। मुझे खुशी है कि हमारे संत, बौद्ध संस्थान, हमारे भिक्षुकगण इस दिशा में युवाओं का मार्गदर्शन कर रहे हैं। विकसित होने की तरफ बढ़ रहा भारत अपनी जड़ों को भी मजबूत कर रहा है।उन्होंने कहा कि हमारा प्रयास है कि भारत का युवा विज्ञान और तकनीक में विश्व का नेतृत्व करे और साथ ही हमारा युवा अपनी संस्कृति और अपने संस्कारों पर भी गर्व करे। इन प्रयासों में बौद्ध धर्म की शिक्षाएं बड़ी मार्गदर्शक हैं। मुझे भरोसा है कि हमारे संतो और भिक्षुकों के मार्गदर्शन से, भगवान बुद्ध की शिक्षाओं से हम सब साथ मिलकर निरंतर आगे बढ़ेंगे।

बहराइच हिंसा पर सख्त कार्रवाई

हिंसा के आरोपियों की पुलिस से मुठभेड़, पांचों आरोपी गिरफ्तार

एजेंसी ▶▶ बहराइच

यहां के महाराजगंज में हत्याकांड के दो मुख्य आरोपियों की पुलिस से मुठभेड़ हो गई, जिसमें दोनों आरोपी घायल हो गए हैं। उनके पैरों में गोली लगी है।

पुलिस ने नानपारा बायपास पर हांडा बसेहरी नहर के पास आरोपियों की घेराबंदी की। जहां पुलिस व आरोपियों के बीच जवाबी फायरिंग हुई जिसमें दो आरोपी घायल हो गए। आरोपियों के नाम सरफराज और तालिम हैं। सरफराज की मौत की बात कही जा रही है। यूपी के एडीजी लॉ एंड ऑर्डर अमिताभ यश ने कहा कि एनकाउंटर के बाद पांचों आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया गया है। ये सभी हिंसा के आरोपी थे। उन्होंने कहा कि आरोपी नेपाल भागने की फिराक में थे। घायल आरोपियों को इलाज के लिए नानपारा सीएचसी में भर्ती किया गया है। सीएचसी के बाहर पुलिस का पहरा बढ़ा दिया गया है और किसी को भी अंदर जाने की अनुमति नहीं दी जा रही है। सरफराज मुख्य आरोपी अब्दुल हमीद का बेटा है और ये भी मुख्य आरोपी है।

पुलिस पर की फायरिंग हथियार बरामद

पुलिस ने कहा कि पहले फहीन और तालिम को निशानदेही पर मर्डर में प्रयुक्त हुए हथियार की बरामदगी के लिए जब पुलिस टीम लेकर गई तो उन्होंने वहां रखे हथियारों से पुलिस पर फायरिंग की गई। जवाबी फायरिंग में दोनों को गोली लगी है। गंभीर रूप से घायल हुए हैं। उपचार कराया जा रहा है। मर्डर में उपयोग किया हथियार बरामद हो गया है। पुलिस के बड़े अधिकारियों की बैठक हो रही है। सीएम योगी आदित्यनाथ को पुलिस मुठभेड़ में घायल होने की जानकारी दी गई है। यह भी बताया गया है कि हिंसा के पांचों नामजद आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया गया है। चर्चा है कि इन पर एनएसए के तहत कार्रवाई की।

बुधवार को ही पुलिस ने उठा लिया था

बहराइच में जिस मकान मालिक अब्दुल हमीद पर राम गोपाल मिश्रा पर गोली चलाने का आरोप है उसकी बेटी रुखसार बता रही है कि बुधवार को 4 बजे मेरे पिता अब्दुल हमीद, मेरे दो भाई सरफराज, फहीम और उनके साथ एक अन्य युवक को यूपी एसटीएफ ने उठा लिया है। मेरे पति और मेरे देवर को पहले उठाया जा चुका है किसी भी थाने से उनकी कोई खबर नहीं मिल पा रही है। हमें डर है कि उनका एनकाउंटर कर हत्या की जा सकती है। उन्होंने पीएम नरेंद्र मोदी व सीएम योगी आदित्यनाथ से परिजनों की सुरक्षा की अपील की है।

टीबी के खिलाफ लड़ाई में नई उपलब्धि हासिल

आईसीएमआर ने विकसित की हाथ में पकड़ी जाने वाली नई एक्स-रे मशीन

एजेंसी ▶▶ नई दिल्ली

टीबी यानि क्षय रोग का पता लगाना अब और भी आसान हो गया है। भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद् (आईसीएमआर) ने हाथ में पकड़ी जाने वाली एक्स-रे मशीन विकसित की है।

इससे घर पर भी मरीजों की टीबी जांच की जा सकेगी। इससे रोग का पता लगाने में आसानी होगी, साथ ही समय पर जांच और इलाज मुहैया कराया जा सकेगा।

जल्द पता लग सकेगा रोग, इलाज भी जल्द मिलेगा

इस बारे में आईसीएमआर के महानिदेशक डॉ. राजीव बहल ने बताया कि टीबी संक्रमण के खिलाफ लड़ाई में एक नई उपलब्धि हासिल हुई है। भारत में हाथ में पकड़ी जाने वाली एक्स-रे मशीन विकसित की गई है, जिससे मरीजों में टीबी की बीमारी का जल्द पता लग सकेगा और फिर उसका समय से इलाज करने और सार्वजनिक स्वास्थ्य को बेहतर करने में मदद मिलेगी।

आईआईटी कानपुर ने भी किया बनाने में सहयोग

19वें इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस ऑफ ड्रग रेगुलेटरी अथॉरिटीज इंडिया 2024 के दौरान आईसीएमआर के महानिदेशक ने कहा कि हाथ से पकड़ी जाने वाली एक्स-रे मशीन बहुत महंगी है। इसे देखते हुए आईआईटी कानपुर के साथ साझेदारी में आईसीएमआर ने हाथ से पकड़ी जाने वाली एक स्वदेशी एक्स-रे मशीन बनाई है, जिसकी कीमत विदेशी मशीन की तुलना में आधी है।

इंजन के साथ ही लोकमान्य टर्मिनल ट्रेन के 8 डिब्बे उतरे

दीमा हसाओ। असम के दीमा हसाओ जिले के डिबालोंग स्टेशन पर अगरतला-लोकमान्य तिलक टर्मिनल एक्सप्रेस के 8डिब्बे पटरी से उतर गए। अब तक किसी के हताहत होने या गंभीर रूप से घायल होने की कोई खबर नहीं है। अपराह्न तीन बजकर 55 मिनट पर हुए इस हादसे का कारण अभी पता नहीं चल पाया है। पटरी से उतरे डिब्बों में 'पावर कार' और इंजन शामिल हैं।

गडकरी ने अंतरराष्ट्रीय मेथनॉल सेमिनार का किया उद्घाटन

बढ़ते प्रदूषण और जीवाश्म ईंधन के आयात से निपटने नीति जरूरी

नई दिल्ली में नीति आयोग की संगोष्ठी और प्रदर्शनी

एजेंसी ▶▶ नई दिल्ली

केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने नई दिल्ली में नीति आयोग द्वारा आयोजित अंतरराष्ट्रीय मेथनॉल संगोष्ठी एवं प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। गडकरी ने प्रदर्शनी का भी दौरा किया। गडकरी ने संगोष्ठी और प्रदर्शनी के लिए नीति आयोग की सराहना की।

उन्होंने कहा कि भारत को एक ऐसी नीति के साथ आगे बढ़ने की जरूरत है जो बढ़ते प्रदूषण और जीवाश्म ईंधन के आयात के प्रमुख मुद्दों से निपटने के लिए लागत प्रभावी, स्वदेशी, आयात विकल्प आधारित और रोजगार पैदा करने वाली हो।

जीवाश्म ईंधन का आयात चिंता का विषय

गडकरी ने बढ़ते प्रदूषण और जीवाश्म ईंधन का आयात दो प्रमुख चिंताओं पर जोर दिया। उन्होंने आत्मनिर्भरता के लिए इन आयातों को खासकर वैश्विक भू-राजनीतिक अनिश्चितताओं के मद्देनजर, कम करने की तत्काल आवश्यकता को रेखांकित किया, जो कि लगभग 22 लाख करोड़ है।

भारत मेथनॉल के क्षेत्र में आगे बढ़ रहा

गडकरी ने कहा कि भारत जैव ईंधन क्षेत्र में, खास तौर पर मेथनॉल के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति कर रहा है। मेथनॉल को बढ़ावा देने के लिए नीति आयोग के प्रयास सफल हो रहे हैं, क्योंकि यह किफायती और प्रदूषण मुक्त भी है। उन्होंने कहा कि कुछ राज्यों में उपलब्ध निम्न गुणवत्ता वाले कोयले का भी मेथनॉल बनाने में इस्तेमाल किया जा रहा है।

झारखंड और महाराष्ट्र में गठबंधन पर चुनावी मशक्कत तेज

झारखंड में कांग्रेस-जेएमएम साथ, महाराष्ट्र में महायुति 'एक'

एजेंसी ▶▶ नई दिल्ली

कांग्रेस झारखंड विधानसभा चुनाव झारखंड मुक्ति मोर्चा (जेएमएम) के साथ गठबंधन में लड़ेगी और सीट बंटवारे पर जल्द ही अंतिम फैसला होने की उम्मीद है।

एक वरिष्ठ नेता ने गुरुवार को बताया कि जल्दी ही सीट बंटवारा हो जाएगा और प्रत्याशियों की लिस्ट भी जारी कर दी जाएगी। कांग्रेस महासचिव और झारखंड के प्रभारी गुलाम अहमद मीर ने कहा कि कांग्रेस उम्मीदवारों की पहली सूची 19 अक्टूबर के बाद जारी की जाएगी। जेएमएम के संभावित 18 प्रत्याशियों की लिस्ट सामने आई है, जिसमें सीएम हेमंत सोरेन के साथ ही पत्नी कल्पना सोरेन का नाम भी शामिल है।

दोनों ही गठबंधन शीघ्र जारी करेंगे प्रत्याशियों की सूची

19 अक्टूबर के बाद आएगी पहली सूची

मीर ने कहा कि 2019 की तरह, हम राज्य में अपने गठबंधन सहयोगियों के साथ विधानसभा चुनाव लड़ेंगे। सीट बंटवारे को लगभग अंतिम रूप दे दिया गया है> जल्द ही अंतिम निर्णय होने की उम्मीद है। हम 19 अक्टूबर के बाद पहली सूची जारी करेंगे> राहुल गांधी के राज्य के दौरे के बाद। ऐसे में माना जा रहा है कि टिकट बंटवारे में राहुल गांधी की बड़ी भूमिका हो सकती है।

महायुति जल्द लगाएंगे सीट शेयरिंग पर मुहर

महाराष्ट्र में 150 सीटों पर लड़ेगा एनडीए

मुंबई। महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव 2024 में इस बार महायुति और महाविकास अघाड़ी में कड़ा मुकबला होना है। इस चुनाव से पहले महायुति (भाजपा-शिवसेना-एनसीपी) और महा विकास अघाड़ी (एमवीए) गठबंधन सीट बंटवारे को लेकर आखिरी चरण में हैं और जल्द ही इस पर आधिकारिक घोषणा होने की उम्मीद है। दोनों गठबंधन इसी सप्ताह सीट शेयरिंग की घोषणा कर सकते हैं। 16 अक्टूबर को भाजपा की केंद्रीय चुनाव समिति की बैठक हुई, जिसमें पार्टी ने आगामी महाराष्ट्र चुनावों के लिए अपने उम्मीदवारों के नाम फाइनल करने पर चर्चा की। बैठक में पीएम मोदी के साथ अन्य प्रमुख नेताओं ने हिस्सा लिया और यह तय किया गया किभाजपा राज्य की 288 विधानसभा सीटों में से लगभग 150 सीटों पर चुनाव लड़ेगी। बाकी सीटें मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाली शिवसेना और उपमुख्यमंत्री अजित पवार के नेतृत्व वाली एनसीपी को दी जाएंगी।

शपथ में राष्ट्रगान का अपमान

कार्यक्रम में खड़े नहीं हुए नेकां के विधायक, जांच का आदेश दिया गया

एजेंसी ▶▶ श्रीनगर

केंद्र शासित जम्मू कश्मीर के मुख्यमंत्री के रूप में उमर अब्दुल्ला ने गत बुधवार को शपथ ग्रहण की। शपथ ग्रहण समारोह के दौरान जब राष्ट्रगान हुआ तो सोनवारी हाजिन से निर्वाचित नेशनल कॉन्फ्रेंस के विधायक हिलाल अकबर लोन अपने स्थान पर बैठे रहे। राष्ट्रगान की मर्यादा के खिलाफ व्यवहार करने के लिए विधायक अकबर लोन के खिलाफ जांच का आदेश दिया गया है।

पिता ने लगाया था पाकिस्तान जिंदाबाद का नारा

हिलाल अकबर लोन के पिता मोहम्मद अकबर लोन जब विधायक थे तो उन्होंने जम्मू कश्मीर विधानसभा में पाकिस्तान का जिंदाबाद का नारा लगाया था। अकबर लोन उत्तरी कश्मीर के सांसद जम्मू कश्मीर विधानसभा के स्पीकर भी रह चुके हैं।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक राजेश मीणा द्वारा अम्बर ऑफसेट प्रा. लि., डी एल टॉवर, 3-ए, विद्याआश्रम संस्थानिक क्षेत्र, जेएलएन मार्ग, जयपुर से मुद्रित एवं बी-66, कुसुम विहार, जगतपुरा, मालवीया नगर, जयपुर से प्रकाशित।
सम्पादक-राजेश मीणा, Email : sanjeevnitoday@gmail.com मोः 8094811115, (पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए उत्तरदायी)